ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ६ अंक १२ अगस्त 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥
सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥१॥
भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥
नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥१॥रहाउ॥
गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥
आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥२॥
मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥
मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥३॥
गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥
नानक साहिबु भरिपुरि लीना साच सबदि निसतारा ॥४॥ *(पन्ना ११२५)*

श्री गुरु नानक देव जी भैरउ राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में गुरु की महत्ता का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि इंद्र, ब्रह्मा आदि अनेकों साधु गुरु के शबद (उपदेश) में लीन होकर ही भवसागर से पार हुए। सनक, सनंदन तथा अन्य अनेकों तपस्वी लोग गुरु की कृपा से संसार-समुद्र से पार हुए। गुरु जी फरमान करते हैं कि गुरु के शबद (उपदेश, नेतृत्व) के बिना संसार-समुद्र से पार नहीं हुआ जा सकता। गुरु का शबद ही प्रभु-नाम-सिमरन की अलख जगाता है। प्रभु-नाम के बिना जगत रोगी बन जाता है तथा भेदभाव में फंसा, दुविधा रूपी सागर में डूबा रहता है अर्थात् अपनी आत्मिक मृत्यु को गले लगा लेता है।

मनुष्य के आत्मिक जीवन के प्रकाश का स्रोत गुरु होता है। (सच्चा) गुरु साक्षात अलख अभेव परमात्मा का रूप है। गुरु की सेवा कमाने से अर्थात् उसके बताए मार्ग पर चलने से तीनों भवनों की समझ आ जाती है अर्थात् यह ज्ञान हो जाता है कि परमात्मा का निवास हर लोक में है। प्रभु-नाम-सिमरन की दात प्रदान करने वाले गुरु ने जिस मनुष्य को नाम-सिमरन की दात दी उसी को परमात्मा-प्राप्ति का एहसास हो गया। जो मानव-मन गुरु की कृपा से अपनी शारीरिक इंद्रियों को वश में करने के योग्य हो गया वो भटकने से बच गया; (गलत) विचारों के पीछे दौड़ना-भागना उसने बंद कर दिया। उस मन की तृष्णा उसके अपने अंदर ही समा गई। ऐसा मन योगी हो गया अर्थात् परमात्मा में लीन हो गया। ऐसा मन खुद को मारकर अर्थात् अहं को मिटाकर प्रभु-प्रेमी बन गया, वियोगी बन गया। ऐसा मन ऊंची समझ वाला बन गया तथा प्रभु के गुणों का गान करने लग पड़ा।

श्री गुरु नानक देव जी शबद की अंतिम पंक्तियों में फरमान करते हैं कि जिन्होंने गुरु की शरण में जाकर अपना मन वश में कर लिया है तथा गुरु के शबद को अपने अंदर बसाया है, संसार में ऐसे लोग बहुत कम हैं। ऐसे महान लोगों को परमात्मा सर्वव्यापक नज़र आने लगता है जो कि सारे जगत में छाया हुआ है। ऐसे महामानव संसार-समुद्र से पार हो जाते हैं, दुविधाओं से छूट जाते हैं।

संपादकीय आज़ादी के लिए सिक्खों का योगदान एवं बलिदान

१५ अगस्त, १९४७ का दिन देश का स्वतंत्रता दिवस है। स्वतंत्रता मूल मानव-इच्छा है। प्रत्येक मनुष्य-मात्र स्वतंत्रता की चाह रखता है। स्वतंत्रता की अविद्यमानता में वो इसको प्राप्त करने के लिए सख़्त से सख़्त संघर्ष तथा जद्दोजहद करने एवं अपनी जान तक कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाता है। सारी दुनिया में मनुष्य का अधिक चिंतन करने योग्य इतिहास वही है जो इस संघर्ष एवं जद्दोजहद से संबंध रखता है।

आज़ादी की इच्छा इंसान की प्रारंभिक इच्छा है। यह अज़ली है; आदि-जुगादी तथा प्राचीन है। यह चाह जगत के रचयिता अकाल पुरख ने उसके अंदर खुद ही समायी हुई है। दरियाओं के न मोड़े जाने वाले बहाव, पहाड़ों के झरनों तथा चशमों के बहाव; हवाओं, आंधियों एवं तूफान के वेग यह संकेत देते प्रतीत होते हैं कि बेपरवाह कादर ने अपनी प्रकृति भी बंधनों से मुक्त बनाई है। वृक्ष, पौधे, लताएं, जीव-जंतु तथा पक्षी अपनी आज़ाद जीवन-शैली तथा लहर का एहसास करवाते हैं।

प्रकृति के अटूट हिस्से के रूप में मनुष्य-मात्र भी अपने प्रारंभिक दौर में आज़ाद रूप में विचरता रहा, मगर एक मोड़ पर आकर अपने अहं की मारू पकड़-जकड़ में उसने गुलामी जैसी बुराइयां पैदा कर लीं। अकाल पुरख द्वारा आज़ाद सृजित मानव पदार्थक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक गुलामी को लागू करने वाला तथा गुलामी के बंधनों में जकड़ा जाने वाला--- दोनों अनैच्छिक रूपों का वाहक भी बना और बेबस तथा लाचार-शिकार भी। मनुष्य ने अन्य मनुष्यों को गुलाम बनाने का 'अधिकार' बना लिया।

भारतवासियों ने हजारों वर्ष सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा धार्मिक गुलामी अपने शरीर पर झेली। गुलामी की जड़ उस समय ही लग गई थी जब समाज को चार वर्णों में बांटा गया था। बांटा हुआ समाज कभी भी खुशियों का आनंद नहीं ले सकता। वर्ण-विभाजन के समर्थक चाहे आज भी इसको 'आदर्श काम-व्यवसाय-विभाजन' कहकर इसकी प्रोढ़ता करते हैं, मगर ध्यान से देखने-समझने पर यह भली-भांति नज़र आ जाता है कि इसके अंतर्गत चौथे वर्ग 'शूद्र' की दशा इतनी बुरी थी कि वो शेष तीन वर्गों का गुलाम-मात्र ही था। भारतवासियों की इसी आंतरिक गुलामी ने विदेशी हमलावरों को भारत पर कब्ज़ा करने में कोई मुश्किल न आने दी। एक-दूसरे वर्ग को गुलाम बनाते सारे भारतवासी विदेशी गुलामी के अंधेरे कुएं में जा गिरे। विदेशी हाकिमों ने हमलावर बनकर भारतवासियों को बड़ी बेदर्दी से मारा, उजाड़ा, लूटा। वे यहां से भारी मात्रा में दौलत लूटकर अपने देश ले जाते; बहू-बेटियों को अपने देश में मंडी लगाकर बेचते। भारतवासियों ने इन विदेशी हाकिमों की गुलामी को अपनी तकदीर ही मान लिया। धीरे-धीरे गुलामी की जंजीरों में जकड़े इन भारतवासियों की दशा बद से बदतर होती गई; सख्तियों का दौर और तेज़ होता गया। इनको मूल मानव-अधिकारों से लगभग दूर ही कर दिया गया। इनके इज्जत से जीने के सारे हक छीन लिए गए। भारतवासियों के सिर पर पगड़ी बांधने, पालकी तथा घोड़े पर बैठने आदि पर पाबंदी लगा दी गई। यहां तक कि इनको अपना धर्म निभाने के लिए भी कई तरह के टैक्स (ज़जिया) अदा करने पड़ते थे। ये पाबंदियां दिन-ब-दिन इतनी सख़्त होती जा रही थीं कि लोग अपना मत छोड़कर इसलाम धर्म धारण करने के लिए विवश हो रहे थे।

श्री गुरु नानक देव जी को ही सही व सच्चे रूप में हिंदोस्तानी लोगों के मुक्ति-दाता के रूप में माना जा सकता है। इस सच्चाई को सुप्रसिद्ध उर्दू शायर इकबाल ने नि:संकोच स्वीकार किया हुआ है।

हिंदोस्तानी कौम की सदियों की गुलामी का हकीकी बयान करने के पश्चात यह शायर श्री गुरु नानक देव जी के आगमन सम्बंधी कहता है :

फिर उठी आखिर सदाअ, तौहीद की पंजाब से।
हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने, जगाया ख्वाब से।

श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त रविदास जी, भक्त कबीर जी, शेख फरीद जी की आवाज़ को भी बुलंद किया तथा उनके द्वारा समाज का मार्गदर्शन करने वाली बाणी को एकत्र करके सिक्खों को समझाया तथा अगले गुरु साहिबान को विरासात के रूप में दिया। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी ढंग से आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा रची तथा एकत्र की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप मे. संपादित करके हर मनुष्य-मात्र को इससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज़ालिम हकूमत ने उनको घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए आध्यात्मिकता के साथ-साथ जनता में राजनीतिक शक्ति पैदा करने के लिए 'मीरी-पीरी' का सिद्धांत कायम किया। उन्होंने समय की ज़ालिम सरकार से टक्कर लेते हुए अनेक लड़ाइयां लड़ीं। इन सारी लड़ाइयों में जनता को अपनी आज़ाद हस्ती के अस्तित्व का एहसास करवाना भी था। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय तक हालात ऐसे हो गए थे कि हर किसी को धर्म बदलने के लिए विवश किया जाने लगा। इस धक्केशाही के विरुद्ध आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौंक में अपने सिक्खों सहित शहादत देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना करके आज़ादी को और मज़बूत किया। खालसे ने हर जुल्म का डटकर मुकाबला किया।

हमारा अपना देश हजारों वर्ष धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सभ्याचारक गुलामी का शिकार रहा है। लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष की विदेशी राजनीतिक गुलामी सहने के बाद, अनेक कुर्बानियां देने के बाद ही इस देश के लोगों को राजनीतिक गुलामी से निजात मिली। हिंदोस्तानियों के अंतिम विदेशी मालिक अंग्रेज थे।

भक्त साहिबान तथा गुरु साहिबान द्वारा संचरित आज़ादी से जीने की उमंग लेकर समूह पंजाबियों तथा विशेषत: पंजाब की धरती पर बसने वाले गुरु नानक-नाम-लेवा सिक्खों ने जो विशेष योगदान डाला वो आज़ादी के कौमी संघर्ष के इतिहास का एक अभिन्न तथा महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जिसकी उस समय के कौमी नेताओं द्वारा अपने लिखित तथा मौखिक बयानों द्वारा प्रशंसा की गई। श्री ननकाणा साहिब, श्री पंजा साहिब, गुरु का बाग, गुरुद्वारा गंगसर जैतो आदि के साकों ने कौमी संघर्ष में नई जान डाली तथा भरपूर स्फूर्ति प्रदान की। हमें अपने बहादुर शूरवीर योद्धाओं के प्रति धन्यवादी होना चाहिए जिनकी महान कुर्बानियों के कारण आज हम आज़ाद कहलवाते हैं।

मुगलों के पश्चात देश-कौम की आज़ादी छीनने वाले दुनिया के सबसे अधिक शातिर अंग्रेज थे। अंग्रेजों के विरुद्ध आज़ादी के संघर्ष को शुरू करने में सिक्खों का योगदान बड़ा भरपूर तथा यादगारी है। सरदार शाम सिंघ अटारी वाला, महारानी जिंदां, भाई महिराज सिंघ तथा महाराजा दलीप सिंघ ने अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा छीने गए सर्वकल्याणकारी खालसा राज को पुन: स्थापित करने हेतु यथासंभव भरपूर प्रयत्न किए। भले ही उनके प्रयत्नों को तत्काल फल न लगा, मगर इन प्रयत्नों ने संघर्ष का जो इतिहास सृजित किया यह आने वाले कौमी आज़ादी के सिक्ख शूरवीरों के लिए एक प्रेरणा-स्रोत बना। भाई राम सिंघ की अगुआई में सिक्ख कूका वीरों ने आज़ादी की प्राप्ति के लिए असंख्य बहुपक्षीय कुर्बानियां दीं तथा शहीदियां तक भी प्राप्त कीं। सिक्ख कूका लहर अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ एक बड़ी व्यापक असहयोग लहर भी चलाई, जो इस संघर्ष के शिखर पर पहुंचने के समय स्वतंत्रता-सेनानियों के लिए

एक बड़ा प्रेरणा-स्रोत बनी। इसके अलावा पंजाब में चले किसान आंदोलन, विदेश व देश की धरती पर चली गदर लहर, बब्बर लहर जैसी लहरों में सिक्खों का योगदान भरपूर तथा अधिक यादगारी है। सिक्खों ने अपने धर्म में नाजायज़ बाहरी हस्तक्षेप खत्म करने-करवाने तथा अंग्रेजी साम्राज्य की पुश्तपनाही (मदद) में पावन गुरुद्वारा साहिबान पर काबिज़ महंतशाही से इनको मुक्त कराने के लिए जितने भी मोर्चे लगाए उसमें उनको अंग्रेजी हाकिमों के विरुद्ध प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों तरह से जूझना पड़ा। शिरोमणि अकाली दल तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पुकार पर हजारों गुरसिक्खों ने जेलें भरीं, कष्ट सहे तथा भारी मार-पिटाई धैर्य व शांति से बर्दाश्त की, क्योंकि उनका यह दृढ़ संकल्प था कि लहर को शांतमयी रखना है, हिंसक नहीं बनने देना। आज़ादी के राजनीतिक स्वरूप वाले कौमी संघर्ष में न केवल शिरोमणि अकाली दल के कार्यकर्ता के रूप में बल्कि अन्य कौमी पार्टियों की पुकार पर भी बहुत बड़ी संख्या में सिक्खों ने योगदान दिया। जलियां वाला बाग के बड़े गोलीकांड के समय भी सिक्खों की संख्या दूसरों से तुलनात्मक रूप में अधिक थी। देश के विभाजन के समय जितना जानी-माली तथा धार्मिक नुकसान सिक्खों का हुआ उतना और किसी का नहीं हुआ। इस अत्यंत नाजुक समय में सिक्खों ने हिंदू भाइयों को बचाने के लिए हरियावल दसते के रूप में कार्य किया और सिर-धड़ की बाज़ी लगाई तथा अपनी तकदीर भारत के साथ जोड़ते हुए अलग होने की इच्छा को काबू में रखा।

आज़ादी के पश्चात कुछ समय बीतने पर ही नए बने तथाकथित लोकतांत्रिक निज़ाम में सिक्खों की आज़ादी के संघर्ष में दी कुबानियों को भुलते हुए सिक्खों को दूसरे दर्जे के शहरी होने का एहसास कराने की कृतघ्नता वाली प्रक्रिया शुरू कर दी गई। इस प्रक्रिया के अधीन दशकों से सिक्ख पंथ अनेक तरह का अन्याय सहन करता आ रहा है। जिन कौमी अगुओं ने समय-समय पर सिक्खों के देश की आज़ादी में डाले अद्वितीय योगदान के गीत गाए उन्होंने ही इनके जरायमपेशा होने के लिखित हुक्म अपने विभागों को जारी किए। हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए इस बहु-प्रकारी अन्याय को दूर करने के लिए सिक्ख पंथ ने मुख्यत: देश की मुख्य धारा से जुड़े रहकर शांतमयी रोष-प्रकटावे का ही ढंग अपनाया है। सीमा से अधिक जब्र का शिकार बनाने पर सिक्ख नौजवानों को कुछेक मोड़ों पर हथियारबंद संघर्ष करना पड़ा, लेकिन उसको सरकारी साजिशों द्वारा गलत रंग देकर सारी सिक्ख कौम को आतंकवादी/ अलगाववादी बनाने की कोशिशें की जाती रहीं। इसी सम्बंध में जून, १९८४ की श्री हरिमंदर साहिब पर फौजी कार्यवाही और नवंबर, १९८४ में दिल्ली, कानपुर तथा अन्य बड़े शहरों में सिक्ख नसलकुशी जैसे घोर जुल्म सिक्ख पंथ पर ढाए गए, जिसके दोषियों को अभी तक सज़ाएं नहीं दी जा सकी। यह एक सच्ची-सुच्ची कौम के साथ एक बहुत बड़ा धोखा तथा घात है, जिसकी जितनी भी निंदा की जाये कम है। ऐसी स्थिति में देश-कौम की आज़ादी के लिए इतनी कुर्बानियां करके, इतनी शहीदियां देकर भी इसके जश्न मनाने आदि मुश्किल हैं। देश के शासकों को बीते इतिहास से ठीक सबक लेते हुए सिक्खों के साथ किए जा रहे बहुप्रकारी अन्याय, जब्र एवं जुल्म को रोकना चाहिए। ऐसा करके ही शासक अपने माथे पर लगे महादोष को कुछ हद तक धो सकने के योग्य हो सकेंगे और देश के सर्वपक्षीप विकास में एक वफ़ादार तथा अपार सामर्थ्य वाली सिक्ख कौम का संभव एवं संभावी योगदान डलवा सकेंगे। देश की न्याय-प्रणाली को सिक्खों को इतनी देर से ही सही, मगर न्याय देने की दिशा में ठोस कदम उठाकर पहलकदमी करनी चाहिए।

अंत में यही कहा जा सकता है कि ऐ देश के शासको, प्रशासको! देश की आज़ादी के लिए सबसे अधिक कुर्बानियां करने वाली सिक्ख कौम को भी आज़ाद फ़िज़ा में सांस लेने दो। गुरु साहिबान की साज़ी-निवाज़ी इस कौम को दुनिया की कोई भी ताकत आज तक न गुलाम बनाकर रख सकी है, न ही रख सकेगी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी की संपादना

*–डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख मत का पूज्य ग्रंथ है। इसमें निहित शबद, उपदेश, महान गुरु साहिबान की पवित्र पावन बाणी ही सिक्खों का गुरु है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परम ज्योति में लीन होने से पूर्व इस *'धुर की बाणी'* के पावन संग्रह को गुरगद्दी पर प्रतिष्ठित कर इस सत्य बाणी को ही गुरु मानने का आदेश दिया। मूलतः यह समग्र मानवता का पथ-प्रदर्शक ग्रंथ है। अकाल पुरख परमात्मा से जुड़ने का साधन निर्देश करने वाली यह सत्य बाणी किसी एक वर्ग, किसी एक संप्रदाय व जाति विशेष के लिए नहीं है। इस सत्य बाणी में गुरु साहिबान और अन्य भक्तजन महापुरुषों के स्वानुभूत सत्य की अभिव्यंजना हुई है। ये अनुभव सार्वकालिक हैं, सार्वभौमिक हैं और युगों-युगों तक समूची मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। सांझा उपदेश है-- *"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥"* यह पावन बाणी कुल मानवता को भ्रातृ-भाव, प्रेम, सहानुभूति, करुणा, मैत्री, सहृदयता, सेवा, परोपकार, त्याग और बलिदान जैसे महान दिव्य नैतिक गुणों की ओर प्रेरित कर उसे एक अच्छा इंसान और स्वस्थमना उत्तरदायी संभ्रांत नागरिक बनाती है।

पवित्र बाणी का संपादन, संकलन पांचवे पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने किया। श्री अमृतसर में रामसर सरोवर के किनारे एकांत, शांत एवं सुरम्य स्थल पर बैठकर इसका लेखन-कार्य विद्वान लिखारी भाई गुरदास जी द्वारा करवाया। वर्षों के कठिन श्रम, लगन एवं उच्च कोटि की संपादन-कला-सक्षमता के परिणामस्वरूप इसका संपादन-कार्य सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ। इसका समापन काल इसकी मूल प्रति पर लिखा बताया जाता है--"सूची पतर पोथी का ततकरा रागां दा संवत् १६६१ मिति भादों वदी एकम् १ पोथी लिखि पहुंचे।" भादों सुदी पहली को इसका प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया। बाबा बुड्ढा जी को इस पावन ग्रंथ साहिब का पहला ग्रंथी नियुक्त किया गया। शुरू में इसे 'पोथी साहिब' कहा गया, बाद में 'बीड़ साहिब' कहा जाने लगा और जब दसवें गुरु साहिब ने अपने पिता नौवें गुरु साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा रची बाणी को इसमें स्थान दिया और भाई मनी सिंघ जी द्वारा इसका पुनर्लेखन करवाया तब १४३० पन्नों का यह विशालकाय बाणी-संग्रह 'ग्रंथ साहिब' कहा जाने लगा। जब गुरु साहिब ने इसे *"सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ"* आदेश कर इसे गुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया तब यह 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के रूप में पूज्य हुआ।

श्री गुरु नानक देव जी के ९७३ शबद-सलोक हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के ६३ सलोक हैं। श्री गुरु अमरदास जी के ८९१ शबद-सलोक हैं। श्री गुरु रामदास जी के ६४४ शबद-सलोक हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के २३१३ शबद-सलोक हैं। नौवें गुरु साहिब के ५९ शबद और ५७ सलोक हैं। इसके अतिरिक्त १२वीं शती से लेकर १७वीं शती तक के १५ प्रमुख महापुरुषों-- भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त बेणी जी, भक्त सधना जी, भक्त सैण जी, भक्त भीखण जी, भक्त धंना जी, भक्त पीपा जी, भक्त जैदेव

**१८०१-सी, मिशन कम्पांऊड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

जी, भक्त परमानंद जी, शेख़ फरीद जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सूरदास जी की बाणी शामिल है। इसमें ग्यारह भट्ट साहिबान-- भट्ट कल सहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट सल जी, भट्ट भल जी, भट्ट नल जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट बल जी, भट्ट हरिबंस जी की बाणी के अलावा भाई सत्ता जी, भाई राय बलवंड जी की वार; श्री गुरु अमरदास जी के पड़पौत्र बाबा सुंदर जी की 'सदु' बाणी तथा भाई मरदाना जी के नाम वाले बिहागड़ा राग में तीन सलोक हैं।

पंचम गुरुदेव जी ने बाणी का जो संकलन तैयार किया वह ९७४ पन्नों का बना। मूल बाणी-संग्रह को लेकर जब कई तरह के विवाद होने लगे तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी ने तीन विद्वानों-- भाई जोध सिंघ, प्रो. तेजा सिंघ और प्रो. गंगा सिंघ को नियुक्त किया, जो अक्तूबर, १९४५ ई. को करतारपुर गए और उन्होंने वहां रखी मूल बीड़ के दर्शन किए, रिपोर्ट दी। भाई जोध सिंघ ने 'करतारपुरी बीड़ दे दर्शन' और 'प्राचीन बीड़ां बारे' अपनी पुस्तकों में बताया है कि करतारपुर में रखी सुरक्षित बीड़ ही श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित मूल प्रति है। इसमें बीच-बीच में 'सुधु कीचै' और 'सुधु' जैसे गुरु साहिब के अपने हस्तलिखित संकेत हैं। इसमें रागमाला भी है जिसका अंक ततकरा में ९७४ है। संपूर्ण बाणी एक ही हाथ की लिखाई है। अत: निर्णय लिया गया कि यही ९७४ पन्नों की बीड़ मूल बीड़ है।

जब प्रश्न उठा कि श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी का संपादन क्यों किया, तो इस सम्बंध में विद्वान इतिहासकारों ने कई प्रकार के तर्क दिए। सर्वप्रमुख तो 'तवारीख गुरू खालसा' के लेखक ज्ञानी गिआन सिंघ ने गुरु दरबार में सिक्खों द्वारा की गई प्रार्थना बताया। पुरातन 'बंसावलीनामा' के लेखक भाई केसर सिंघ (छिब्बर) ने गुरु जी के बड़े भाई प्रिथीचंद द्वारा कच्ची बाणी की रचना और उसका श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के साथ मिलाकर कीर्तन-गायन करना बताया। प्रिथीचंद गुरगद्दी न मिलने से नाराज़ था। वो अलग गद्दी बनाने के प्रयत्न में था। उसका बेटा मिहरबान कविता करने लगा था। अंत में 'नानक' नाम जोड़ देता था।

मिहरबान पुत्त प्रिथीए दा कबीसरी करे। पारसी हिंदवी सहसक्रित नाले गुरमुखी पढ़े।
तिन भी बाणी बहुतु बणाई। भोग गुरू नानक जी दा ही पाई ॥८७॥ . . .

जब यह बात श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची तो उन्होंने धुर की बाणी अलग चुनकर इसका संग्रह तैयार करने की बात सोची। भाई गुरदास जी से बाणी लिखवाई। इससे पूर्व वे अपनी रची बाणी विद्वान लिपिक भाई संतराम, भाई हरीआ, भाई सुखा और भाई मंसाराम से लिखवाया करते थे। इसे भी संग्रह में जोड़ दिया। *"तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ"* के अनुसार उनमें बाणी को गुरमति की कसौटी पर परखने की योग्यता जन्मगत रूप से प्रत्यक्ष प्रकट थी। बाल्य-काल से ही वे उच्च कोटि की बाणी रचना करने लगे थे। वे स्वयं उच्च कोटि के गायक, राग-नाद-संगीत के पारखू एवं सुलभ कोमलता से सम्पन्न कोमल हृदय प्रभु-प्रेमी थे। उन्होंने स्वयं अति चरम कोटि की कलात्मकता साहित्यकता, गहन भावानुभूति और भाव विह्वलता सम्पन्न २३१३ शबदों का उच्चारण किया है। वे श्री गुरु नानक देव जी व अपने पूर्व गुरु साहिबान की रची बाणी का भली-भांति महत्त्व व मूल्य प्रतिपादित करना जानते थे। वे इस अनमोल विरासत को सुरक्षित पंथ के पास आगामी पीढ़ियों के हाथों में पहुंचाना चाहते थे। उन्होंने इसीलिए बाणी को संगृहीत कर दिया। वे जानते थे कि मौखिक

रूप से इस महत थाती के गुम हो जाने की संभावना है। अन्य परोपकार-कार्यों के साथ-साथ उन्होंने अमृतमयी बाणी को भी श्रद्धालु सिक्खों तक सुरक्षित पहुंचाने की आवश्यकता समझी। अनमोल बाणी का संकलन-संपादन उनकी अपनी अंतः प्रेरणा का प्रतिरूप है।

सिक्ख धर्म चिंतन का मूल 'शबद' है। 'गुरु' ही 'शबद' है और 'शबद' ही 'गुरु' है। 'शबद' प्रभु का नाम है। परमात्मा, अकाल पुरख, पारब्रह्म का यश-कीर्ति-गायन सिक्ख मत का मूल सिद्धांत है। गायन सच्ची बाणी का करना है जो गुरु-मुख से निसृत है। गुरु-मुख से निकली बाणी का सीधा संबंध परमात्मा के चिंतन से जुड़ा है। गुरु नानक पातशाह की सुरति जब अकाल पुरख वाहिगुरु से जुड़ जाती, तो गहन तल्लीनता व तदात्म एकता की अवस्था में उनके नेत्र मुंद जाते, बाणी का स्फुरण होता। भाई मरदाना जी को आदेश होता, "मरदानिआ! रबाब बजा, बाणी धुरों आई आ।" जब गहन तल्लीनता की अवस्था में गुरु साहिब के मधुर कंठ से शबद गुंजायमान होते तो मानव मन तो क्या, उड़ते पंखेरू भी पर समेट टिक जाते; चलायमान जीव, जंतु, पशु सभी स्थिर हो जाते; चल-अचल तत्वों की गति अवरुद्ध हो जाती; संपूर्ण वातावरण मधुमय हो उठता; असीम शांति, शीतलता, स्थिरता, सुकून का माहौल बन जाता। जीव-मात्र को ऐसा आत्मसुख, सुकून और शांति प्रदान करने वाला यह रस का भंडार क्या यूं ही बिखेर दिए जाने वाला था? श्री गुरु अरजन देव जी की दूरदृष्टि ने मानव-कल्याण हेतु रस की इस प्रवहमान मंदाकिनी को मोहरबंद कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी की भी ऐसी ही इच्छा थी। अपनी धर्म-प्रचार की यात्राओं के दौरान उन्होंने धर्म की अधोगति देखी थी। ब्राह्मण, मुल्ला, योगी पाखंडवाद में जनता को उलझा रहे थे। उसके विरोध में उन्होंने जिस निर्मल साधना-मार्ग का निर्देशन किया वे सारे तथ्य बाणी में ही तो संकलित थे, जो पोथी रूप में उन्होंने *"सहि टिका दितोसु जीवदै"* श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी सौंपने के साथ सौंपे थे। हाथ में ज्ञान की खड्ग पकड़ाई थी, *"गुरि चेले रहरासि कीई", "लंगरु चलै गुर सबदि"* का आदेश दिया था। पोथी को संभालना जरूरी था इसलिए श्री गुरु अंगद देव जी ने 'गुरमुखी' लिपि को संयोजित किया, गुरबाणी के गुटके तैयार किए, जन्म-साखी लिखवाई, जिससे गुरु नानक-पंथ की बाणी, जीवन और सिद्धांत जीवित रहें। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों को आदेश दिया--*"आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥"* गुरु द्वारा बख़्शी बाणी ही सच्ची बाणी है और तो कच्ची बाणी है। कच्ची बाणी वह थी जो उस समय तक कई काव्य रचना करने वालों ने 'नानक' नाम से रचनी शुरू कर दी थी। श्री गुरु अमरदास जी के आदेशानुसार सच्ची बाणी को संभालना जरूरी था, जो पंचम पातशाह ने किया। फिर इस समय तक नानक-नाम-लेवा श्रद्धालुओं की संख्या भी बढ़ रही थी। भारत से बाहर सुदूर स्थानों तक सिक्ख फैल रहे थे। उन तक शुद्ध रूप में गुरु नानक-पंथी सिद्धांतों को पहुंचाने का एक मात्र जरिया बाणी-संकलन था जो पंचम पातशाह ने सोचा। जब श्री गुरु नानक देव जी ने एक न्यारे धर्म-चिंतन के साथ निर्मल पंथ की संस्थापना की तो इसके पास न्यारे धर्म-चिंतन की व्याख्या करने वाला अपना साहित्य होना भी तो जरूरी था। हिंदुओं के वेद, पुराण, स्मृति, शास्त्र ग्रंथ थे। इसलाम के पास कुरान था। सिक्खों का गुरमति संप्रक्त धर्म-ग्रंथ का होना अनिवार्य था। इन्हीं सभी तथ्यों को दृष्टि में रख पंचम पातशाह ने मानवता को यह अनमोल तोहफा 'बाणी का बोहिथ' भेंट किया।

मानवता गुरुदेव जी की चिर ऋणि रहेगी।

अब बाणी-प्राप्ति के स्रोतों को लेकर इतिहासकारों ने मत प्रकट करने प्रारंभ किए। अपने-अपने मतानुसार कई प्रकार के मुमामले प्रस्तुत किए। सबसे पहले ज्ञानी गिआन सिंघ ने तर्क दिया जिसकी पुष्टि एम. ए मैकालिफ़ ने भी की। अंग्रेज विद्वान अरनेस्ट ट्रंप ने कहा कि जब गुरु साहिब का संकलन को मन बना तो उन्होंने भक्तों, सेवकों, सिक्खों के पास रखी बाणी इकट्ठी की। ज्ञानी गिआन सिंघ ने बताया कि सभी सेवकों-शिष्यों को आज्ञा-पत्र भेजे गए कि जिसके पास जो बाणी है, लेकर आए। इसमें भाई बखता एक बहुत भारी ग्रंथ उठाकर लाए, जिसे एक व्यक्ति तो उठा ही नहीं सकता था। इसमें पूर्व चार गुरु साहिबान और अनेक संतों-महात्माओं की बाणी थी। गुरु जी ने उसमें से पूर्व चार गुरु साहिबान की बाणी के अलावा अन्य उचित लगी बाणी छांट ली, बाकी उसे वापिस कर दी। यह ग्रंथ अब भी भाई बखता की संतान के पास है। इसी संदर्भ में मैकालिफ़ और ज्ञानी गिआन सिंघ (श्री गुरु अमरदास जी के सुपुत्र) बाबा मोहन जी के पास रखी पोथियों की भी बात करते हैं जिन्हें देने से पहले बाबा मोहन जी ने इंकार कर दिया था, बाद में श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं गए। बाबा जी ने पोथियां गुरुदेव जी को दे दीं। इसी तरह आज्ञा-पत्र की बात सुन बहुत से भक्त आए। उनकी जो बाणी गुरु साहिब को ठीक लगी, लिख ली गई। भक्त साहिबान की बाणी के बारे में भी इसी तरह का भ्रम पैदा किया गया। प्रो. जी. बी. सिंघ अपनी पुस्तक 'प्राचीन बीड़ां बारे' में बाबा मोहन जी के पास रखी पोथियों और भक्तों की बाणी का ज़ोरदार समर्थन करते हैं और यहां तक बताते हैं कि बाबा प्रेम सिंघ जी होती मरदान, जो गोइंदवाल साहिब में भल्ले बाबाओं के परिवार से हैं और श्री गुरु अमरदास जी की १४वीं पीढ़ी से हैं, ने इन पोथियों के दर्शन किये हैं। वे डॉ. मोहन सिंघ से अपने पत्र-व्यवहार का भी ज़िक्र करते हैं, जिन्होंने इन पोथियों के दर्शन प्रत्यक्ष किए हैं। इसमें श्री गुरु नानक साहिब की लगभग सारी बाणी है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है। इनका कहना है कि गुरु साहिब ने भाई पैड़ा जी को लंका द्वीप भेजकर प्राणसंगली भी मंगवाई, पर उस बाणी को ग्रंथ साहिब में संकलित नहीं किया। भक्तों की बाणी कुछ बाबा मोहन जी के पास रखी पोथियों से और कुछ उनके शिष्यों व (जीवित) संबंधियों से प्राप्त की। उत्कृष्ट विद्वान एवं शोधकर्ता प्रो. साहिब सिंघ ने इन सभी मतों का खंडन किया है।

गुरबाणी की अंदरूनी बनावट, शबदों की भाषा-शैली-रचना के आधार पर, अत्यंत तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक और व्याकरण नियमों के आधार पर उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि गुरु नानक पातशाह ने अपने जीवन-काल में ही अपनी रची बाणी की पोथी तैयार कर ली थी। श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी प्रदान करने के समय यह बाणी की पोथी उन्हें सौंपी गई। इसी क्रम में श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी और पहली पोथी श्री गुरु अमरदास जी को सौंपी। श्री गुरु अमरदास जी ने स्वयं की बाणी-रचना समेत पूरी पोथी श्री गुरु रामदास जी को दी। चौथे गुरु साहिब ने अपनी प्रेम विगलित रची बाणी पूर्व बाणी सहित श्री गुरु अरजन देव जी को दी। इसे देख गुरु जी का हृदय भावविभोर हो उठा और गद्गद् कंठ उन्होंने कहा :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥रहाउ॥

पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥

रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भरे भंडार अखूट अतोल ॥

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥ *(पन्ना १८५)*

भाई गुरदास जी गुरु नानक साहिब की बगदाद फेरी के दौरान काजी, मुल्ला-मौलवियों द्वारा पोथी में से सवाल पूछे जाने की बात कहते हैं--*"पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?"* यह पोथी निश्चय ही गुरु साहिब द्वारा रचित बाणी-संग्रह था जो *"आसा हत्थ किताब कच्छ"* गुरु जी के पास थी।

डॉ. साहिब सिंघ तर्कपूर्ण ढंग से बताते हैं कि बाणी रचना के समय गुरुओं के पास उनके पूर्व गुरु की रची बाणी मौजूद थी, तभी तो अनेक शबदों की शब्द-चयन-शैली, लिखने का ढंग, विचार एक जैसे हैं। कई महावाक तो लगभग एक जैसे हैं। यदि उनमें महला १,२,३,४ आदि संकेत न दिए होते तो निश्चय कर पाना कठिन था कि यह किन गुरुदेव जी की बाणी है। बाणी को रागों में निबद्ध करना और उनमें छंद, लय, ताल, शब्द, लेखन-शैली और भाव-साम्य का होना कोई इत्तफाक नहीं है। फिर कई तो अत्यंत गहन विचार प्रधान लंबी बाणियां हैं, जैसे 'सिध गोसटि', 'दखणी ओअंकार', 'अनंद साहिब', बीस-बीस पदों की लंबी 'असटपदियां', 'सोलहे' आदि ऐसी बाणियां हैं जो गुरु साहिब ने शांत-एकांत स्थान पर बैठकर लिखी होंगी और मेहनत से रची बाणी को संभाल-सहेजकर रखा होगा।

डॉ. साहिब सिंघ इसी प्रकार का तर्क भक्त साहिबान की बाणी के सम्बंध में भी देते हैं। श्री गुरु नानक देव जी अपनी यात्राओं के दौरान जहां-जहां गए उस क्षेत्र से सम्बंधित भक्तों की बाणी अपने विचारों से मेल खाती एकत्रित की। उसे सरल पंजाबी लिपि में लिखा और श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दी। इस सम्बंध में डॉ. साहिब बाबा फरीद जी के सलोकों से उदाहरण भी देते हैं जो अनेक सलोक श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने उनके प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए हैं। शंका निवारण हेतु अनेक सलोक भी दिए हैं। बाबा मोहन वाली घटना भी वे निर्मूल मानते हैं। *"मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा"* छंत बाबा मोहन जी की प्रशस्ति में नहीं गायन किया गया, यह केवल अकाल पुरख वाहिगुरु की प्रशस्ति में हैं। इसी राग गउड़ी में पहले छंत श्री गुरु नानक देव जी के और फिर श्री गुरु अमरदास जी के संकलित हैं। संकलन क्रम में फिर श्री गुरु अरजन देव जी के छंत हैं जिनमें परमपिता पारब्रह्म की प्रशस्ति है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य बाणी में किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा को स्थान नहीं दिया गया है। भाई बखता के भारी ग्रंथ की घटना भी मनघड़त है।

पहली बात यह कि भाई बखता ने बाणी एकत्र कैसे की? उन तक बाणी पहुंची कैसे? क्या वे गुरुओं के पास रहकर बाणी लिखते रहे? यदि वे चार गुरु साहिबान के पास रहकर बाणी लिखते रहे तो पांचवे गुरु के समय वहां से चले क्यों गए? गुरु-घर की सन् १५२१ से १५८१ तक लंबी सेवा करने के एवज़ में उनका आदर-सत्कार होना चाहिए था। सिक्ख इतिहास में ऐसा क्यों नहीं हुआ? इन तर्कों पर डॉ. साहिब भाई बखता की कथा को कपोल कल्पित मानते हैं और निष्कर्ष देते हैं कि यह महान पावन सच्ची बाणी गुरु साहिबान से परंपरा में होती हुई श्री गुरु अरजन देव जी को प्राप्त हुई जिसको उन्होंने अपनी अद्भुत संपादन-कला, कुशलता से कुल मानव-कल्याण हित अनुपम उपहार के रूप में मानवता को भेंट किया। युगों-युगों तक यह पावन ग्रंथ मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। वर्तमान में भी यह प्रेम और विश्व-शांति का संदेश दे रहा है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त बाणी

-डॉ. सुनील कुमार*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक व साहित्यक धरोहर का प्रतिनिधि ग्रंथ सहज ही स्वीकार किया जाता है। इस पावन ग्रंथ का संपादन श्री गुरु अरजन देव जी ने किया था। पहले इसे 'पोथी साहिब' कहा जाता था, फिर धीरे-धीरे 'ग्रंथ' शब्द प्रचलित हुआ। इसकी ग्रंथित प्रति को सिक्ख परंपरा में 'बीड़' कहा जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन-कार्य सन् १६०४ ई. में पूरा हुआ था। इसे लिपिबद्ध करने में भाई गुरदास जी की विशिष्ट भूमिका थी। इन्हें सिक्ख धर्म का पहला व्याख्याकार भी माना जाता है। इसका संपादन रागों के आधार पर किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अंतिम रूप देने का कार्य दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया। उन्होंने अपने पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी को इसमें शामिल किया और देहधारी गुरु-प्रथा को समाप्त कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु-पद पर सुशोभित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वर्तमान बीड़ में १४३० पन्ने हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में छ: गुरु साहिबान-- श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी संकलित है। इनके अलावा पंद्रह भक्त साहिबान, ग्यारह भट्ट साहिबान तथा गुरु-घर के परम श्रद्धालु गुरसिक्खों की बाणी को भी इसमें स्थान मिला है। यहां हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त-बाणी का मूल्यांकन करने की कोशिश करेंगे। उनकी रची बाणी और जीवन परिचय इस प्रकार है :-

शेख फरीद जी : शेख फरीद जी पंजाब के संतों में उल्लेखनीय हैं। इन्हें पंजाबी भाषा का आदि 'कवि' कहा जाता है। इनका ऐतिहासिक महत्त्व निर्विवाद है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित इनकी बाणी दो रागों में ११६ शबद/श्लोक हैं। इनकी मधुर उपासना-शैली के कारण इन्हें शकरगंज भी कहा जाता है। श्रद्धा से लोग इन्हें बाबा फरीद जी कहकर याद करते हैं। इनकी बाणी की बानगी-मात्र देखिए :

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥
(पन्ना ४८८)

भक्त रामानंद जी : इन्हें प्रभु-भक्ति का प्रथम आचार्य माना जाता है। ये आचार्य राघवानंद के शिष्य थे। भक्तमाल के अनुसार भक्त रामानंद जी के १२ शिष्य थे, जिनमें भक्त पीपा जी, भक्त कबीर जी, भक्त धंना जी तथा भक्त रामानंद जी के नाम भी शामिल हैं।

भक्त रामानंद जी से पूर्व संस्कृत भाषा व्यवहार की भाषा थी, जबकि इन्होंने जन-

*सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, श्री अमृतसर-१४३००५, मो ९८७८५-५००३४

भाषा को महत्त्व दिया, जिससे भक्ति आंदोलन जन-जन में लोकप्रिय हो गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनका एक शबद बसंत राग में दर्ज है :

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥
(पन्ना ११९५)

भक्त कबीर जी : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं--"सरल आदमी ही प्रचंड होता है; विश्वास-परायण मनुष्य ही निरीह होता है; निष्ठावान ही विनीत होता है। *(कबीर, पृष्ठ १६४)* यह उक्ति भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व को उद्‌भासित करती है। भारतीय साहित्य में भक्त कबीर जी का अन्यतम स्थान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज इनकी बाणी के ५३७ शबद/श्लोक हैं। भक्त रामानंद जी इनके आध्यात्मिक गुरु थे। भक्त कबीर जी महान समाज-सुधारक थे। इनकी बाणी में अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन है। भक्त कबीर जी की भाषा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी ने अपना संदेश बाणी रूप में जनता तक पहुंचाया :

ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥
कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥ जउ घट भीतरि है मलनां ॥ *(पन्ना ६५६)*

भक्त रविदास जी : भक्त रविदास जी को 'रैदास' नाम से भी जाना जाता है। इनके लिखे हुए ४० शबद १६ रागों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। इनकी भाषा सरल ब्रजभाषा है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, उर्दू-फारसी के शबद भी मिल जाते हैं। कुछ विद्वान इन्हें प्रसिद्ध कवयित्री मीरा का आध्यात्मिक गुरु भी बताते हैं। इनकी बाणी पाठकों के साथ अति शीघ्र तादात्म्य स्थापित करती है। इनकी बाणी की एक बानगी देखिए :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥
(पन्ना ४८६)

भक्त परमानंद जी : भक्त परमानंद जी का जगत में विशिष्ट स्थान है। भक्त परमानंद जी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मात्र एक ही शबद सारंग राग में संकलित है। इनकी भाषा शुद्ध, सरल एवं सरस ब्रजभाषा है :

हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥ *(पन्ना १२५३)*

भक्त सूरदास जी : भक्त सूरदास जी की श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी का सारंग राग में एक शबद है :

हरि के संग बसे हरि लोक ॥
तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ *(पन्ना १२५३)*

भक्त सूरदास जी की अन्य तीन रचनाएं भी लोक-प्रचलित हैं-- सूरसागर, सूर-सारावली व साहित्य लहरी। भक्त सूरदास जी के जीवन-वृत्त के लिए बहिर्साक्ष्य के रूप में भगतमाल (नाभादास), चौरासी वैष्णवन की वार्ता (गोकुलनाथ) और वल्लभ दिग्विजय (यदुनाथ) का आधार लिया जाता है। ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनके निधन पर गोसाईं विट्‌ठलनाथ ने कहा था-- "पुष्टिमारग को जहाज जात है, सो जाकों कछु लेनौ होय सो लेउ।" ये ब्रज भाषा के पहले सशक्त

कवि थे।

भक्त नामदेव जी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित बाणी में भक्त नामदेव जी के ६१ शबद हैं। भक्ति-संसार में भक्त नामदेव जी की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई है। परवर्ती अनेक संतों-भक्तों ने अपनी बाणी में इनका उल्लेख किया है। ये तथाकथित जाति के छीपा थे और महाराष्ट्र से संबंध रखते थे। बहुप्रसिद्ध महाराष्ट्रीयन संत ज्ञानदेव इनके मित्र थे। आत्मा को परमात्मा का ही अंश मानते हुए राग आसा में भक्त नामदेव जी कहते हैं कि जिस तरह लहर व बुलबुला जल का ही अंश है, वैसे ही यह शरीर भी परमपिता परमात्मा की लीला है :

जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥
इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त जैदेव जी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त जैदेव जी के केवल २ शबद दर्ज हैं। इन्हें राजा लक्ष्मणसेन का दरबारी कवि भी माना गया है। ये बंगाल से संबंध रखते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज इनकी बाणी का बानगी रूप प्रस्तुत है :

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥
परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ (पन्ना ५२६)

भक्त त्रिलोचन जी : ये महाराष्ट्र से ताल्लुक रखते थे और भक्त नामदेव जी के समकालीन थे। भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य को देखने-समझने की योग्यता के कारण शायद इन्हें 'त्रिलोचन' नाम दिया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके ४ शबद दर्ज हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज इनकी बाणी में से एक पद उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत है :

अंतरि मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥
हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥ (पन्ना ५२५)

भक्त सधना जी : ये सिंध प्रांत (पाकिस्तान) के निवासी थे। ऐसा कहा जाता है कि ये कसाई का कार्य किया करते थे। साधु-संतों की संगत के कारण ये परम भक्त हो गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनका केवल एक ही शबद बिलावल राग में दर्ज है :

मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥ (पन्ना ८५८)

भक्त धंना जी : भक्त धंना जी राजस्थान के रहने वाले थे। ये तथाकथित जाट जाति से संबंध रखते थे। ये अत्यंत सरल हृदयी थे और कर्मरत रहते हुए ईश्वर-भजन में लीन रहते थे। नाभादास कृत 'भगतमाल' में इन्हें भक्त रामानंद जी का शिष्य बताया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके तीन शबद संकलित हैं। इन्होंने 'आरता' नामक बाणी का उच्चारण किया :

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥ (पन्ना ६९५)

भक्त पीपा जी : नाभादास ने 'भगतमाल' में इनका वर्णन किया है और इनकी गणना भक्त रामानंद जी के प्रसिद्ध बारह शिष्यों में की है। ये राजस्थान के रहने वाले थे। इनका एक शबद धनासरी राग में दर्ज है, जिसमें *"जो ब्रहमंडे सोई पिंडे"* कहकर मानव को अपने भीतर ही परमात्मा की खोज करने का उपदेश दिया है :

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥
(पन्ना ६९५)

भक्त सैण जी : भक्त रामानंद जी की शिष्य-परंपरा में इनका नाम भी आदर से लिया जाता है। ये अपने समय के प्रसिद्ध संत थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनका केवल एक ही शबद धनासरी राग में मिलता है :

मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥ (पन्ना ६९५)

इन्हें संत ज्ञानेश्वर का समकालीन माना जाता है। भाई गुरदास जी ने अपने एक पद में इनसे जुड़े एक प्रसंग की चर्चा इस प्रकार की है :

सुणि परतापु कबीर दा दूजा सिखु होआ सैणु नाई ।
प्रेम भगति राती करै भलकै राज दुआरै जाई ।
आए संत पराहुणे कीरतनु होआ रैणि सबाई ।
छडि न सकै संत जन राज दुआरि न सेव कमाई ।
सैण रूपि हरि जाइ कै आइआ राणै नो रीझाई ।
साध जनां नो विदा करि राज दुआरि गइआ सरमाई ।
राणै दूरहुं सदि कै गलहुं कवाई खोलिह पैन्हाई ।
वसि कीता हउं तुधु अजु बोले राजा सुणै लुकाई ।
परगटु करै भगति वडिआई ॥ (वार १०:१६)

भक्त भीखन जी : ये एक मुस्लिम संत थे। उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। भक्त भीखन जी के बारे में कम ही जानकारी उपलब्ध है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके दो पद सोरठि राग में संगृहीत हैं :

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ (पन्ना ६५९)

भक्त बेणी जी : ये मध्य प्रदेश के निवासी माने जाते हैं। इनके संबंध में बहुत कम जानकारी मिलती है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने एक पद में अनेक संतों का उल्लेख किया है, जिनमें भक्त बेणी जी का वर्णन भी मिलता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके तीन शबद दर्ज हैं :

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥
(पन्ना ९७४)

सचमुच श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अद्भुत शीतलता और संतोष प्रदान करती है। नि:संदेह श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वधर्म-समभाव के संदेश को अपने में समाहित किए समूची मानवता को जीने की एक नयी राह दिखाते हैं।

संदर्भ-सूची :-

**डॉ. गुरनाम कौर (बेदी) गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त एवं भट्ट-बाणी, निर्मल पब्लिकेशंस, दिल्ली, २००५*
**धर्मपाल मैनी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब : एक परिचय, अनंत भवन, ५, फील्डगंज, लुधियाना, १९६२*
**डॉ. महीप सिंघ, आदि ग्रंथ में संगृहीत संत कवि, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, २००३*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित आदर्श मनुष्य का स्वरूप

*-डॉ. परमजीत कौर**

बड़ी मेहनत के बाद सुकर्मों के फलस्वरूप मानव शरीर प्राप्त होता है तथा जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने का सुनहरा अवसर उपलब्ध होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निर्दिष्ट आदर्शों को धारण करने से ही जीवन का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी दृढ़ करवा रहे हैं कि यदि मनुष्य गुरु द्वारा प्रदत्त आत्मिक जीवन की सूझ का काजल अपनी आंखों में डाल ले तो सारे संसार को प्रकाशित करने वाला दीपक उसके अंदर प्रदीप्त हो जायेगा। गुरु जी के वचनों के अनुसार जीवन-यापन करने से मनुष्य के अंदर आत्मिक जागृति का प्रकाश हो जायेगा; कामादिक शत्रुओं का दमन हो जाने से वो निडर होकर मानसिक शांति को प्राप्त कर लेगा :

त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥
भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ (पन्ना ११११)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निर्दिष्ट जीवन-मूल्य एक आदर्श मनुष्य के जीवन के आधार-स्तंभ हैं। गुरमति को धारण करने वाला मनुष्य पवित्रता की मूर्ति, छल-कपट से रहित, कर्मकांड का विरोधी, पाखंड-भ्रम से रहित, प्रभु-प्रेम में रंगे हुये व्यक्तित्व का स्वामी है। देवी-देवता, शरीरधारी गुरु, बनावटी संतों तथा मढ़ी-मसानों की पूजा गुरमति में वर्जित है। गुरबाणी का आदेश है :

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (पन्ना ६३४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरबाणी को गुरु मानने का आदेश दिया गया है :

--बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

--इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ (पन्ना ६४६)

विधिवत् गुरबाणी को गुरु मानने की प्रक्रिया का प्रारंभ पांच प्यारों द्वारा प्रदत्त अमृत की दीक्षा से किया जाता है, जिसमें यह दृढ़ करवाया जाता है कि गुरबाणी पर श्रद्धा-विश्वास रखना, गुरबाणी को पूर्ण सत्य समझना तथा गुरु की मति पर चलना गुरु के सिक्ख का धर्म है :

--सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ (पन्ना ३०८)

--गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥
जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ (पन्ना ६६७)

श्री गुरु रामदास जी गुरु के सिक्ख (आदर्श मनुष्य) की दिनचर्या के बारे में समझाते हैं कि ऐसा मनुष्य नित्य अमृत वेला में उठकर प्रभु के नाम का सिमरन करता है। स्नान करके सतिगुरु के उपदेश अनुसार प्रभु के अमृतमयी नाम का जाप करता है। इस तरह उसके सारे

*६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); मो. ९८१२३-५८१८६

पाप-विकार नष्ट हो जाते हैं। उसका मन शांत रहता है। फिर दिन चढ़ने पर वो गुरबाणी का कीर्तन करता है तथा सारा दिन सांसारिक कार्य करते हुए भी प्रभु को याद रखता है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ (पन्ना ३०५)

मनुष्य को निर्भय तथा वैर रहित जीवन जीने का ढंग सिखाने के लिए गुरु साहिब ने उसके समक्ष नाम जपने, किरत करने तथा बांटकर छकने का आदर्श रखा, जिससे वह गौरव, सम्मान एवं स्वाभिमानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥
जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

परमात्मा को सदैव स्मृति में रखना ही उसका सिमरन करना है। परमात्मा को याद रखने से हृदय में उसका डर बना रहता है तथा अन्य सभी डरों से छुटकारा मिल जाता है, क्योंकि ऐसा मनुष्य गलत कार्य नहीं करता, सत्य के मार्ग पर चलता है तथा काम, क्रोध, अहंकार आदि विकारों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता :

हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥
(पन्ना ७४२)

परमात्मा के नाम का सिमरन ही वह रास्ता है जो प्रभु तक पहुंचाता है :

जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥
दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥
(पन्ना ३२२)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार प्रभु के नाम का सिमरन सभी कर्मों से श्रेष्ठ है तथा इसके बिना प्रभु की आराधना पूर्ण नहीं होती :

--पूजा कीचै नामु धिआइऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ (पन्ना ४८९)
--करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥ नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥ (पन्ना १३४५)

नाम जपने के साथ-साथ गृहस्थ धर्म के कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए मेहनत की कमाई (किरत) करके उसमें से जरूरतमंदों की सहायता करने का आदेश दिया गया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरु साहिब के मत में वही आदर्श मनुष्य है वही सही जीवन-मार्ग को पहचानता है जो उचित साधनों द्वारा जीविकोपार्जन करता है, रिश्वत नहीं लेता, दूसरों का अधिकार नहीं छीनता। श्री गुरु नानक देव जी सावधान कर रहे हैं कि जब कपड़ों पर खून लग जाता है तो कपड़े अपवित्र हो जाते हैं, रिश्वत लेकर दूसरों का खून पीने वाला कैसे पवित्र मन वाला हो सकता है?

--जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (पन्ना १४०)
--हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

बांटकर खाने के सिद्धांत से स्वभाव में विनम्रता तथा परोपकार की भावना पैदा होती

है तथा परस्पर प्रेम बढ़ता है, इसलिए जीवन को आदर्शमयी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार निर्धन बच्चों की पढ़ाई तथा उन्हें स्वावलंबी बनाने जैसे कार्यों में योगदान दिया जाए, रुगण तथा असहाय वृद्धों की सहायता की जाए।

गुरु साहिबान ने मेर-तेर तथा जात-पात के भेदभाव को मिटाकर सारी मानवता को एक जानने का आदेश किया है। वर्ण तथा जातियां मनुष्य को एकदूसरे से दूर कर देती हैं। गुरबाणी के अनुसार जब कोई मिले उससे उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए, मनुष्य के कर्म ही उसकी जाति हैं :

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाकर सबके साथ एक सा व्यवहार करना तथा *"एक पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई"* के सिद्धांत को मानकर समाज में विचरण करना मनुष्य का धर्म है, कर्त्तव्य है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन को सफल बनाने के लिए सच्चाई, विनम्रता, मधुरता, क्षमा, सहनशीलता, संतोष, सेवा, परोपकार की भावना आदि गुणों को धारण करने तथा झूठ, निंदा-चुगली, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष से छुटकारा पाने की ताकीद की गयी है।

नशों का सेवन दुर्मति का संकेत तथा चारित्रिक पतन का सूचक है। इसके सेवन से स्वास्थ्य का नाश हो जाता है, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, विवेक, शांति क्षीण हो जाती है, आपराधिक प्रवृत्तियां बढ़ जाती हैं तथा जीवन तबाह हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसके सेवन का निषेध किया गया है :

. . . किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ (पन्ना ३६०)
--जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

सामाजिक कुरीतियों का विरोध करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। दहेज लेना तथा देना एक ऐसी कुरीति है जो बड़े-बड़े हादसों को जन्म देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसका निषेध किया गया है। श्री गुरु रामदास जी समझाते हैं कि सांसारिक धन तथा सामान आदि का दहेज लेकर उसकी नुमाइश करने वाले मनुष्य आदर्श नहीं वरन मनमुख कहे जाते हैं। देना है तो हरि के नाम रूपी दहेज को देना चाहिए। इस दहेज की बराबरी कोई अन्य धन नहीं कर सकता :

हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥
होरि मनमुखि दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ (पन्ना ७८)

श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री को बहुत सम्मान दिया है। आपका कथन है :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित आदर्श मनुष्य के जीवन में कर्मकांड, पाखंड, तीर्थ-स्नान, व्रत, धार्मिक समझे जाने वाले कोरे रीति-रिवाज़, अंधविश्वास आदि का कोई स्थान नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

--करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ (पन्ना ७४७)
--पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलिऐ इह जुगता ॥ (पन्ना ६४२)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार वही मनुष्य श्रेष्ठ हैं जिनके लिए सत्य को धारण करना व्रत, संतोष रूपी तीर्थ, दया रूपी देवता, क्षमा रूपी माला तथा प्रभु का ध्यान तीर्थों का स्नान है :

सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥
(पन्ना १२४५)

ऐसा मनुष्य शगुन-अपशगुन, दिन-मुहूर्त, धागे-ताबीज आदि में विश्वास नहीं करता :

--थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (पन्ना ८४३)
--सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ (पन्ना ४००)

ऐसा जीव अपने जीवन में न किसी से डरता है और न किसी को डराता है :

--भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

संक्षेप में कह सकते हैं कि हृदय में परमात्मा का डर तथा प्रेम रखने वाला, नाम-रंग में रंगा हुआ, *"सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु"* को जीवन का आधार बनाकर, *"पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥"* तथा *"विचि दुनीआ सेव कामईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥"* के सिद्धांत को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने वाला मनुष्य ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित आदर्श मनुष्य कहलाने का अधिकारी है।

अफ़सोस कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने वाले हम आज वहम, भ्रम तथा कोरे कर्मकांडों के पंजे में कैद होते जा रहे हैं। हम सिद्धांतहीन तथा तेजहीन होते जा रहे हैं। पारस्परिक भेदभाव की भावना तथा ईर्ष्या ने सही रास्तों की पकड़ ढीली कर दी है। इस सबका कारण है गुरबाणी को समझने तथा विचार करने का प्रयत्न न करना। जरूरत है, अपने नित्य के जीवन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निर्दिष्ट उपदेशों को लागू करने की। इसके साथ-साथ आत्मनिरीक्षण भी जरूरी है। यदि हम सब आत्मनिरीक्षण करें तथा धन, मान व चौधराहट की चाह में गुरमति सिद्धांतों को न्यौछावर न करने का बीड़ा उठा लें तो हम में से प्रत्येक 'आदर्श मनुष्य' कहलाने का अधिकारी हो सकता है। ❂

कविता

पथिक की प्रार्थना

करो कृपा प्रभु इतनी मुझ पर, विषयों में अटकूं नहीं।
मार्ग मुझको दिखता जाए, मैं कहीं भटकूं नहीं।
राह में बाधा भी होती, कष्ट भी आते सदा।
पार पा जाऊंगा उनसे, बस तुम्हारी हो कृपा।
आए न कोई कमी भी, आस और विश्वास में।
टूटने पाये न हिम्मत, उत्स हो हर श्वास में।
घेर लें जो तम के बादल, सूर्य बन तुम छांटना।
नाव भवसागर में डोले, बन खिवैया तारना।
पाप दलदल में फंसू, तो जल्द मुझको आ बचाना।
दुख का तूफान आए, तो गोद में अपनी बिठाना।
प्रीत-श्रद्धा तुममें है जो, तुम सदा उसको बढ़ाना।
खोट मेरे मिट न पाए, अब तुम्हीं को है मिटाना।
पाना-पाना तुमको पाना, लौटकर वापस नहीं आना।
अंश हूं मैं तो तुम्हारा, अपने में मुझको मिलाना। ❂

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो : ९४११६०७६७२

गुरमति में 'मुक्ति' की अवधारणा

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

जब से भी मनुष्य का अस्तित्व है, 'मुक्ति' उसकी सर्वोच्च अभिलाषा और उद्देश्य रही है। मनुष्य अपने समस्त जीवन में भले कितनी ही सांसारिक उपलब्धियां प्राप्त कर ले; धन, नाम, यश, कीर्ति प्राप्त कर ले; सभी दुनियावी वस्तुएं हासिल कर ले; जो वह चाहता है या जिसकी उसे लालसा है सब उसे मिल जाए, पर फिर भी वह संपूर्ण तृप्ति प्राप्त नहीं कर पाता। कहीं न कहीं, कोई न कोई कमी उसे महसूस होती ही रहती है।

मुक्ति का अर्थ : आम तौर पर समस्त सांसारिक दुखों, कष्टों और क्लेशों से सदा के लिए छूट जाने को ही मुक्ति कहा गया है। मुक्ति भारतीय दर्शन-परंपरा का एक आधार-भूत तत्व रही है। सारे भारतीय धर्मों, दर्शनों, मतों और संप्रदायों में इस विषय पर बड़ी गहरी चर्चा होती रही है, परन्तु लगभग हर विचार-श्रृंखला में इसके भिन्न-भिन्न स्वरूप को स्वीकार किया गया है।

मुक्ति : विभिन्न अवधारणाएं : वेदों-उपनिषदों में आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है और आत्मा के चौरासी लाख योनियों के आवागमन-चक्र से छूटकर अपने मूल 'ब्रह्म-प्रभु' में लीन हो जाने को ही मुक्ति कहा गया है।[१] वेदकालीन नास्तिक दार्शनिकों में से प्रमुख आचार्य चार्वाक ने मनुष्य की मृत्यु को ही उसकी मुक्ति माना है, क्योंकि उसके अनुसार मृत्यु के बाद मनुष्य का जीवन है ही नहीं।[२] बौद्ध-दर्शन में मुक्ति को 'निर्वाण' कहा गया है। निर्वाण का अर्थ है-- बुझ जाना। जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक तेल खत्म होने पर बुझ जाता है उसी प्रकार महात्मा बुद्ध के अनुसार जब मनुष्य में से पाप और वासना रूपी तेल समाप्त हो जाता है तो वह पूर्ण दुख-निवृत्ति की अवस्था में पहुंचकर बुझ जाता है अर्थात् निर्वाण प्राप्त कर लेता है।[३] जैन-मत में मुक्ति को 'कैवल्य' कहा गया है। महात्मा महावीर के अनुसार मनुष्य की आत्मा जब संसार के 'कारण-कार्य-भाव' से मुक्त होकर पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण ज्ञान, असीस चेतना, परम स्वतंत्रता और स्थिर आनंद प्राप्त कर लेती है तो वह 'कैवल्य' को प्राप्त कर लेता है।[४] न्याय-दर्शन के अनुसार मनुष्य की वह अवस्था जिसमें सुख और दुख का पूर्ण अभाव हो जाता है, मुक्ति की अवस्था कहलाती है।[५] दूसरी ओर सांख्य-दर्शन के अनुसार 'पुरुष' का 'प्रकृति' से संयोग दुख का मूल कारण है। जब 'पुरुष' 'प्रकृति' के बंधन से मुक्त होकर अपनी नित्यता, सत्यता और अपरिवर्तनशीलता को महसूस कर लेता है तो वह मुक्त हो जाता है।[६] मीमांसा-दर्शन के अनुसार दृश्यमान जगत् का मोह टूट जाना ही मुक्ति है।[७] ईसवी सन् की दूसरी-तीसरी शताब्दी में ब्राह्मणों के पुनरुत्थान के फलस्वरूप उद्भूत भागवत-धर्म के अनुसार सर्वोच्च देवता विष्णु बैकुंठ में निवास करता है और स्मरण, कीर्तन, वंदन, अर्चन आदि नौ प्रकार की नवधा-भक्ति के माध्यम से उसके किसी भी

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१

अवतार-स्वरूप की मूर्ति की पूजा करके, उसे प्रसन्न करके उसके ऐश्वर्य में भाग प्राप्त करना ही मुक्ति माना गया है।[८] मध्यकालीन सगुण भक्तों ने भी इसी विचार को स्वीकार किया है। हठ योग मत में समाधि के माध्यम से कुंडलिनी को जागृत कर ब्रह्म-लोक, जो शुषुमना-इड़ा-पिंगला के सिरे पर रीढ़ की हड्डी के ऊपर स्थित है और ब्रह्म का निवास-स्थान है, में पहुंचाने को मुक्ति प्राप्त करना कहा गया है।[९]

गुरमति में मुक्ति : गुरमति में भी मुक्ति संबंधी व्यापक चर्चा हुई है। गुरु साहिबान ने इस संदर्भ में स्पष्ट विचार प्रस्तुत किये हैं। हालांकि गुरबाणी में मुक्ति की अवधारणा के विभिन्न पक्षों से संबंधित सूक्ष्म अभिव्यक्तियां प्राप्त होती हैं, पर सार रूप में यह कहा जा सकता है कि गुरमति द्वारा स्थापित मुक्ति की अवधारणा उपनिषदों की विचारधारा से मेल खाती है। गुरमति के अनुसार मुक्ति का अर्थ है -- आत्मा का अपने मूल परमात्मा से मिलन। यह मनुष्य के द्वारा अपनी हउमै (अहं) के पूर्ण त्याग के पश्चात् अकाल पुरख के वास्तविक स्वरूप की पहचान के द्वारा ही संभव है। गुरबाणी में स्पष्ट संकेत हैं कि जब मनुष्य चौरासी लाख योनियों के चक्र से छूटकर, जन्म-मरण के झंझट से परे होकर अकाल पुरख से एकाकार हो जायेगा तो उसे मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होगा, यथा :

--लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ (पन्ना १०७५)

--भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ (पन्ना १२)

--से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जी तिन टूटी जम की फासी ॥ (पन्ना ३४८)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बड़ी सुंदरता से मानव और अकाल पुरख के पारस्परिक संबंध को रेखांकित किया है :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे।
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूरि के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे।
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं,
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे।
तैसे बिश्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ,
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे।
(अकाल उसतत)

मुक्ति प्राप्त करने का साधन : जिस प्रकार भिन्न-भिन्न दार्शनिक विचारधाराओं में मुक्ति का स्वरूप भिन्न-भिन्न है उसी प्रकार मुक्ति को प्राप्त करने का मार्ग भी अलग-अलग बताया गया है। वेद-उपनिषद् ज्ञान-प्राप्ति की बात करते हैं।[१०] बौद्ध-दर्शन अपने संचित कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाले दुखों को अधिक से अधिक भोगने की विधि बयान करता है।[११] जैन मत में 'सम्यक जीवन-पद्धति' पर बल दिया गया।[१२] भागवत और सगुण धर्मी अपने आराध्य देव की मूर्ति की बहु-विधि प्रेम-भक्ति करने का उपदेश देते हैं।[१३] हठ योग में समाधि लगाकर साधन करने का विधान है।[१४]

गुरमति में मुक्ति मार्ग : जहां तक गुरमति का संबंध है, यहां बखाना गया मुक्ति का रास्ता सर्वथा नवीन, सामाजिक और अत्यंत सरल-

सहज है। अन्य मत-मतांतरों में जहां मनुष्य को अपनी स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति को छोड़कर, इस संसार से स्वयं को अलग करके कुछ खास अनुष्ठान करने के लिए मज़बूर होना पड़ता है, वहीं गुरमति के अनुसार मनुष्य सारे सांसारिक कार्य-व्यवहार और ज़िम्मेदारियों को निभाता हुआ भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है :

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति। (पन्ना ५२२)

इसके अतिरिक्त गुरबाणी में स्पष्ट संकेत है कि मनुष्य अपनी मर्ज़ी या इच्छा से ज़बरदस्ती 'मुक्ति' हासिल नहीं कर सकता। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि *"जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥"* क्योंकि इस सृष्टि में सब कुछ अकाल पुरख के हुक्म के अनुसार ही हो रहा है। जन्म-मरण और आवागमन का चक्र भी अकाल पुरख की ही रज़ा है। जपु जी साहिब में एक अन्य स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी का कथन है : *"इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम ना कोइ ॥"* अर्थात् सब अकाल पुरख के हुक्म में है। वह किसी को मुक्ति दे देता है और किसी को आवागमन में डाले रखता है। अत: स्पष्ट है कि गुरबाणी के अनुसार मनुष्य को मुक्ति अपनी मर्ज़ी से नहीं बल्कि अकाल पुरख के हुक्म से प्राप्त होनी है। गुरबाणी के अनुसार अकाल पुरख की नदरि अर्थात् कृपा प्राप्त होना ही मुक्ति हासिल करने का सहज मार्ग है। श्री गुरु नानक देव जी का स्पष्ट कथन है -- *"करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥"* अर्थात् सद्कर्मों से अच्छा शरीर मिलता है, पर मुक्ति नदरि से ही मिलती है। श्री गुरु अरजन देव जी ने मुक्ति की प्राप्ति के संबंध में साफ-साफ कहा है कि अकाल पुरख तप या साधना से नहीं मिलता बल्कि जब मनुष्य पर उसकी दया होती है, तभी उससे मिलन होता है :

घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ (पन्ना ६७२)

यही नहीं, गुरबाणी तो अकाल पुरख के हुक्म की यहां तक घोषणा करती है कि मनुष्य वाहिगुरु की भक्ति तभी कर सकता है, अगर इस कार्य में अकाल पुरख की अपनी रज़ा शामिल हो :

--*जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥* (पन्ना ११)
--*जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥* (पन्ना ११)

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुरबाणी के अनुसार मुक्ति एवं मुक्ति का मार्ग तभी प्राप्त हो सकता है जब अकाल पुरख की नदरि और रज़ा हो। दरअसल गुरु साहिबान ने मनुष्य को मुक्ति-प्राप्ति के लिए किए जाने वाली विशेष तपस्याओं, साधनाओं, यज्ञादि अनुष्ठानों से पूरी तरह मुक्ति दिला दी है। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि मनुष्य को इस संदर्भ में किसी भ्रम, भ्रांति या भय में फंसने की आवश्यकता नहीं है। उस अकाल पुरख, जिसके हुक्म के अनुसार सारी सृष्टि है, के द्वारा सृष्टि का सारा कार्य-व्यवहार चल रहा है। अकाल पुरख जब चाहेगा मनुष्य को नदरि का दान बख़्शकर अपनी ओर लगा लेगा।

इस प्रकार गुरमति मनुष्य के सर्वोच्च उद्देश्य एवं लक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में एक सहज-स्वाभाविक ज़िंदगी जीने की राह दिखाता है और अकाल पुरख के हुक्म तथा रज़ा में रहकर

उसकी नदरि की प्रतीक्षा करने का उपदेश देता है। मुक्ति की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है मनुष्य की हउमै (अह्म)। जब मनुष्य अकाल पुरख के हुक्म और रज़ा को पहचान लेता है तब वह हउमै से रहित हो जाता है। जपु जी साहिब में दर्ज है-- *"नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥"* गुरबाणी में हउमै के त्याग की अवस्था को जीवित रहते हुए ही मुक्ति प्राप्त करना कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

जीवन मुकतु सो आखिऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥ (पन्ना १००९)

दरअसल मुक्ति प्राप्त करने की राह में हउमै का त्याग सबसे पहला पड़ाव है।

नदरि की प्रतीक्षा के दौरान मनुष्य को क्या करना है यह श्री गुरु अरजन देव जी स्पष्ट रूप से समझाते हैं; उत्तम कर्म करते हुए अकाल पुरख के नाम का सिमरन और उसकी सिफत-सालाह (स्तुति) करते रहना है।

सामूहिक मुक्ति : गुरमति के अनुसार मुक्ति की अवधारणा के विषय में एक तथ्य और भी विशेष ध्यान देने योग्य है। सभी नये-पुराने मत-मतांतरों में मुक्ति का अर्थ मात्र व्यक्तिगत मुक्ति है, परंतु गुरमति मनुष्य की व्यक्तिगत मुक्ति के साथ-साथ समाजगत या समष्टिगत मुक्ति की भी राह दिखाती है। गुरमति के अनुसार मनुष्य की व्यक्तिगत मुक्ति उस समय तक कोई महत्त्व नहीं रखती जब तक समष्टिगत मुक्ति अपना स्वरूप धारण नहीं कर लेती। इस परिप्रेक्ष्य में गुरमति संगत की अवधारणा को स्थापित करती है। मुक्त मनुष्य जहां अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियां प्राप्त करता है, वहीं वह समाज में एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में विचरण करके सारी सृष्टि को अपना आंतरिक प्रकाश प्रदान करते हुए उनका मार्ग भी प्रकाशित करता है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

अर्थात् जिन मनुष्यों ने अकाल पुरख का नाम-सिमरन किया है वे अपनी मेहनत सफल कर गये हैं; अकाल पुरख के दर पर वे उजले मुख वाले हैं और अन्य कई जीव उनकी संगत में रहकर माया के बंधनों से आज़ाद हो गए हैं।

संदर्भ संकेत :-

१. डॉ. राधा कृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग-एक (दिल्ली : राजपाल एंड संस, १९६६), पृ-२१८.
२. वही, पृष्ठ-२५९-२६०
३. वही, पृष्ठ-४११
४. वही, पृष्ठ-३०४-३०५
५. प्रो. प्यारा सिंघ पदम्, गुरू ग्रंथ संकेत कोश, (संपा), (पटियाला : पंजाबी यूनीवर्सिटी, पब्लिकेशन ब्यूरो, १९९४), पृष्ठ-१३३
६. वही
७. वही, पृष्ठ-१३४.
८. डॉ. नगेंद्र (संपा) हिंदी साहित्य का इतिहास, (दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, १९८७) पृष्ठ-१९२
९. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर (नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, १९८७), पृष्ठ-५३-५४
१०. डॉ. राधा कृष्णन, भारतीय दर्शन, वही, पृष्ठ-२२०
११. वही, पृष्ठ-४१३ *१२. वही, पृष्ठ-३०५*
१३. डॉ. नगेंद्र, (संपा) हिंदी साहित्य का इतिहास, वही, पृष्ठ--१९२.
१४. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, वही पृष्ठ-५४

भाई गुरदास जी का जीवन-चरित

*-श्री जसदीप मोहन**

भाई गुरदास जी सिक्ख गुरु साहिबान की गौरवशालिनी परंपरा के समय में सर्वाधिक उच्च कोटि के विद्वान थे। वे न केवल संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, हिंदी, ब्रजभाषा इत्यादि के धर्मनिष्ठ, अध्यनशील, गुरसिक्खी के प्रतिनिधि और अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी थे, अपितु गुरबाणी और सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार में जानतोड़ परिश्रम करने वाले अद्वितीय गुरु-भक्त, भाषा-प्रेमी भी जाने जाते हैं। यही कारण है कि पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लेखन का गंभीर कार्य इनको एकमात्र और योग्यतम पात्र निर्धारित करके सौंपा था। इनके इस महान आध्यात्मिक, धार्मिक और साहित्यिक कार्य की अभूतपूर्व और अदृष्टपूर्व देन या प्रदेय पर विचार करने से पहले इस महान् पुरुष के जीवन-चरित पर दृष्टिपात करना समुचित रहेगा। आगे इनके जीवन के कतिपय उल्लेखनीय घटना-प्रसंग पर ही आलोक-प्रक्षेपण किया जा रहा है:-

जीवन-संबंधी तथ्यों की प्रमाणिकता : पंजाबी साहित्य और सिक्ख धर्म के मध्यकालीन महान् प्रतिनिधि तथा प्रचारक व्यक्तियों में, जिनके जीवन के विषय में प्रमाणिक तथ्यों के विषय में गुरबाणी के मर्मज्ञ विद्वानों में विशेष विवाद रहा है, उनमें भाई गुरदास जी का जीवन भी गिना जा सकता है। प्रसिद्ध इतिहासकारों में अधिकतर ने इनके जन्म, बचपन और यौवन के अतिरिक्त प्रमुख घटनाओं के विषय में उपलब्ध परस्पर विरोधी तथ्यों को प्रस्तुत करते समय अपने अनुमान से ही काम लिया है। ऐसे विद्धानों के ग्रंथ, यथा-- 'गुरबिलास पातशाही छेवीं', भाई संतोख सिंघ का ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज', ज्ञानी गिआन सिंघ की ऐतिहासिक कृति 'तवारीख गुरू खालसा' के समान अन्य ऐतिहासिक ग्रंथ, यथा-- 'महिमा प्रकाश', 'हरि जी की गोसट' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। वर्तमान काल में विद्धान् लेखक डॉ. गंडा सिंघ का अंग्रेज़ी ऐतिहासिक ग्रंथ 'लाईफ ऑफ भाई गुरदास' सन् १९१० में छपा था। इसी प्रकार बावा बुद्ध सिंघ का ग्रंथ 'हंस चोग' (सन् १९१३), ज्ञानी खज़ान सिंघ का ग्रंथ 'जीवन भाई गुरदास' (सन् १९४३), डॉ. मोहन सिंघ दीवाना का ग्रंथ 'पंजाबी अदब दी मुख़तसर तारीख' (सन् १९४८), भाई वीर सिंघ का ग्रंथ 'कबित्त भाई गुरदास, दूजा स्कंध (सन् १९५०), स. हरिंदर सिंघ रूप कृत 'भाई गुरदास' (सन् १९५०) और स. सरदूल सिंघ की पुस्तक 'भाई गुरदास' (सन् १९६१) इत्यादि। कुछेक विशिष्ट आलेखों के नाम गिनाए जा सकते हैं, यथा-- 'पंजाबी दुनीआ' (पंजाबी) पत्रिका के सन् १९६८ में प्रकाशित विशेषांक 'भाई गुरदास' में प्रकाशित लेख के रचनाकार स. रणधीर सिंघ।

तीसरे गुरु साहिब श्री गुरु अमरदास जी गुरमति और गुरबाणी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा के कारण जब संवत् १६०९ बिक्रमी (सन्

**प्रिंसीपल, लायलपुर खालसा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, नकोदर रोड, जलंधर-१४४०११; मो: ९९१५३-६६६९३*

१५५२) ई. में गुरगद्दी पर समासीन हुए, तब भाई वीर सिंघ ने उनके समकालीन होने के नाते अनुमानतः भाई गुरदास जी का काल भी उसी के आस-पास घोषित कर दिया है। इसी प्रकार अन्य इतिहासज्ञों ने विभिन्न वर्षों से सम्बंधित मत प्रस्तुत किए हैं। प्रो. सरदूल सिंघ ने भाई गुरदास जी का जन्म सन् १५५८ ई. में माना है। डॉ. गंडा सिंघ ने सन् १५५९ ई. कहा है तथा डॉ. मोहन सिंघ और डॉ. सुरिंदर सिंघ (कोहली) दोनों इस विचार से पूर्णतः सहमत हैं।

स. रणधीर सिंघ के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी के चाचा चंद्रभान के दो सुपुत्र थे-- दातारचंद और ईशरदास। दूसरे सुपुत्र ईशरदास (भल्ला) के घर भाई गुरदास जी का जन्म संवत् १६०८ बिक्रमी (सन् १५५१ ई.) में हुआ। इसी शोधमूलक विचार के पक्ष में अधिकतर विद्धान रहे हैं।

प्रारंभिक शिक्षा-प्राप्ति और विविध भाषा-ज्ञान : श्री गुरु अमरदास जी ने अपने जीवन काल में गोइंदवाल नामक नगर बसाया और प्रफुल्लित किया। यहां भाई गुरदास जी के बाल्य-काल का अधिकांश समय व्यतीत हुआ। इसी नगर में भाई गुरदास जी ने गुरमुखी और देवनागरी लिपि का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। यहीं समीपस्थ नगर सुलतानपुर लोधी में स्थित एक मुस्लिम मदरिसे में भाई गुरदास जी ने अरबी-फारसी भाषा की जो पढ़ाई की, उसका वही ज्ञान आगे चलकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसे महान् और विश्व-प्रख्यात ग्रंथ का लेखन करते समय उनके काम आया। भाषा विभाग, पंजाब द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'भाई गुरदास' (पन्ना २) में इस तथ्य का स्पष्ट रूप में उल्लेख हुआ है।

दूसरे विद्वान् की शोध के अनुसार भाई गुरदास जी ने वाराणसी जाकर पंडित केशो गोपाल से अरबी-फ़ारसी भाषाओं का विशेष ज्ञान प्राप्त किया था। उन्हीं से उन्हें संस्कृत साहित्य और भारतीय दर्शन की भी प्रमुख बातों की व्यापक जानकारी प्राप्त हुई थी।

गुरसिक्खी का व्यापक प्रचार और गुरु साहिबान की सेवा : भाई गुरदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक चार गुरु साहिबान की सेवा और गुरसिक्खी के प्रचार का आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य करने का व्यापक अनुभव था। वे प्रत्येक गुरु के समय में गुरु-घर की सेवा और महान् व्यक्तियों के शुभ विवाह तथा अकाल चलाने के समय विशेष 'अरदास' कार्य करने के लिए आमंत्रित किए जाते थे। बाबा सूरजमल जी और बाबा गुरदित्ता जी के विवाह (अनंद कारज) की बात हो या फिर माता गंगा जी तथा बाबा बुड्ढा जी के अकाल चलाने के समय अरदास करने की, भाई गुरदास जी को ही विशेष व्यक्ति के नाते बुलाकर उन्हीं से अंतिम अरदास करवाई गई थी।

डॉ. गुरबख़श सिंघ शांत के मतानुसार, बाबा बुड्ढा जी के अकाल चलाने के उपरांत भाई गुरदास जी को ही श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब का मुख्य ग्रंथी नियुक्त किया गया था। *(भाई गुरदास जी दीआं वारां दा अलोचनातमक अधिऐन, पृष्ठ १२)*

श्री गुरु अरजन देव जी के बड़े भाई प्रिथीचंद गुरु जी के और सिक्ख धर्म के विरुद्ध गलत प्रचार कर रहे थे। ऐसे विकट समय में भाई गुरदास जी ही थे जो गुरु-घर के विरोधियों के दुष्प्रचार का खंडन करने में जी-जान से लग गए। वे बाबा बुड्ढा जी के संग विभिन्न स्थानों पर जा-जाकर प्रिथीचंद के द्वारा पूरी

तरह से फुसलाए हुए सिक्खों को सही रास्ते पर लाने के श्रमसाध्य कार्य सम्पन्न करते रहे। उन्होंने अपनी छठी वार में प्रिथीचंद को स्पष्ट रूप से 'मीणा' (झूठा) कहकर उसे लांछित भी किया है।

भाई गुरदास जी ने नगर गोइंदवाल साहिब की समृद्धि में भी अभूतपूर्व योगदान किया था। उन्होंने न केवल गोइंदवाल साहिब में बाउली के निर्माण में महान् योगदान दिया था, अपितु सन् १५७७ में श्री हरिमंदर साहिब के 'अमृत सरोवर' की भी प्राणपण से सेवा की थी।

रेखाचित्र : यद्यपि भाई गुरदास जी के बाहरी व्यक्तित्व के सम्बंध में बहुत अधिक ज्ञान नहीं है, तथापि डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) ने शोध करके अपने ग्रंथ 'भाई गुरदास : जीवनी ते रचना' पृष्ठ ३१ में स्पष्ट रूप से शोध करके यह बताया है कि बनारस (वर्तमान नाम वाराणसी) में चेतन नामक एक मठ है, जहां भाई गुरदास जी का १५० वर्ष प्राचीनतम चित्र सुरक्षित रखा हुआ है।

भाई हरिंदर सिंघ रूप ने अपनी पुस्तक 'भाई गुरदास' में भाई गुरदास जी की प्रकृति, स्वभाव और वाह्य आकृति (हुलिया, कियाफ़) के सम्बंध में एक कवितात्मक अभिव्यक्ति की है, जो कि आगे प्रस्तुत है :

चिट्टा बाणा नूरां धोता, हसवां रसवां चिहरा।
असर पाउणी खुंबे चढ़िआ, चिट्टा दाढ़ा ओहदा।
पग्ग पुराणे सिक्खी ढंग दी, अद्धा चंद सिर धरिआ।
नैणां दे विच्च सोहणा वस्सिआ ते मेरा दिल ठरिआ। *(पृष्ठ १९०)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लेखन-संपादन में योगदान : भाई गुरदास जी गुरसिक्खी और गुरबाणी की विशेष रहित मर्यादा से जुड़े सभी नियमों और सिद्धांतों से सबसे अधिक परिचित और ज्ञानवान् विद्वान थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने एकत्रित की गई बाणी का चुनाव करके उसके लेखन का अतिशय गंभीर कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए सर्वाधिक योग्य और विशेषज्ञ व्यक्ति के रूप में भाई गुरदास जी को ही चुना था। संकलित और गुरु-क्रमानुसार तथा रागानुसार संयोजित सारी बाणी का लेखन-कार्य केवल भाई गुरदास जी के ही ज़िम्मे किया गया। जनसाधारण में वे विशेष रूप से आदरास्पद, विश्वस्त और लोकप्रिय विद्वान समझे जाते थे। उनके समकक्ष योग्यता और विद्वता रखने में उनका सानी (समकक्षी) विद्वान् और समूची महती गुरबाणी का ज्ञाता, अध्येता तथा मर्मज्ञ पारखी ज्ञानी-जन कोई और न था।

आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने भारत के विभिन्न भागों में भ्रमण करके विभिन्न भक्तों आदि की इधर-उधर बिखरी हुई, गुरमति के अनुकूल बैठने वाली सरस, सुबोध और सुमधुर बाणी को एकत्र करने में विशेष रुचि का प्रदर्शन किया। श्री गुरु अरजन देव जी तक आते-आते बाणी का एक संग्रह एकत्र हो चुका था। उनके इस महत्त्वपूर्ण कार्य का ज्ञान उनके बड़े भाई प्रिथीचंद को भी हो गया था। हद दर्जे का ज्ञानहीन, मूर्ख तथा ईर्ष्यालु प्रतिद्वंद्वी और मनमुख व्यक्ति होने के कारण उसने न केवल सिक्ख संगत को गुमराह करना आरंभ कर दिया था, अपितु उसने स्वयं भी अन्य अप्रमाणिक काव्य रचना को एकत्र करने का ढोंग आरंभ कर दिया था। इसे श्री गुरु अरजन देव जी ने 'कच्ची बाणी' कहा है।

प्रो. ब्रहमजगदीश सिंघ ने लिखा है कि भाई गुरदास जी ने यह कार्य श्री अमृतसर तीर्थ (श्री हरिमंदर साहिब) से पूर्व दिशा में लगभग एक

मील की दूरी पर एक रमणीक स्थान (रामसर के तट पर) पर बैठकर सम्पन्न किया था। सिक्ख इतिहासकारों के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं बाणी बोलकर बताया करते थे और भाई गुरदास जी उन्हें सुचारू रूप से लिखते जाते थे।

यदि हम करतारपुरी बीड़ को आधार मानें तो उसमें यह स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है कि भाई गुरदास जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ के लेखन का यह भव्य और महान् कार्य संवत् १६६१ बिक्रमी अर्थात् सन् १६०४ में सम्पूर्ण किया था। यह बात पंजाबी साहित्य के विद्वान भाई जोध सिंघ ने अपने ग्रंथ 'करतारपुरी बीड़ दे दरशन' (पृष्ठ ४) के प्रारंभ में ही दर्ज की हुई है।

दूसरी ओर, उस काल में प्रिथीचंद अपनी करतूतों को चालू रखे हुए था। उसने तत्कालीन बादशाह अकबर के पास जाकर श्री गुरु अरजन देव जी के बारे में यह मिथ्या शिकायत भी कर डाली थी कि उनके द्वारा संपादित किए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस्लाम धर्म की स्थल-स्थल पर निंदा की है। यह सुनते ही बादशाह ने श्री गुरु अरजन देव जी को बटाला बुलवा लिया था। गुरु जी ने स्वयंमेव वहां जाने की अपेक्षा बाबा बुड्ढा जी के साथ भाई गुरदास जी को वहां भिजवा दिया था। अकबर बादशाह बहुत दूरदर्शी था, फिर भी वह प्राप्त शिकायत पर अपने स्तर पर गौर करना चाहता था। उसने भाई गुरदास जी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब से कुछ शबद पढ़कर सुनाने के लिए कहा था। जब भाई गुरदास जी ने कोई से तीन शबद पढ़कर सुनाए, तब जाकर बादशाह को पता चला कि इस पावन ग्रंथ में इस्लाम के विरुद्ध कोई भी गलत शब्द या वाक्य नहीं है और शिकायत एकदम झूठी है। इसके अनंतर बादशाह सलामत ने भाई साहिब से गुरमति के विषय में कुछ और सवाल किए। उन सभी के तसल्लीबख़्श जवाब उन्होंने दिए थे। अत्यंत प्रसन्न और संतुष्ट होकर अकबर बादशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शनार्थ ५१ मुहरें प्रदान करके सम्मान सहित लौटा दिया था। यह तथ्य ज्ञानी गिआन सिंघ के पूर्वोक्त ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' में पृष्ठ ४०९ पर दिया गया है।

बादशाह अकबर के देहांत के बाद २४ अक्तूबर, सन् १६०५ को उसका बेटा सलीम जहांगीर के नाम से तख़्तनशीन हुआ। कुछ समय ही बीता था कि उसके भाई खुसरो ने उसके विरुद्ध खुलेआम विद्रोह कर दिया। कानों का कच्चा बादशाह जहांगीर श्री गुरु अरजन देव जी और सिक्ख धर्म के विरुद्ध पहले से ही भरा हुआ था। पुन: यह शिकायत पाकर कि खुसरो को श्री गुरु अरजन देव जी ने पनाह दी है, वह अब और अधिक क्रोध से विक्षिप्त-सा हो गया और उसने गुरु जी को यथाशीघ्र गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया।

यह समाचार जानकर श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी सौंप दी। इसके साथ ही श्री अमृतसर से लाहौर जाने से पहले श्री हरिमंदर साहिब का सारा सेवा-कार्य भी वे अपने निकटस्थ और अतिशय आत्मीय विद्वान् भाई गुरदास जी एवं बाबा बुड्ढा जी को सौंप गए थे। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद कर दिए जाने का दुखद और हृदयविदारक समाचार पता चला तो उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ की विधिवत् रस्म बाबा बुड्ढा जी से सम्पन्न करवाई और अंतिम अरदास भाई गुरदास जी से करवाई थी।

इससे भी भाई गुरदास जी की आध्यात्मिक और सामाजिक महत्ता का रेखांकन होता है। श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी से पीड़ित मन वाले भाई गुरदास जी ने श्रद्धांजलिस्वरूप ये वचन लिखे थे :

रहिदे गुरु दरीआउ विचि मीन कुलीन हेतु निरबाणी।
दरसनु देखि पतंग जिउ जोती अंदरि जोति समाणी।
सबदु सुरति लिव मिरग जिउ भीड़ पई चिति अवरु न आणी।
चरण कवल मिलि भवर जिउ सुख विचि रैणि विहाणी ।
गुरु उपदेसु न विसरै बाबीहे जिउ आख वखाणी।
गुरमुखि सुख फलु पिरम रसु सहज समाधि साध संगि जाणी।
गुर अरजन विटहु कुरबाणी ॥ (वार २४:२३)

समग्रत: यह कहा जा सकता है कि भाई गुरदास जी के व्यक्तित्व में सिक्ख धर्म की निष्ठा, गुरबाणी का विपुल ज्ञान, विभिन्न भाषाओं की व्यापक और स्पृहणीय जानकारी सामाजिक आचार-विचारों, पंजाबी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी हुई अनेकविध रीति-रस्मों, लोकगाथाओं इत्यादि के गहन परिचय, शास्त्रीय संगीत कला की गहरी समझ और गुरु साहिबान के प्रति अगाध और नि:स्वार्थ सेवा की भावनाओं का सागर उमड़ रहा था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बाल्यावस्था बाबा बुड्ढा जी के साथ-साथ भाई गुरदास जी के संरक्षण में ही बीती थी। भाई जी शास्त्रों के गहन अध्ययन के साथ-साथ युद्ध-कला में भी निपुण थे, क्योंकि उन्होंने सिक्खों को युद्ध-कला का सुष्ठु ज्ञान करवाने के प्रयोजन से शस्त्रास्त्रों का निर्माण करने वाले अनेक कारखानों को भी विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया था। उन्होंने दूर-दराज के क्षेत्रों से अश्वों के साथ शस्त्रास्त्र मंगवाने के लिए अनेक सिक्ख संगत के साथ समय-समय पर आवश्यक और लाभकारक पत्राचार भी किया था। दूसरे शब्दों में, वे 'संत' होने के साथ-साथ सुयोग्य और रणबांकुरे शूरवीर 'सिपाही' भी थे। यह बात प्रो. सरदूल सिंघ ने अपनी पुस्तक 'भाई गुरदास' में सविस्तार स्पष्ट की है। जब सन् १६०९ ई में श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना की गई, तब इसका सर्वप्रथम जत्थेदार भाई गुरदास जी को ही बनाया गया। इससे इस महान् पुरुष के लोकप्रिय व्यक्तित्व का प्रमाण मिलता है। स. कुइर सिंघ ने भी अपने ग्रंथ 'गुरबिलास पातशाही छ:' में पृष्ठ १४० पर काव्यमयी ढंग से इस प्रसंग को गूंथते हुए कहा है-- *"तखत पूज करिबे नमित गुरदास भाई ठहिराए।"*

[illegible] भाई गुरदास जी जैसे धर्मनिष्ठ, ज्ञानवान् महान् व्याख्याकार और परम विद्वान् बरसों बाद ही इस [illegible] जन्म लिया करते हैं। उनकी [illegible] के कारण वे सिक्ख इतिहास और [illegible] चिरस्मरणीय हैं और सदैव रहेंगे, इसमें द[illegible] नहीं हैं। आज हम उन्हें बहुत सत्कार और सम्मान के साथ याद करते हैं।
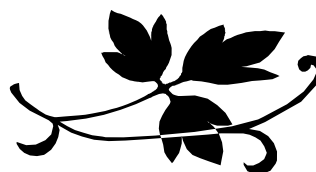
भाई गुरदास जी : जीवन-परिचय और गुरमति-सेवा

-डॉ. नवरत्न कपूर*

जीवन-परिचय : भाई गुरदास जी का सिक्ख गुरु साहिबान के साथ घनिष्ठ पारिवारिक संबंध था। संबंधों की दृष्टि से वे तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे और माता भानी जी के चचेरे भाई थे। माता भानी जी का विवाह चौथे सिक्ख गुरु श्री गुरु रामदास जी के साथ होने के कारण वे भाई गुरदास जी के बहनोई थे। इस संबंध के कारण भाई गुरदास जी पंचम गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी के मामा थे।[१]

भाई गुरदास जी के पिता का नाम दातार जी तथा माता का नाम जीवणी जी था। (कुछ विद्वान आपके पिता का नाम ईशरदास बताते हैं।) भाई साहिब का जन्म पंजाब के तरनतारन नगर से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित गोइंदवाल कसबे (ज़िला तरनतारन) में सन् १५५१ में हुआ था। प्रो. किरपाल सिंघ के अनुसार आपका पैतृक-स्थान गांव बासरके (ज़िला श्री अमृतसर) में था।[२] भाई गुरदास जी को तीन वर्ष की अवस्था में पितृ-विछोह और बारह वर्ष की अवस्था में मातृ-विछोह सहना पड़ा। फलत: उनका लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा उनके ताऊ श्री गुरु अमरदास जी की छत्र-छाया में हुई। आप संस्कृत, अरबी, फ़ारसी तथा पंजाबी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार रखते थे। श्री गुरु अमरदास जी ने ही आपको सन् १५७९ ई में सिक्ख धर्म में दीक्षित किया था।[३] कहते हैं कि ३० सितंबर, सन् १५७८ को मुग़ल सम्राट् अकबर ने सर्वधर्म-सम्मेलन का आयोजन किया था। इसी सम्मेलन में लिए गए निर्णयों को ध्यान में रखकर सम्राट् अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की थी। आप सिक्ख धर्म के प्रचार हेतु कश्मीर, लाहौर, आगरा और काशी भी गए थे।[४]

श्री गुरु अमरदास जी तथा उनके परवर्ती तीन गुरु साहिबान समेत चार सिक्ख गुरुओं के दर्शन एवं उनके साथ जीवन-यापन करने का सौभाग्य भाई गुरदास जी को प्राप्त हुआ था। इनकी वारों में श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठे गुरु साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक की महिमा का वर्णन मिलता है।

सतिगुरु नानक देउ है परमेसरु सोई।
गुर अंगदु गुरु अंग ते जोती जोति समोई।
अमरा पदु गुरु अंगदहुं हुइ जाणु जणोई।
गुरु अमरहुं गुरु रामदास अंम्रित रसु भोई।
रामदासहुं अरजनु गुरू गुरु सबद सथोई।
हरिगोविंद गुरु अरजनुं गुरु गोविंदु होई।
गुरमुखि सुख फल पिरम रसु सतिसंग अलोई।
गुरु गोबिंदहुं बाहिरा दूजा नही कोई।

(वार ३८:२०)

सन् १६३७ में लगभग ८६ वर्ष में भाई साहिब का देहावसान हो गया और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इनके शरीरांत की रस्में पूरी की थीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने सिक्ख श्रद्धालुओं समेत श्री अमृतसर पधारे। वहीं पर श्री अकाल तख़्त साहिब में श्री गुरु ग्रंथ

*बी-१८०१, प्लाट नं. १०६, तुलसी सागर हाऊसिंग सोसाइटी, सेक्टर-२८, नेरूल, नवी मुंबई-४००७०६, मो ०२२-२७७२९६९६

साहिब के पाठ की ज़िम्मेदारी भाई बिधीचंद ने निभाई थी। अंतिम अरदास के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी अपने श्रद्धालुओं समेत श्री अकाल तख़्त साहिब में विराजमान थे।[५]

गुरमति-सेवा : गुरमति संबंधी भाई साहिब की तीन प्रकार की रचनाएं मिलती हैं :-

(क) वारें : भाई साहिब की रचना ४० वारें सिक्ख धर्म के नियमों का उत्तम भंडार हैं। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि सिक्खी का 'रहितनामा' भाई साहिब की बाणी से बढ़कर और कोई नहीं। श्री गुरु अरजन देव जी के वचन हैं कि भाई गुरदास जी की रचना पढ़ने से सिक्खी प्राप्त होती है :

सुनि गुर अरजन जिह की बानी।
वर दीनो अस बिधि गति दानी।
पढ़ै प्रेम करि के सिख जोऊ।
सिक्खी को प्रापत है सोऊ ॥

(गुरु नानक प्रकाश)[६]

भाई गुरदास जी की ४० वारों में कुल ९१३ पउड़ीआं हैं। भाई साहिब द्वारा प्रयुक्त शब्दावली में से लगभग ६० प्रतिशत शब्दों का संबंध भारतीय विरासत से है और १७ प्रतिशत का सामी भाषाओं से।[७] इस विवरण के परिप्रेक्ष्य में डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) का कथन है :-

"भाई गुरदास जी का भाषा संबंधी ज्ञान बड़ा विशाल और अधिकारपूर्ण था। सचमुच वे भाषा के अधिनायक थे। जिस ज्ञान-परंपरा से संबंधित शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता उन्हें हुई वही शब्द अपनी सांस्कृतिक विरासत और संकल्प सहित उपस्थित हो गया। भाई गुरदास जी जैसे कुशल घड़ने वाले की खराद पर चढ़ने के पश्चात् उसे (शब्द को) जो रूप प्रदान किया गया, उसने उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। वह आज भी आनंदपूर्वक अपने स्थान पर सजा हुआ है। उसका प्रकरण के अन्य शब्दों के साथ इतना घनिष्ठ सुमेल है कि क्या मजाल है आज भी उसे हटाकर कोई अन्य शब्द रखा जा सके। इसके समुचित प्रयोग के फलस्वरूप सारा प्रकरण ही कांतियुक्त हो जाता है। निस्संदेह यह पंजाबी भाषा के लिए गौरव की बात है।..... इनमें सामाजिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक पक्ष के साथ-साथ सिक्खों के सदाचार का वर्णन भी यत्र-तत्र हुआ है।[८]

(ख) कबित्त, सवैये आदि : इनकी कुल गिनती ६७५ है। इनमें से ६४८ कबित्त, ३ सवैये, ८ दोहरे (दोहे), ८ सोरठे और ८ छंत हैं।[९]

(३) संस्कृत श्लोक : कवि संतोख सिंघ ने अपने विशाल ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज' में भाई गुरदास जी के छ: संस्कृत श्लोकों का उल्लेख किया है। जनश्रुति है कि जब पंडितों ने 'वाहिगुरु' शब्द से पहले प्रचलित परमात्मा के नामों से अधिक उसकी विशेषता के बारे में प्रश्न किया तो भाई गुरदास जी ने संस्कृत श्लोकों के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए थे। ये श्लोक 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की ७वीं रास, अंसू ४, छंद ५१ वाले विवरण में सुरक्षित हैं।[१०]

(४) श्री गुरु ग्रंथ साहिब का लेखन-कार्य : श्री गुरु रामदास जी के पश्चात परंपरा अनुसार सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा रचित और प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संग्रहीत भक्त-बाणी का भंडार पांचवे सिक्ख गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी को अपने पूर्वजों की विरासत के रूप में प्राप्त हुआ था। उन्होंने इसके मूल रूप को सुरक्षित रखने के लिए समग्र बाणी को एक ही ग्रंथ में संकलित करने का निश्चय किया। गुरु साहिब को अपने मामा भाई गुरदास जी ही एकमात्र भरोसेयोग्य व्यक्ति नज़र आए जोकि अनेक भाषाओं के पारंगत भी थे।

अतः श्री गुरु अरजन देव जी ने उन्हें ही गुरबाणी के लेखक और शोधक के रूप में अपने साथ जोड़ा। यह कार्य कैसे संपन्न हुआ, इसके बारे में भाई कान्ह सिंघ के 'महान कोश' तथा अन्य स्रोतों के आधार पर डॉ दलीप सिंघ 'दीप' ने लिखा है :-

"श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी को संभालने तथा एक ही स्थान पर संकलित करके मिलावट से बचाने के लिए उसे एक 'ग्रंथ' में सुरक्षित रखने का प्रोग्राम बनाया। यह एक महान् कार्य था, जिसके लिए भाई (गुरदास) साहिब ने अत्यंत परिश्रम किया। वे उस समय के सर्वाधिक विद्वान और विश्वसनीय सिक्ख थे। गुरु साहिब ने उन्हें योग्य समझकर पहले बाणी संकलित करने और फिर क्रमानुसार लिखने के लिए कहा।"

"रामसर (श्री अमृतसर) में इस सहान और अमर ग्रंथ के लिए शामियानों तथा कनातों की व्यवस्था की गई। कलमों और रोशनाई के लिए भाई बंनो नामक महानुभाव को उत्तरदायित्व सौंपा गया। गुरु साहिब के निर्देशानुसार 'ग्रंथ' की लिखाई का कार्य आरंभ हुआ।"

"गुरु (अरजन देव) साहिब उपलब्ध बाणी को संपादित करके देते जाते थे और भाई गुरदास जी उसको लिखते रहते थे।. . . सन् १६०४ ई में लेखन-कार्य संपन्न किया।"[११]

भाई कान्ह सिंघ के अनुसार इसी वर्ष (संवत् १६६१ अर्थात् सन् १६०४) की भादों सुदी १ (प्रतिपदा) को (इस पावन ग्रंथ को) श्री 'हरिमंदर' साहिब में गुरमति के प्रचार के लिए स्थापित करके बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी नियुक्त किया गया।. . . श्री गुरु अरजन साहिब ने जो प्रति भाई गुरदास जी की कलम से लिखवाई थी, उसका प्रसिद्ध नाम 'भाई गुरदास वाली प्रति' हो गया।[१२] अन्यथा इसे 'पोथी साहिब' पुकारा जाता था।[१३]

भाई गुरदास जी की स्वरचित कृतियों की महिमा : इस संदर्भ में ज्ञानी लाल सिंघ का कथन है : "भाई गुरदास जी श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे थे, जो कि भल्ला गौत्र के खत्रियों से संबंध रखते थे।[१४] ये संस्कृत के अच्छे ज्ञाता और पंजाबी के शिरोमणि विद्वान थे।. . . इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रीमान भाई गुरदास जी ने सिक्ख धर्म की जो सेवा की, वह अद्वितीय है। उस युग के सभी हालात उनकी वारों से ही मिलते हैं।[१५]

(क) जीवनीकार : ज्ञानी लाल सिंघ का कथन शत-प्रतिशत सही है। पहले छः सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-कार्यों संबंधी अनेक प्रसंग भाई साहिब की वारों में मिलते हैं। भाई गुरदास जी की पहली वार को भाई मनी सिंघ जी से सुनकर ज्ञानी सूरत सिंघ ने 'गिआन रतनावली' शीर्षक से उसका विस्तृत विवेचन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-प्रसंगों और दार्शनिक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला था। एक विद्वान् ने इस टीका के आधार पर भाई गुरदास जी को बहुपक्षीय ज्ञान-युक्त, गंभीर चिंतक, श्रद्धावान् सिक्ख, गुरमति के सिद्धांतों के गंभीरतापूर्वक विश्लेषक, इतिहासकार, ब्रह्मज्ञानी तथा महान लेखक की उपमाएं प्रदान की हैं।[१६]

(ख) गुरबाणी के व्याख्याकार : भाई गुरदास जी की वारों में कई ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जिनसे यह प्रकट होता है कि उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान अन्य महानुभावों के कथनों का स्पष्टीकरण बड़ी सरल भाषा में किया है, यथा :

(१) भाई सत्ता-- भाई बलवंड की वारों में से एक उदाहरण प्रस्तुत है, यथा :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥. . .

सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन् मुरटीऐ ॥. . .
गोरिऔ रंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥
(पन्ना ९६६)

भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार में इस पद का विश्लेषण इस प्रकार किया है :
फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।
उलटी गंग वहाईओनि गुर अंगदु सिरि उपरि धारा।
पुतरी कउलु न पालिआ मनि खोटे आकी नसिआरा। *(वार १:३८)*

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रों को गुरगद्दी प्रदान न की (पुत्री. . .मुरटीऐ) और 'लहिणा' (श्री गुरु अंगद देव जी) को यह धार्मिक विरासत सौंपी। उसके बारे में भाई सत्ता-भाई बलवंड नामक रबाबियों के कथन का विश्लेषण भाई गुरदास जी के मनोहर वचनों द्वारा सरल भाषा में किया गया है।[१७]

(२) भाई सत्ता- भाई बलवंड का कथन है कि श्री गुरु नानक देव जी ने कठिन परीक्षा (जो सोधोसु) के पश्चात् भाई लहिणा जी को 'अंगद देव' नाम प्रदान करके गुरगद्दी प्रदान की थी। उन रबाबियों के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित एक पद का तत्संबंधी चरण इस प्रकार है :
जां सोधोसु ता लहिणा टिकिओणु ॥
(पन्ना ९६७)

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के इस महान कार्य को राजाओं के सिक्का चलाने के प्रतीक के रूप में नई परंपरा एवं एक दीपक की ज्योति से दूसरा दीपक जलाने के बिंब-विधान द्वारा परिपुष्ट किया, यथा :
मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ।
थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्र फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ ॥ (वार १:४५)[१८]

(३) भक्त नामदेव जी ने अपने परम मित्र भक्त त्रिलोचन जी को परमार्थ का सही रास्ता इस प्रकार बताया है :
नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्ालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७६)

अर्थात् : भक्त नामदेव जी ने अपने मित्र भक्त त्रिलोचन जी से कहा कि वह हाथ-पैर से परिश्रम करे और मुख से निरंतर प्रभु-नाम की माला (संमालि) जपता रहे। इस प्रकार सदैव अपने हृदय में निराकार ईश्वर (निरंजन) का ध्यान करता रहे।

भाई गुरदास जी ने इस पद का विश्लेषण इस प्रकार किया है :
किरति विरति करि धरम की हथहु दे कै भला मनावै ॥ *(वार ६:१२)*

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह ईमानदारी से अपने पेशे (वृत्ति) संबंधी कार्य करे और दानशील बनकर सभी सांसारिक जीवों का भला करे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाई गुरदास जी की वारें पहले छः सिक्ख गुरु साहिबान--- श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक की जीवन-गाथा और गुरमति सिद्धांतों का अत्यंत प्रमाणिक

कोश हैं।

संदर्भ-सूची :

१. (क) डॉ नवरत्न कपूर, महिमा श्री गुरू अंगद देव जी, पृष्ठ ५८. (प्रो साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला द्वारा प्रकाशित पंजाबी पुस्तक), सन् २००४.

(ख) डॉ नवरत्न कपूर, श्री गुरु अंगद देव जी: यशोगान परंपरा और बाणी, पृष्ठ ३८ (छठा अध्याय : भाई गुरदास), संगम प्रेस, पुणे (महाराष्ट्र), सन् २००६.

२. स. सतिंदर सिंघ नंदा (संपादित), प्रो किरपाल सिंघ कसेल अभिनंदन ग्रंथ, पृष्ठ ५३२. (हिरदेजीत साहित प्रकाशन, पटियाला) सन् २००३.

३ डॉ जीत सिंघ सीतल, अंम्रितसर : सिफती दा घर, पृष्ठ ९९ (पंजाब यूनीवर्सिटी, पटियाला), पृष्ठ ९९.

४. भाई कान्ह सिंघ (संपादित), महान कोश, पृष्ठ ३२७ (भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला)

५. (क) गिआनी लाल सिंघ, गुरमति निरणै भंडार, पृष्ठ ८६० (जनक प्रकाशन, संगरूर)

(ख) डॉ दलीप सिंघ **'दीप'**, भाई गुरदास, पृष्ठ २२ (भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला)

६. भाई कान्ह सिंघ (संपा.), महान कोश, पृष्ठ ३११ तथा अंतिका (परिशिष्ट), पृष्ठ ८६१ (उपर्युक्त)

७. डॉ रतन सिंघ (जग्गी), वारा भाई गुरदास : शबद अनुक्रमणिका अते कोश, निवेदन, पृष्ठ घ (पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला) सन् १९६६

८. उपर्युक्त, निवेदन, पन्ना ग

९. सन् १९४० ई तक कबित्त-सवैयों की गिनती ५५६ ही ज्ञात थी, जो कि भाई कान्ह सिंघ ने महान कोश के पृष्ठ ३११ पर दी थी। बाद में भाई वीर सिंघ ने ११९ और ढूंढ लिए। इस प्रकार इनकी संख्या अब ६७५ ही मानी जाती है।---- गुरमेल सिंघ (संपादक), गुरू नानक देव जी दीआं जनमसाखीआं विचले इतिहासिक अते मिथिहासिक संकेतां दा कोश, पृष्ठ १०५ (प्रो साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला), सन् २००४

१०. उपर्युक्त, पृष्ठ १०५.

*११. डॉ दलीप सिंघ **'दीप'**, भाई गुरदास, पृष्ठ ९ (भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला)*

१२. भाई कान्ह सिंघ (संपादित), महान कोश, पृष्ठ ३२७.

*१३. (क) डॉ दलीप सिंघ **'दीप'** : भाई गुरदास, पृष्ठ ९.*

*(ख) पुरातन जनमसाखी, पृष्ठ ११४ के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी और उनकी उदासियों (भ्रमण) के दौरान एकत्रित बाणी की भाई मनसुख द्वारा की गई क्रमबद्ध प्रति को **'पोथी'** कहा जाने लगा, जिसे श्री गुरु अंगद देव जी को सौंपा गया था।*

१४. गिआनी लाल सिंघ, गुरमति मारतंड, पृष्ठ ८६१ (जनक प्रकाशन, संगरूर)

१५. उपर्युक्त, पृष्ठ ८८

१६. डॉ गुरमेल सिंघ (संपादक), गुरू नानक देव जी दीआं जनमसाखीआं विचले इतिहासिक अते मिथिहासिक संकेतां दा कोश, पृष्ठ १०५.

१७. डॉ नवरत्न कपूर, महिमा श्री गुरू अंगद देव जी, पृष्ठ ६१ (प्रो साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला द्वारा प्रकाशित पंजाबी पुस्तक), सन् २००४.

१८. डॉ नवरत्न कपूर, खालसा पंथ : विकास-यात्रा और मानव-हितैषी आदर्श, पृष्ठ १९ (इंडो प्रिंटर्स, पटियाला), सन् २००३

१९. डॉ सुरजीत सिंघ, गुरमति मंथन, पृष्ठ ४३ (वारिस शाह फाउंडेशन, श्री अमृतसर, सन् २०००)

भाई गुरदास जी

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

भाई गुरदास जी ऐसे महान और सम्माननीय व्यक्ति हैं जिन्होंने श्री गुरु अमरदास जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक चार गुरु साहिबान की पावन संगत की। आप जी श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे थे। भाई गुरदास जी का जीवन श्री गोइंदवाल साहिब से आरंभ होता है। गुरु जी की पावन संगत की रंगत भाई गुरदास जी पर खूब चढ़ी। आप जी ने अपना समूचा जीवन गुरु-घर की सेवा में समर्पित कर दिया था। गुरु जी ने भाई गुरदास जी की तीक्ष्ण बुद्धि और गुरमति के ज्ञान में परिपक्वता देखकर आपको चंबा और जम्मू रियासत में सिक्ख धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था। १५७४ ई में श्री गुरु अमरदास जी परलोक गमन कर गए और भाई गुरदास जी वापिस आकर श्री गुरु रामदास जी की सेवा में लग गए। श्री गुरु रामदास जी की आज्ञा से आप सिक्ख धर्म के प्रचार हेतु आगरा, लखनऊ, बुरहानपुर और राजस्थान के क्षेत्रों में भी गए। भाई गुरदास जी उस समय आगरा ही थे जब श्री गुरु रामदास जी शारीरिक चोला त्याग गए। आप जी श्री गुरु अरजन देव जी की सेवा में श्री अमृतसर आकर रहने लगे।

श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथीचंद गुरु-घर का बड़ा विरोधी बना हुआ था। वो सिक्ख संगत से चढ़ावा आदि खुद ले लेता था और परशादा छकने के लिए संगत को गुरु जी के पास लंगर में भेज दिया करता था। भाई गुरदास जी ने प्रमुख सिक्खों-- बाबा बुड्ढा जी, भाई पैड़ा जी, भाई साल्हो जी आदि से सलाह करके शहर के बाहरी रास्तों पर प्रमुख सिक्खों को खड़ा कर दिया, इसलिए कि बाहर से आने वाली संगत को वास्तविकता के बारे में जागृत किया जा सके।

श्री गुरु अरजन देव जी की आज्ञा, आदेश और मार्गदर्शन के अंतर्गत भाई गुरदास जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के समय लिखारी की सेवा का महान कार्य भाई गुरदास जी ने ही निभाया। श्री गुरु अरजन देव जी और छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय भी संगत की सेवा, गुरमति प्रचार की सेवा और प्रबंध की सेवा भाई गुरदास जी प्रेम और सद्भावना से करते रहे। जब गुरु जी ग्वालियर के किले में नज़रबंद थे, उस समय भी लंगर आदि की देखरेख भाई गुरदास जी द्वारा ही होती रही। जब गुरु जी ने गुरदासपुर ज़िले में श्री गुरु हरिगोबिंदपुर नगर बसाया तब भी भाई गुरदास जी ने वहां पहुंचकर संगत की सेवा की। आप जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। बटाला के पंडित नित्यानंद को गुरमति अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा की। काशी (बनारस) में गुरमति प्रचार के पश्चात भाई गुरदास जी गोइंदवाल साहिब आ गए और संवत् १६९४, को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की हजूरी में अमृत वेले के स्नान के बाद भाई साहिब ने शारीरिक चोला त्याग दिया। भाई साहिब ने ४० वारों और ६७५ कबित्त सवैयों की रचना की है। आप जी द्वारा रचित वारों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कुंजी होने का सम्मान प्राप्त है। ❁

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१

शहीद करतार सिंघ सराभा

*-सिमरजीत सिंघ**

ज़िला लुधियाना में 'सराभा' नामक एक गांव है। यह गांव लुधियाना-पक्खोवाल सड़क पर आबाद है। रेलवे स्टेशन लुधियाना इस गांव से १६ किलोमीटर दूर है। इस गांव में गरेवाल वंश से सम्बंधित जाटों का निवास है। इस वंश के लोग १४६९ ईं के लगभग पंजाब में आए थे। इन्होंने पंजाब में आकर सबसे पहले परिमल, ललतों तथा गुजरवाल आदि गांव आबाद किए थे। चंदेल राजा की पीढ़ी में से राजा बैरसी हुआ है, जिसकी सत्रहवीं पीढ़ी के चौधरी गुजर ने १४९९ ई में हिसार के इलाके में से आकर गुजरवाल गांव की मोहड़ी गाड़कर आबाद किया था तथा इस इलाके की ५४ हज़ार बीघे ज़मीन पर कब्जा किया था। गुजरवाल गांव में से इस वंश के लोग आगे किला रायपुर, लोहगढ़, फलेवाल, महिमा सिंघ वाला व नारंगवाल में आबाद हो गए। इस इलाके में इन्होंने ६४ गांव आबाद किए। सन् १६३१ ई में छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुजरवाल गांव में अपने पावन चरण डाले। गुरु जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर इन्होंने सिक्खी धारण कर ली। इस वंश के लोगों का इस इलाके में बहुत मान-सम्मान था। इलाके में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है-- "टिक्का धालीवालों का, चौधर गरेवालों की, बुजुर्गी गिल्लों की।" भारत की आज़ादी के महान शहीद स. करतार सिंघ सराभा भी इसी वंश में से थे।

स. करतार सिंघ सराभा का जन्म गांव सराभा में स. मंगल सिंघ के घर माता साहिब कौर की कोख से २४ मई, १८९६ ई को अमीर घराने में हुआ। आपसे छोटी आप जी की एक बहन थी जिसका नाम धंन कौर था। आप जी के पास खेती योग्य अच्छी ज़मीन थी जिस पर स. मंगल सिंघ खेती किया करता था। आप जी के एक चाचा उड़ीसा में वन विभाग के सरकारी अफ़सर थे। दूसरा चाचा यू. पी. में इंस्पेक्टर था। आप छोटी आयु के ही थे कि आप जी के पिता का देहांत हो गया। आपकी परवरिश आप जी के दादा स. बदन सिंघ की निगरानी तले हुई। प्राइमरी तक की शिक्षा आपने गांव के स्कूल से ही प्राप्त की। मालवा खालसा हाई स्कूल से नौवीं कक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं की शिक्षा के लिए आपने अपने चाचा जी के पास उड़ीसा में दाख़िला लिया। उन दिनों उड़ीसा व बंगाल में आज़ादी के लिए संघर्ष की गतिविधियां चालू हो गई थीं। देश-विदेश में घटित हो रही घटनाएं अंग्रेज़ी अख़बारों के जरिए स. करतार सिंघ सराभा के मन पर भी असर डालने लगीं। यहां ही स. करतार सिंघ सराभा को साहित्य, राजनीति तथा इतिहास से सम्बंधित पुस्तकें पढ़ने का मौका मिला। यहां इन्होंने पंजाबी भाषा के साथ-साथ हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी में अच्छी पकड़ हासिल कर ली। दसवीं पास करने के बाद आपको उच्च विद्या

**संपादक, गुरमति ज्ञान तथा गुरमति प्रकाश।*

हेतु अमेरिका भेजने की योजना बनाई गयी।

स. करतार सिंघ सराभा शिक्षा प्राप्त करने के मंतव्य से भारत से चलकर अमेरिका की सानफ्रांसिस्को बंदरगाह पर १ जनवरी, १९१२ ई को पहुंच गया। यहां सरकार ने भारत से आए हिंदोस्तानियों को जहाज से उतरने की अनुमति न दी। यहां हिंदोस्तानियों से होते अपमान को देखकर आपकी आत्मा कांप उठी। इमीग्रेशन अफ़सर ने स. करतार सिंघ सराभा से पूछा :

"तेरा नाम क्या है?"

"करतार सिंघ सराभा।"

"तू यहां क्या करने आया है?"

"मै यहां विद्या प्राप्त करने हेतु आया हूं।"

"क्या हिंन्दोस्तान में पढ़ने के लिए कोई जगह नहीं?"

"हिंदोस्तान में विश्वविद्यालय तो हैं किंतु मुझे मालूम पड़ा है कि अमेरिका एक आज़ाद देश है तथा अमेरिका में बहुत अच्छे विश्वविद्यालय हैं जिसमें कई देशों से शिक्षार्थी आकर विद्या ग्रहण करते हैं। मैं भी यहां से पढ़ना चाहता हूं और कुछ बनना चाहता हूं।"

"अगर तुझे यहां पर उतरने न दिया जाए और वापस मोड़ दिया जाए तो क्या करेगा?"

"यह तो बड़ी बेइन्साफी वाली बात होगी। अमेरिका जैसे आज़ाद देश में भी अगर विद्यार्थियों को रुकावटें डाली जाएंगी तो संसार की उन्नति कैसे होगी? इसलिए मेरा निवेदन है कि मुझे रोका न जाए। क्या मालूम मैं यहां से विद्या प्राप्त करके विश्व-भलाई का कोई महान कार्य कर सकूं जिससे हिंदोस्तान की ही नहीं अमेरिका की भी इज्जत बढ़ जाएगी।"

यह सुनकर इमीग्रेशन अफ़सर प्रसन्न हो गया तथा उसने स. करतार सिंघ सराभा को सानफ्रांसिस्को उतरने की आज्ञा दे दी। बंगरगाह से उतरकर आप यूलोकांउनटी चले गए। यहां आप पंजाबियों के खेतों तथा बागों में फल तोड़ने का काम करने लगे। यहां आपने सख़्त मेहनत कर कुछ पैसे भी जमा कर लिए।

सन् १९१२ ई में आपने बर्कले में कैलीफोर्निया यूनीवर्सिटी में रसायन विज्ञान की पढ़ाई के लिए दाख़िला ले लिया। यहां लगभग ३० भारतीय विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। विद्यार्थी दो दलों में बंटे हुए थे। पंजाबी विद्यार्थी देश में से अंग्रेजी राज्य को खत्म करने के लिए हथियारों का इस्तेमाल करना चाहते थे। गैर-पंजाबी विद्यार्थी अहिंसा व काम चलाऊ ढंग में विश्वास रखते थे। स. करतार सिंघ सराभा ने बचपन से ही सिक्ख इतिहास में शहीदों की साखियां तथा गुरु साहिबान के कुर्बानी भरे कारनामे सुने हुए थे। स. करतार सिंघ सराभा देश की आज़ादी के लिए हर तरह की कुर्बानी करने वाले दल के साथ थे। यहां आपका सम्बंध सन् १९१३ ई में गदर लहर से हुआ। आप यहां गदर लहर की प्रेस में काम करने लगे। जिस पर्चे की जिम्मेदारी आपको सौंपी गई उसका पहला नाम 'हिंद एसोसियेशन आफ़ पैस्फिक कोसट' था। बाद में इसका नाम बदलकर 'गदर लहर' रखा गया। 'गदर' का पहला पर्चा उर्दू में निकाला गया। इसका पंजाबी प्रकाशन ८ दिसंबर, १९१३ ई को शुरू हुआ। कुछ समय बाद यह हिन्दी व अंग्रेजी में छपना शुरू हो गया। पंजाबी पर्चे की सारी देखरेख स. करतार सिंघ सराभा द्वारा ही की जाती थी।

आप इसमें जोशीली कविताएं लिखकर छापने लगे।

विश्व-युद्ध छिड़ गया, जिसके कारण आपको भारत वापस आना पड़ा। आप १५ सितम्बर, १९१४ ई को भारत वापस आ गए। भारत आकर आपने लाहौर में गदर पार्टी का काम शुरू कर दिया। पार्टी के उद्देश्य की सफलता के लिए विद्यार्थियों तथा फौजियों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। फौजियों को बगावत के लिए उत्साहित किया। लाहौर में गदर पार्टी को सरगर्म करने के लिए अन्य प्रांतों से भी लोग आते तथा योजनाएं तैयार करते रहते थे। इन्होंने बनारस जाकर रास बिहारी बोस से भी राबता कायम किया। 'गदर' पर्चे में १० फरवरी, १९१४ ई को एक इश्तिहार छापा गया, जिसके शब्द थे-- "ज़रूरत है... ज़रूरत है... निडर तथा बहादुर सिपाहियों की; हिंदोस्तान में गदर मचाने के लिए! तनख्वाह-- मृत्यु, इनाम-- शहीदी, पेंशन-- आज़ादी, मुकाम-- मैदान-ए-जंग हिंदोस्तान।"

हथियारबंद लड़ाई के लिए अच्छे हथियारों तथा सिखलाई की ज़रूरत थी। इसलिए आज़ादी घुलाटियों को अमेरिका स्थित कई केन्द्रों में भेजा गया। स. करतार सिंघ सराभा ने ६ महीने की सिखलाई सिर्फ ४ महीने में ही प्राप्त कर ली।

जब गदर की ये तैयारियां चल रही थीं तो कामागाटामारू जहाज की घटना घटित हो गई।

१६-१७ अक्तूबर, १९१४ ई को स. करतार सिंघ सराभा ने श्री अमृतसर में भाई नानक सिंघ जी के घर एक मीटिंग की। इसमें फैसले किए गए कि :

-- देश परतने वाले गदरियों की सूचिकाएं तैयार की जाएं।

-- लहर के प्रोग्राम को चलाने के लिए फंड तथा हथियार इकट्ठा किए जाएं।

— लहर के प्रोग्रामों को अमली रूप देने के लिए फौजी छावनियों से संपर्क किया जाए तथा गदर की तारीख निश्चित की जाए ताकि अंग्रेज़ देश छोड़ने के लिए मज़बूर हो जाएं।

हथियार इकट्ठा करने के लिए पैसे की आवश्यकता थी। इस जरूरत को पूरा करने के लिए स. करतार सिंघ सराभा ने लुधियाना ज़िले के नगर साहनेवाल व मनसूरां में डाके डाले। फौजी छावनियों से भी हथियार लूटने की योजना बनाई गई। स. करतार सिंघ सराभा फ़िरोजपुर तथा मीयां मीर की छावनी में फौजियों को तैयार करने के यत्न करने लगे। गदर के प्रोग्राम को अंतिम स्पर्श देने के लिए नवंबर, १९१४ में कई मीटिंगें की गईं। पहली मीटिंग २ नवंबर, १९१४ को ननकाणा साहिब में हुई। कुछ दिनों बाद ही दूसरी मीटिंग खासा (अमृतसर) में की गयी। तीसरी मीटिंग लाडोवाल (लुधियाना) में २३ नवंबर को की गयी। इसी दिन एक अन्य मीटिंग झाड़ साहिब (तरनतारन) में भी हुई। इस मीटिंग में यह फैसला हुआ कि सबसे पहले परख के रूप में २६ नवंबर को मीयां मीर की छावनी पर हमला किया जाए। स. करतार सिंघ सराभा साधू, फकीर व सफाई कर्मचारी के रूप में कई दिन छावनी का जायजा लेते रहे। हमले वाले दिन उन फौजियों की ड्यूटी बदल दी गयी जिन्होंने सहयोग करना था। हथियारों की भी कमी महसूस की गई, जिस कारण प्रोग्राम आगे कर दिया गया।

२५ जनवरी, १९१५ ई को रास बिहारी बोस बंगाल से पंजाब गए। रास बिहारी बोस के आ जाने के कारण गदर लहर का मुख्य कार्यालय लाहौर बदल दिया गया। १९ फरवरी, १९१५ ई की आधी रात को बगावत का समय निश्चित किया गया। एक मुखबर क्रिपाल सिंघ की मुखबरी के कारण सारा भेद खुल गया। इस योजना के अनुसार स. करतार सिंघ सराभा उसी रात फ़िरोजपुर पहुंचा था। १९ फरवरी को ही भाई रणधीर सिंघ जी का जत्था भी वहीं पहुंच चुका था। सरकार के चौकस हो जाने के कारण यह बगावत न हो सकी। बहुत सारे गदरी पकड़े गए।

स. करतार सिंघ सराभा लाहौर पहुंच गए। यह स. हरनाम सिंघ टुंडीलाट तथा स. जगत सिंघ से मिलकर उत्तर-पश्चिमी सरहदों द्वारा भारत से बाहर चले गए। कुछ देर बाद आप भारत वापस आ गए। यहां आपने अपनी क्रांतिकारी कार्यवाहियां शुरू कर दीं। २ मार्च, १९१५ ई को इनको चक्क न: ५ सरगोधा में अन्य कथित बागियों सहित पकड़ लिया गया। इन सभी के विरुद्ध बगावत का मुकद्दमा चलाया गया। १३ सितम्बर, १९१५ ई को स. करतार सिंघ सराभा व इनके छ: अन्य साथी-- श्री विष्णु गणेश पिंगले, स. बखशीश सिंघ, स. सुरैण सिंघ गिलवाली (अमृतसर), स. सुराइण सिंघ, स. जगत सिंघ सुरसिंघ तथा भाई हरनाम सिंघ सियालकोटी को मौत की सज़ा सुनाई गई। १६ नवंबर, १९१५ ई को सुबह २० वर्ष की आयु में लाहौर की सेंट्रल जेल में इनको साथियों सहित फांसी लगा दी गयी।

फांसी चढ़ते समय आपने दरोगा को कहा कि "मेरे मरने के बाद मेरे लहू की हर एक बूंद से अनेक करतार सिंघ पैदा होकर आज़ादी प्राप्ति के लिए संघर्ष करते रहेंगे।" फांसी चढ़ने से एक दिन पहले आपने देशवासियों के नाम 'गदर' पर्चे के लिए एक कविता लिखी :

देशवासीओ रक्खणा याद सानूं, किते दिलां चों ना भुला जाणा।
खातर वतन लई ही लगे हां चढ़न फांसी, सानूं वेख के न घबरा जाणा।

आपकी याद में लुधियाना में एक बुत स्थापित किया गया है। आप जी के नाम पर सराभा गांव में शहीद स. करतार सिंघ सराभा सीनियर सेकेंडरी स्कूल भी कायम किया गया है। शहीद स. करतार सिंघ सराभा स. भगत सिंघ के लिए प्रेरणास्रोत बना। जब स. भगत सिंघ को गिरफ्तार किया गया तो उसकी जेब में से शहीद स. करतार सिंघ सराभा की तसवीर प्राप्त हुई जिसको वे हर समय अपने पास रखा करते थे। स. भगत सिंघ अपनी लिखित में ज़िक्र करते हैं कि "१९ वर्ष की आयु में उनके किए गए बहादुरी के कारनामों के बारे में सोचकर बहुत आश्चर्य होता है। इतना हौसला, इतना आत्मविश्वास तथा इतनी लगन बहुत कम ही देखने को मिलती है। भारत ने ऐसे लोग कम ही पैदा किए हैं जो शब्द के सच्चे अर्थों में इतने बड़े बागी थे। ऐसी गिनती के लोगों की सूचिका में स. करतार सिंघ का नाम सबसे पहले आता है। इन्कलाब उसके रक्त में था। वह इन्कलाब के लिए ही जीया और मरा।" ❁

स्वतंत्रता संग्राम में सिक्खों का योगदान : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक दस गुरु साहिबान की २३९ वर्ष की मेहनत ने सिक्ख कौम को जो गुरबाणी का खजाना और अमृत की दात बख़्शी है उसका ही प्रभाव था कि सिक्ख कौम ने *"पहिला मरणि कबूलि जीवन की छडि आस"* के अनुसार अपने जीवन और घर-घाट की परवाह न करके आज़ादी की लड़ाई में सबसे अधिक योगदान दिया था। भारत में सिक्खों की जनसंख्या देश की पूरी आबादी की लगभग दो प्रतिशत है, मगर स्वतंत्रता संग्राम में इनका योगदान अस्सी प्रतिशत से भी अधिक है। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास तब तक अपूर्ण माना जाता है जब तक सिक्खों के योगदान का पूरा उल्लेख न हो।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले देश गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ा हुआ था। इस गुलामी ने देश की वीरता, गैरत और स्वाभिमान को पैरों तले रौंद डाला था। जब श्री गुरु नानक देव जी ने विदेशी हमलावर बाबर को हमले के दौरान *"पाप की जंञ लै काबलु धाइआ जोरी मंगै दान वे लालो"* कहकर ललकारा तभी उन्होंने सिक्खों में आज़ादी के बीज बो दिए थे।

१५२१ ई में श्री गुरु नानक देव जी ने उस वक्त के बादशाह बाबर को जाबर कहा :
खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ *(पन्ना ३६०)*

श्री गुरु नानक देव जी ने जुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उनको बाबर की जेल में चक्की पीसनी पड़ी। सतिगुरु जी ने देशवासियों को स्वतंत्रता का एहसास दिलाया। समाज में स्त्रियों को उचित स्थान दिलवाने के लिए तथा जात-पात, ऊंच-नीच के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। नशों के रोकथाम और सरबत्त के भले का उपदेश दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी और देशवासियों के सीने में स्वतंत्रता के जज़्बे की ज्योति प्रज्वलित कर दी। आप जी के उपरांत आप जी के जानशीन अन्य गुरु साहिबान ने इस ज्योति को जलता रखने का उत्तरदायित्व उठाया। पांचवे सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने इस स्वतंत्रता की वेदी पर सबसे पहले अपने शरीर की आहुति देते हुए शहीदी प्राप्त की। इसके बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथ उनके सिक्ख भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी ने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए शहादत का जाम पीया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों और उनके कई सिक्खों ने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए, देश-धर्म की रक्षा के लिए अपनी जानें कुर्बान कीं।

खालसे की सृजना धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक आज़ादी कायम रखने के लिए ही की गई थी। बाबा बंदा सिंघ बहादर के शासन और संग्राम ने सिक्खों को स्थायी तौर पर आज़ादी प्राप्त करने के रास्ते पर

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१-२६६९०*

आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया। सिक्खों ने पंजाब से मुगल राज्य का खातिमा करके ही दम लिया। उसके बाद अफगानिस्तान की तरफ से हमला करने का आज तक किसी ने दुस्साहस नहीं किया।

सिक्खों को देश-भक्ति की भावना विरासत में मिली है। यही कारण है कि देश की स्वतंत्रता का कोई ऐसा आंदोलन नहीं, जिसमें सिक्खों ने सबसे आगे होकर कुर्बानियां न दी हों।

'ग्लैसगो हैरल्ड', कलकत्ता ३-११-१८२५ के अनुसार, "१८२४ ई के बर्मा युद्ध में सिक्ख सैनिकों की कंपनी ४७ नेटिव इन्फेंटरी पर विद्रोह भड़काने का दोष लगाकर रसालदार स. सूर सिंघ, स. जाता सिंघ, स. बलाका सिंघ तथा एक बंगाली अफसर मिस्टर दास को फांसी पर लटका दिया गया।" इस विद्रोह में ८८० फौजी मारे गए या फांसी पर लटका दिए गए। इनमें पांच सौ से ज्यादा केवल सिक्ख थे।

जुलाई, १८२४ ई में रुड़की के पास अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत में गोरा तथा गोरखा फौजों के साथ लड़ते हुए २०० देश-भक्त शहीद हुए, जिनमें ८९ सिक्ख थे।

१४ अक्तूबर, १८२५ ई को गारनेडियर कंपनी में आसामी भाइयों की आज़ादी खत्म करने से इंकार कर दिया गया और विद्रोह खड़ा कर दिया गया। इस विद्रोह में ४०० के लगभग सिक्ख शहीद हुए।

१८४९ ई. में सिक्खों ने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम की अंतिम लड़ाई लड़ी। इसके बाद संपूर्ण भारत अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

१८६८ ई में बाबा राम सिंघ ने शांतमयी आंदोलन शुरू किया। १८७१ ई में गऊ-हत्या के विरुद्ध आंदोलन में जगह-जगह कसाइयों का वध कर दिया गया। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के प्रवेश-द्वार के साथ एक बूचड़खाना खोला गया था, जिससे श्री दरबार साहिब और अमृत सरोवर की पवित्रता भंग होती थी। रातो-रात कसाइयों का वध कर दिया गया और बूचड़खाना गिराकर जगह समतल कर दी गई।

सिक्ख सैनिकों ने मिलेट्री में भी अंग्रेज शासकों के विरुद्ध आवाज़ उठाने का यत्न किया। १८७२ ई में सिक्खों ने असलाखाने पर कब्ज़ा करने का फैसला लिया। इस यत्न में कोतवाल और सात फौजी मारे गए। लुधियाना के ज़िला मजिस्ट्रेट ने फौज और रियासतों की सहायता से इस दल को गिरफ्तार कर लिया।

१९०७ ई. में स. अजीत सिंघ (शहीद स. भगत सिंघ के चाचा) ने 'पगड़ी संभाल जट्टा' का नारा लगाकर अंग्रेजी सरकार को खुला चैलेंज दिया। इसी वर्ष कनाडा में 'बब्बर अकाली लहर' और केलीफोर्निया में 'गदर पार्टी' संगठन शुरू किए गए।

१९१३ ई में स. सोहन सिंघ भकना ने 'गदर पार्टी' की नींव रखी। १९१४ ई में बाबा गुरदित्त सिंघ ने ३७६ यात्रियों (जिनमें ३६५ सिक्ख थे) को कामागाटामारू जहाज द्वारा भारत पंहुचाया। भारत आते ही अंग्रेजी शासन ने २९ सितंबर, १९१४ ई को पचास सिक्खों को बजबज घाट पर शहीद कर दिया और शेष को बंदी बना लिया गया। इस घटना की ख़बर जब विदेशों में पंहुची तो हर जगह गुस्सा भड़क उठा और मनीला, शिंघाई, जापान, अमेरिका आदि में बसे हुए १७० सिक्खों का एक जत्था २४ अक्तूबर, १९४१ ई को भारत आया। उन सबको गिरफ्तार करके मिंटगुमरी जेल में बंद कर दिया गया।

१९१५-१६ ई में स. करतार सिंघ सराभा

ने भारतीय फौजियों के दिलों में स्वतंत्रता के जज़्बे को प्रोत्साहित करने का प्रोग्राम बनाया। सफल न होने के कारण १४ नवंबर, १९१७ ई को उन्हें १२ सिक्ख साथियों साहित फांसी के तख़्ते पर लटका दिया गया। अन्य १५ साथियों को अदालत ने बाद में मौत की सज़ा दी।

अप्रैल, १९१९ ई में वैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर में जलियांवाला बाग का खूनी साका (कांड) हुआ। इस साके में शहीद होने वाले १३०० देश-भक्तों में से ७६९ केवल सिक्ख शूरवीर थे।

१९२२ ई में बब्बर अकाली लहर का गठन करके बब्बरों ने अपनी गतिविधियों से अंग्रेजी साम्राज्य की पकड़ को काफी नुकसान पहुंचाया।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर वास्तव में देश की स्वतंत्रता के आंदोलन की ही शुरूआत थी। इस बात को देश के बड़े नेताओं ने भी स्वीकार किया है। इस संबंध में उनके विचार इस प्रकार है:-

"मैं प्रणाम करता हूं अकालियों को, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए आंदोलन आरंभ किया है और आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं।"

(पंडित मोती लाल नेहरू)

"गुरु का बाग में से देश की स्वतंत्रता की लहर उठी है और अब इसी ने ही देश को स्वतंत्र कराना है।" *(पंडित मदन मोहन मालवीय)*

"आज़ादी हर एक का हक है। हम कुपुत्र हैं पर अकाली सुपुत्र हैं, जो कि अपने इस हक के लिए लड़ रहे हैं।" *(लाला लाजपत राय)*

"सिक्ख भाइयों ने हमें देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति का नुस्खा सिखा दिया है। अब दुनिया की कोई भी ताकत हमें ज्यादा देर तक गुलाम नहीं रख सकती।" *(डॉक्टर सैफुद्दीन किचलू)*

"सिक्ख कौम का जन्म देश की स्वतंत्रता के लिए हुआ है। इन भाइयों के होते देश अब ज्यादा देर गुलाम नहीं रह सकता। यह मेरा पक्का विश्वास बन गया है।"

(दादा भाई नारो जी)

गुरु का बाग के मोर्चे के बाद सी. एफ. एंड्रयूज़ लिखता है--- "इस धरती पर नई वीरता, जिसका जन्म ही कष्ट भोगने की शक्ति से हुआ है, उदय हुई है। श्री गुरु नानक देव जी के सिक्खों ने दुनिया को अहिंसक लड़ाई का एक नया सबक सिखाया है।"

पंडित मदन मोहन मालवीय तो सिक्खों की कथनी और करनी से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने हिंदुओं को इस बात के लिए प्रेरित किया कि अगर वे विदेशी हकूमत की गुलामी से मुक्त होना चाहते हैं तो फिर हर हिंदू घर में कम से कम एक पुत्र अवश्य सिक्ख बनना चाहिए।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन के पहले शहीद सरदार हजारा सिंघ की वीर-गाथा सुनकर महात्मा गांधी ने गुरुद्वारा आज़ाद हो जाने पर अकाली दल को तार भेजी----"मुझे देश आज़ाद करवाने का नुस्खा मिल गया है। गुरुद्वारा आज़ाद हो गया, मुबारक हो! अब देश भी आपने आज़ाद करवाना है।"

(एम. के. गांधी)

डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, "गुरुद्वारा मूवमेंट में पांच सौ सिक्ख शहीद हुए, ३० हज़ार सिक्ख जेलों में गए और दस लाख रुपए सिक्खों ने जुर्माना भरा।"

महात्मा गांधी के १९३० ई. के असहयोग आंदोलन में भी बलिदान देने में सिक्ख कौम किसी से पीछे नहीं रही। १९३४ ई. का सर्वहिंद कांग्रेस सेशन बंबई में होना था, पर

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

संत-साहित्य : मानवाधिकारों का जीवंत दस्तावेज़

*-डॉ. मधु बाला**

संत-साहित्य से अभिप्राय है-- भक्ति-काल की निर्गुण धारा के अंतर्गत समाहित संत-साहित्य। महान पुरुषों पर अलक्ष्य शक्तिपुंज का प्रभाव सामान्य मनुष्य की अपेक्षा व्यापक रूप से पड़ता है। संत-बाणीकारों ने अपने विवेक एवं अनुभव के द्वारा संसार की नि:सारता का, मानव-अधिकारों का, मानव-दर्शन का नीर-क्षीर विवेक बुद्धि से परीक्षण किया, उसे अपनी बाणी का विषय बनाया तथा लोक में ख्याति प्राप्त की। संत किसी मानव से नहीं अपितु मानवता से सम्बंधित होते हैं।

भारतीय साहित्य में निर्गुण संप्रदाय के भक्त कबीर जी आदि बाणीकारों का स्थान सर्वोपरि है। अत: जिस संत समाज को सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है उसकी रचनाओं की महत्ता स्वयंसिद्ध है। संत-साहित्य का मुख्य उद्देश्य ही मानव-चेतना का प्रसार रहा है। इसमें स्वयं को पहचानने की शक्ति है, क्योंकि यदि मनुष्य स्वयं के प्रति सजग है तभी वह अपने अधिकारों का सदुपयोग कर सकता है। अधिकार का केवल शाब्दिक ज्ञान निरर्थक है। अधिकारों से परिचित होकर उसके सकारात्मक पहलुओं पर विचार करते हुए जीवन में उनका उपयोग करने में ही मानवाधिकारों की सार्थकता है।

संत-बाणी में वर्णित मानवाधिकारों को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-- व्यक्तिगत एवं सामाजिक। व्यक्तिगत अधिकारों में उन अधिकारों की गणना की जाती है जो निजी हों, स्वयं तक ही सीमित हों। सामाजिक अधिकारों में उन अधिकारों को रखा जा सकता है जिससे सामाजिक व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे, जिसमें 'निज' की अपेक्षा 'पर' का हित समाहित हो। वर्तमानकालिक अधिकारों में केवल 'अधिकार' पर बल दिया जाता है, जबकि संत-बाणी में मानवाधिकार से पूर्व मानव-कर्त्तव्य का भी उल्लेख किया गया है। कर्त्तव्य-पालन की उपेक्षा करते हुए अधिकारों की कामना करना ठीक वैसा ही है जैसा कि बिना आधार की इमारत का ढांचा तैयार करना।

वास्तविकता तो यह है कि कर्त्तव्य-रूपी बीज का वपन स्वयं ही मनुष्य को फल रूपी अधिकार का भाजन बनाता है। इसमें संदेह नहीं है। भक्तिकालीन संत-बाणी में वर्णित मानवाधिकारों का मूल्य २१वीं सदी में भी अपनी गरिमा को बनाए हुए है। मेरा यह विचार संदेहातीत है कि जब तक पृथ्वी पर मानव जाति रहेगी तब तक संत-बाणी में वर्णित तथ्य उस पर अवश्य घटित होंगे; अनेकानेक विषयों का प्रतिपादन करने वाले अमूल्य संत-साहित्य में समाहित मानवाधिकार शाश्वत रहेगा।

अधिकार-प्राप्ति की चेष्टाओं में भ्रमित मानव मनुष्यत्व के अधिकार का निरंतर त्याग करता जा रहा है। मनुष्य का वास्तविक अधिकार तो मनुष्य के पास है। सम्पूर्ण जगत में सब जीवों में मानव महान है और यह महानता उसके अंतर में विद्यमान है। इस विषय में सोचने का संभवत: उसके पास समय

**आई-१०९, गली नं. ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन ९९१४१-९०७२४*

ही नहीं है। आज जिन अधिकारों को पाने के लिए मनुष्य 'अधिकार-अधिकार' चिल्ला रहा है, उनकी न भूत-काल में सत्ता थी, न वर्तमान में है और न भविष्य में होगी। ये अधिकार भौतिक पदार्थों के समान हैं, जिनका निर्माण होता है, विकास होता है और ह्रास होता है। नश्वर दैहिक प्रक्रियाओं के अतिरिक्त इनका कोई महत्त्व नहीं है। आध्यात्मिक दृष्टि से सभी संतों-भक्तों ने शरीर को धर्म का साधन अवश्य माना है परंतु यह नश्वर है, अत: शरीर की अपेक्षा प्राण को सर्वोत्तम माना है। संत-साहित्य इस बात से मानव को सचेत करता रहा है कि हे मनुष्य! आत्मिक अधिकारों को प्राप्त करने की सामर्थ्य उत्पन्न कर, जिससे तू जन्म-जन्मांतरों के लिए कल्याण का अधिकारी बन जाएगा। यह शरीर तो भवसागर की लहरों के समान है जो बनती और मिटती रहती हैं। शरीर और प्राण की सत्ता को पृथकत: जानने का प्रयास कर। तू तो स्वयं प्रकाशमान परम शक्ति की एक किरन है। तेरा वास्तविक स्वरूप, अधिकार तेरी आत्मा है। तूने स्वयं ही शरीर के साथ इसका सामंजस्य स्थापित करके अपनी दुर्दशा कर ली है। चौरासी लाख योनियों में से मनुष्य को ही यह सौभाग्य प्राप्त है जो उस आलौकिक अधिकार को प्राप्त कर सकता है और जिसके प्राप्त कर लेने पर कोई अन्य कामना शेष नहीं रहती।

संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसने कठिनाइयों का सामना न किया हो। जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है। वर्तमान युग में मानव ने सुखमय जीवन-यापन करने के लिए अधिकारों की एक लंबी सूची बना ली है और कर्त्तव्य निष्ठा को तिलांजलि दे दी है। जो व्यक्ति फल वाला वृक्षारोपण करता है वह निर्विवाद उसके फल को ग्रहण करने का स्वयं अधिकारी बन जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि कर्त्तव्य का पालन प्रत्येक मनुष्य करेगा तो अधिकार स्वयं उसके पास चले आएंगे। वे अधिकार, जो शाश्वत हैं, प्रत्येक मानव का जन्म-सिद्ध अधिकार हैं, उसके भीतर ही विद्यमान हैं, केवल उन पर पड़ा आवरण दूर करना है। समाज द्वारा प्रदत्त अधिकार मनुष्य को न अमरत्व प्रदान कर सकते हैं और न ही मनुष्यत्व। प्रभु-कृपा से जिस दिन मनुष्य प्रभु-प्रदत्त प्रेरणा का आभास कर लेगा, अपनी शक्ति को पहचान जाएगा, उसके नियमों का अनुसरण करेगा उस दिन सब अधिकार मनुष्य के कदमों में होंगे।

संत-साहित्य में मनुष्यत्व का अधिकारी होने के तीन साधन बताएं हैं-- आत्म-कृपा, भगवद-कृपा और गुरु-कृपा।

आत्म-कृपा में जीव स्वयं साधना करके परमात्मा को प्राप्त करता है। भगवद-कृपा में साधनारत जीव पर जब प्रभु स्वयं कृपालु हो जाएं तो उसकी उपासना स्वार्थवृत्ति से रहित होती है। मन की निर्मलता के वशीभूत होकर परमात्मा स्वयं उसको स्वीकार कर लेते हैं। गुरु-कृपा में जीव प्रभु-दर्शन हेतु किसी संत, भक्त, महात्मा आदि का आश्रय लेकर, ज्ञान प्राप्त करके उस अद्वितीय शक्ति को जान लेता है। वस्तुत: इन तीनों कृपा से ही मनुष्यत्व का अधिकार प्राप्त होता है, जिसके लिए संतोष एवं धैर्य रखना बहुत आवश्यक है। असंतुष्टि ही मनुष्य की भटकना की मुख्य कारण है। भक्त कबीर जी का एक लोक-प्रचलित दोहा है :

गोधन, गजधन बाजिधन और रत्न धान खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।

भगवान का आश्रय सभी भावों में निहित रहता है। भले वह आत्म-भाव हो, भगवद-भाव हो अथवा सतिगुरु-भाव हो, साधना तो मानव

को स्वयं ही करनी पड़ती है। मनुष्यत्व की सिद्धि के लिए भाव अनिवार्य है, इसीलिए मनुष्य को भाव-प्रधान जीव कहा जाता है। संत-साहित्य में संत-भक्त बाणीकारों व कवियों ने मनुष्य के उन अधिकारों का उल्लेख किया है जिनको प्राप्त करके मनुष्य को मानसिक बल मिलता है; भय, अशांति, असुरक्षा के भाव मिट जाते हैं, क्योंकि भय होता है वस्तु की अप्राप्ति का अथवा उसके छिन जाने का। जब दूसरों की वस्तु छीनकर हासिल की गई हो तो अशांति होती है और असुरक्षा की भावना पैदा होती है।

जहां बांटने (वंड छकने) का भाव हो, 'निज' की अपेक्षा 'पर' के लिए कुछ करने का भाव हो, वहां भय, अशांति और असुरक्षा के लिए स्थान ही कहां है?

मनुष्य के कुछ जन्म-सिद्ध अधिकार होते हैं जिनकी प्राप्ति किए बिना अधिकारों का कोई अभिप्राय नहीं है। शांति का इच्छुक मानव स्वयं को सुरक्षित करने के लिए जो दुर्ग निर्माण कर रहा है उनसे वास्तविक शांति मिलना असंभव है। शांति प्राप्त करने के लिए दूसरों के मन को शांत करना, निर्भय होने के लिए दूसरों को भय रहित करना, दूसरों के मन में स्वयं के प्रति विश्वास उत्पन्न करना अनिवार्य है। बाणी ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं तथा स्वयं प्रभावित होते भी हैं।

अधिकार की मिथ्या लालसा ने मनुष्य-मन के उस हिरण्यमयी पात्र को आच्छादित कर लिया है जो अमृत-तत्व से परिपूर्ण है। सुख सांसारिक वस्तु की प्राप्ति में नहीं त्याग में है। केवल संग्रह करना तब तक सुखदायी नहीं है जब तक त्याग की भावना न हो। स्वतंत्रता एवं विकास में अंतर है। स्वतंत्रता में स्वच्छंदता का मिश्रण भी हो सकता है, जबकि विकास की प्रक्रिया नियमित एवं नियंत्रित गति से प्रवाहित होती है, जैसे वर्षा के दिनों में नदी का जल किनारों का स्पर्श करता हुआ कभी-कभी किनारा लांघ भी जाता है तथा सर्दी की ऋतु में जल अपनी मर्यादित अवस्था में धीमी एवं शांत चाल से बहता है। सांसारिक लोगों से न ही उदर-पूर्ति होती है और न मन ही भरता है। भोग में रोग की संभावना बनी रहती है। जीवन की समाप्ति पर भी वासनाओं की समाप्ति नहीं होती।

आज साहित्य का पठन-पाठन दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। आज हर व्यक्ति वह अध्ययन-पद्धति अपनाना चाहता है जो उसकी आजीविका का साधन बने। इस बात से मैं भी पूर्णत: सहमत हूं कि रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की प्राथमिक जरूरतें हैं, परंतु आजीविका-पद्धति के अतिरिक्त मनुष्य की अपनी भी सत्ता है। उसी मनुष्यत्व को बनाए रखने के लिए हमें धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि उनमें एक अच्छा इंसान बनने के उपदेश दिए गए हैं। अजीविका हेतु ग्रहण की गई शिक्षा और ज्ञान हेतु ग्रहण सदुपदेश भिन्न-भिन्न महत्त्व रखते हैं। आज का युग मशीन का युग है, अत: मानव भी एक मशीन की भांति भागदौड़ में लगा है। मशीन का कोई सिद्धांत नहीं है, मशीन का कोई दर्शन नहीं है, उसमें भाव नहीं है, संवेदना नहीं है। जब व्यक्ति कार्य आरंभ करने के लिए मशीन का बटन दबाता है तो वह अपना कार्य आरंभ कर देती है बिना किसी प्रश्न के। व्यक्ति के मन में क्या है? वह दुखी है या सुखी, बीमार है या स्वस्थ, यह सब जानने की उसमें सामर्थ्य नहीं है। यह गुण भगवान ने केवल संतों-महात्माओं को दिया है जो पर-पीड़ा का अनुभव करते हैं, चेहरे की मुद्रा देखकर मन में उठने वाले भावों को जान

लेते हैं। उन्हीं संतों-भक्तों की बाणी को, उनके उपदेशों को आज पुरातन-पंथी कहकर या पुराने विचार कहकर त्याग दिया जाता है। यह प्रश्न विचारणीय है कि उनके विचार प्राचीन हैं अथवा आज के मानव ने ही वास्तविकता को स्वीकार न करने की ठान ली है। यह सत्य है कि मानव ने बहुत विकास किया है परंतु केवल भौतिक दृष्टि से, मानवीय मूल्यों की दृष्टि से आज के मनुष्य का जो ह्रास हुआ है वह आज टी. वी., अख़बार और हमारे चारों तरफ घटने वाली नित्यप्रति की घटनाओं से सबके समक्ष है, कहने की आवश्यकता नहीं है। यदि संत-साहित्य में स्वयं को आदर्शवादी बनने की, संयमी बनने की तथा आत्म-चिंतन पर बल देने की पद्धतियों का अनुकरण करने का उपदेश दिया गया है तो इसमें अनुचित क्या है? आज यदि मनुष्य भोगों के पीछे भाग रहा है तो अपने अज्ञान के कारण। धन-सम्पत्ति जो पुरखों से प्राप्त हो, भाग्य से प्राप्त हो अथवा मेहनत से प्राप्त हो, उसमें बुराई नहीं है। बुराई वहां है जहां भ्रष्टाचार, दुराचार और धोखे से सम्पत्ति अर्जित की जाती है। भोग असीमित हैं तथा उनकी पूर्ति हेतु कामनाएं भी असीमित हैं। यदि मनुष्य आजीवन भी उनकी पूर्ति में लगा रहे तो भी वह सभी कामनाओं को पूरा नहीं कर सकता।

भोग नहीं भोगे जाते हम ही भुक्त हो जाते हैं; काल नहीं बीतता हम ही बीत जाते हैं; तृष्णाएं नहीं जीर्ण होतीं हम ही जीर्ण हो जाते हैं। जिन भोगों को भोगने के लिए हम संघर्ष करते हैं अंततः उन भोगों की सत्ता ज्यों की त्यों बनी रहती है, जबकि मनुष्य की शक्ति क्षीण हो जाती है। भोग-विलास वैसे ही हैं, भोगी मनुष्य समाप्त हो रहा है।

जैसे चिकित्सक रोगी के इलाज के लिए दवा के साथ-साथ परहेज़ भी बताता है उसी प्रकार मेरा विचार है कि आजीविका शिक्षा के साथ-साथ हमें नैतिक शिक्षा एवं मानवीय शिक्षा को भी ग्रहण करना चाहिए ताकि धनोपार्जन के साथ-साथ हम अपने अमूल्य जीवन को भी बचा सकें। जीवन रहेगा तभी तो अधिकारों का उपभोग कर सकेंगे। अधिकार मनुष्य के किए बनाए जाते हैं, मनुष्य अधिकारों के लिए नहीं बना है। विकास के लिए आधार की अनिवार्यता निश्चित है। शरीर को धर्म का साधन मानते हुए कहा गया है कि भले ही शरीर की नश्वरता का संत-साहित्य में पग-पग पर वर्णन मिलता है परंतु शरीर के बिना धर्म-साधना नहीं हो सकती। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस चतुर्वर्ग की प्राप्ति हेतु शरीर का निरोगी होना अति आवश्यक है। अधिकारों का उपभोग बिना स्वस्थ मानव जाति के कदापि संभव नहीं है। शरीर और अधिकार दोनों पांव हैं मानव के। केवल अधिकार की कामना उसे पंगु बना देगी। अतः एक सुदृढ़, संयमी, चेतन मानव बनने के लिए हमें संत-साहित्य का न केवल पठन-पाठन करना चाहिए अपितु जिन नियमों को जीवन में अपना सकें अवश्य ही अपनाना चाहिए।

ज्ञान और शिक्षा में अंतर रहता है। शिक्षा का अर्थ है कि हमने जाना है और ज्ञान का अर्थ है कि हमने उस शिक्षा को अपनाया है। शिक्षा की अपेक्षा ज्ञान की अधिक महत्ता रहती है। यहां एक शोध-कथा का उल्लेख करना चाहूंगी।

किसी शेख़ ने अपने पास एक गुणी-ज्ञानी व्यक्ति को तीमारदारी के लिए रखा था, जिससे वह कभी तर्क-वितर्क करके अपने ज्ञान में वृद्धि भी करता रहता था। एक बार शेख़ ने उससे कहा कि बकरे के शरीर का सर्वोत्तम अंग काटकर लाओ तो वह जिह्वा लेकर आया। अब

उसने सबसे निकृष्ट अंग काट कर लाने को कहा तो वह पुनः दूसरे बकरे की जिह्वा ले आया। शेख़ को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "एक ही अंग सर्वोत्तम और सर्वथा निकृष्ट कैसे?" तब उसने कहा, "शेख़ साहब! हमारे शरीर में जिह्वा ही एक ऐसा अंग है जो हमें सम्मान दिलाती है और अपमान भी। शेख़ निरुत्तर हो गया। इसी जिह्वा-महिमा को रहीम ने भी गाया है :

रहिमन जिहवा बावरी, कहि गई सगर-पतार।
आप तो कहि भीतर गई, जूती खात कपार।

जिह्वा से निकली वाणी का सुप्रभाव अथवा कुप्रभाव सारे शरीर को ही सहन करना पड़ता है। यह उपदेश हमें मशीनी युग नहीं दे सकता। आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति सिध पुरुषों द्वारा ही संभव है। यदि मानव में चिंतन-शक्ति होगी उसका विचार-तत्व प्रबल होगा, तभी मनुष्य किसी एक ही स्थिति को विभिन्न दृष्टिकोणों से परखने की सामर्थ्य रख सकता है। वाणी की कोमलता के साथ-साथ मनुष्य को जिह्वा की भांति कोमल आचरण भी ग्रहण करना सीखना चाहिए। मनुष्य को ज़रा-सी विपरीत परिस्थितियां विचलित कर देती हैं, जबकि जिह्वा जितनी चतुराई से बत्तीस दांतों के बीच हर पल सुरक्षित रहती है इतना सुरक्षित आज का मनुष्य अपनों के बीच भी नहीं है। जिह्वा शरीर का एक अंग है, स्वाद को परखने वाली है। यह शिक्षा का विषय है। इसके अतिरिक्त यह मानव के जीवन में किस कद्र परिस्थितियों की उथला-पुथली कर सकती है, हमें इसके आचरण से क्या बोध होता है, यह ज्ञान का विषय है।

अतः आजीविका-अर्जन शरीर की पुष्टि करता है और ज्ञान मन की संतुष्टि। यही कारण है कि आज बहुत-से धनी व्यक्ति असंतुष्ट हैं, जबकि उनके पास दुनिया की हर सुख-सुविधा है। वे यह सोचने में सक्षम ही नहीं हैं कि इसका कारण क्या है। अनेक उदाहरण हमारे समक्ष ऐसे भी हैं कि जब उन्हें अंतः प्रेरणा प्राप्त होती है, ज्ञान जागृत होता है, तब वे सब कुछ का त्याग कर लेते हैं, वैराग्य को प्राप्त कर लेते हैं। सुख धन-अर्जन में नहीं है, परोपकार में है; स्वार्थ में नहीं, परमार्थ में है। *"मन के हारे हार है मन के जीते जीत।"* इस उक्ति में जरा भी संशय नहीं है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वो स्वयं को जाने एवं स्वयं को पहचानने का प्रयत्न करे। संसार की सम्मपत्ति एक भी मनुष्य को संतुष्ट करने में असमर्थ है। पृथ्वी पर विचरण करने वाले जीवों में मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई जीव ऐसा नहीं है जो जन्म लेते ही हंसता है या रोता है। भौतिकता के प्रतिमोह ने पदार्थों का मूल्य बढ़ाया है तथा मानव का मूल्य कम किया है। यदि मनुष्य वास्तविक अधिकार प्राप्त कर लेता है तो अन्य सभी अधिकार तुच्छ हो जाते हैं।

निष्कर्ष रूप से संत-साहित्य में जिन मानव अधिकारों का वर्णन मिलता है वे शाश्वत हैं, अमर हैं तथा अनुसरणीय हैं :-

सुख :- त्याग में है, संग्रह में नहीं।
शांति :- दूसरों के सुख से प्राप्त होती है।
सुरक्षा :- दूसरों के भयरहित होने पर मिलती है।
दृष्टि :- निज-आचरण पर दृष्टि डालें, पर-आचरण पर नहीं।
त्याग :- पर-दोष-दर्शन का त्याग करें एवं निज-दोष-दर्शन का अभ्यास करें।
निराभिमान :- निज गुणों के प्रति हो।
करने हेतु :- केवल कर्त्तव्य-पालन।
अधिकार :- क्षोभ एवं अशांति के कारण हैं।
शासन करो :- स्वयं पर।
कामनाएं :- मन की मैल हैं, उनका त्याग करो।

करने हेतु अनिवार्य :- आत्मसंयम का अभ्यास, मन की निष्क्रिय अवस्था।
क्या बनें :- एक विचारवान मनुष्य।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संत-साहित्य में वर्णित मानवाधिकार मानव के वास्तविक अधिकार हैं तथा वर्तमान-कालीन मानवाधिकार मानव के लिए भौतिकता के प्रति क्षणिक मोह का अधिकार हैं। यदि किंचित् दूरदर्शितापूर्वक देखा जाए तो जिन अधिकारों की पूर्ति आज मनुष्य अपने लिए कर रहा है यह पूर्णतः स्वार्थवृत्ति है। इससे मनुष्य का वर्तमान भले ही संवर जाए परंतु मनुष्यत्व के लिए यह कदापि उचित नहीं है, क्योंकि भवन-निर्माण हेतु नींव का होना आवश्यक है। यदि मानव अपने जीवन-मूल्यों का सम्मान नहीं करेगा, मानवता की साक्षात् मूर्ति बनकर मनुष्यत्व को प्राप्त नहीं करेगा, तब इन सामाजिक अधिकारों की सत्ता नहीं रह पाएगी। जब धरती पर मनुष्य-जीवन रहेगा तभी तो वह अधिकारों का पालन करेगा। इसके लिए सबसे पहले इस बात की अनिवार्यता है कि मनुष्य पहले स्वयं की सत्ता की रक्षा करे, तभी प्राप्त अधिकारों का लाभ उठा सकेगा। संकीर्ण एवं दूषित बुद्धि से सुसभ्य एवं सुदृढ़ समाज की स्थापना कदापि संभव नहीं है।

इस प्रकार निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि संत-साहित्य मानवधिकारों का जीवंत दस्तावेज़ है।

स्वतंत्रता संग्राम में सिक्खों का योगदान . . . *(पृष्ठ ४० का शेष)*

अंग्रेज सरकार ने भाड़े के गुंडों द्वारा तंबू न लगने दिए। मास्टर तारा सिंघ की जत्थेदारी में एक सौ सिर कटने से न डरने वाले अकाली शूरवीरों का जत्था वहां पहुंचा और उन्होंने गुंडों को ललकारा। इन शूरवीरों की सिरी साहिब (कृपाण) के पहरे में पंडाल बना और सिरी साहिब की छाया में ही उस वक्त सेशन हो सका अन्यथा साम्राज्य सरकार ने तो उस समय सेशन को फेल करने के मनसूबे बना रखे थे।

देश की स्वाधीनता के लिए स. किशन सिंघ गड़गज्ज, भाई ईशर सिंघ, मा. मोता सिंघ, स. खड़क सिंघ, स. महिताब सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, स. तेजा सिंघ अकरपुरी, भाई रणधीर सिंघ, मास्टर तारा सिंघ, झबालिए भाई आदि सैकड़ों अकाली सिंघों की गतिविधियां उल्लेखनीय हैं। स. भगत सिंघ हंसते-हंसते फांसी के तख़्ते पर चढ़ गया।

जनरल स. मोहन सिंघ ने जापान में आज़ाद हिंद फौज को संगठित किया। किसी कारणवश जब जनरल को जापानियों ने गिरफ्तार कर लिया तो मास्टर तारा सिंघ को मिले उनके पत्र के आधार पर मास्टर जी ने श्री सुभाष चंद्र बोस को यहां से निकल जाने और जनरल के पास पहुंचने की साजिश बनाई। श्री सुभाष चंद्र बोस को पेशावर पहुंचाने वाले सारे सिक्ख ही थे। आज़ाद हिंद फौज की कुल संख्या ४२००० में से २८,००० केवल सिक्ख सैनिक थे।

सन् १९४६ में बंबई में नेवी के जवानों के विद्रोह में भी सिक्ख सैनिक किसी अन्य से कम नहीं थे।

लंबे संघर्ष के बाद (१५ अगस्त, १९४७ ई को) देश आज़ाद हुआ। इसमें सिक्खों ने अपनी आबादी के अनुपात से कहीं ज्यादा योगदान दिया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से सम्बंधित ऐतिहासिक स्थान

*-बीबी मनमोहन कौर**

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के घर माता गंगा जी की कोख से हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी की इच्छा के अनुसार आप जी ने बाबा बुड्ढा जी से गुरबाणी व इतिहास, भाई जेठा जी से युद्ध-कला, भाई परागा जी से शस्त्र-विद्या और भाई सहिगल जी से घुड़सवारी की शिक्षा हासिल कर धर्म व राजनीति दोनों क्षेत्रों में निपुणता हासिल की। श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के उपरांत देश के बदले हुए हलातों को देखते हुए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने शस्त्र धारण किए। आप जी को लगभग १० वर्ष, १० महीने की उम्र में २८ ज्येष्ठ, १६६३ बिक्रमी को गुरगद्दी की बख़्शिश हुई। गुरगद्दी पर बैठने के उपरांत आप जी ने दो कृपाणें मीरी एवं पीरी की पहनीं।

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी की तरह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने दूर-दराज के इलाकों में प्रचार-यात्राएं कीं। इन यात्राओं के दौरान ही महाराष्ट्र के प्रसिद्ध फकीर रामदास ने गुरु जी को शस्त्र पहने देखकर संदेह करते हुए जब तर्क किया कि शस्त्र पहनकर कोई संत कैसे हो सकता है तो गुरु जी ने "फकीर जी! बातन फकीरी, ज़ाहिर अमीरी, शस्त्र गरीब की रक्षा और जरवाणे की भक्षा के लिए। गुरु बाबा नानक ने संसार तो नहीं त्यागा था, माया त्यागी थी" वचन कर उसका संदेह दूर किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने जीवन-काल में चार बड़ी जंगें की, जिनमें पहली जंग श्री अमृतसर, दूसरी श्री हरिगोबिंदपुर, तीसरी नथाणा और चौथी जंग करतारपुर में लड़ी। आप जी अपने जीवन काल के दौरान जिस-जिस स्थान पर गए संगत ने आप जी की याद को सदैवकालीन बनाए रखने के लिए वहीं-वहीं यादगारी स्थानों की स्थापना कर दी। आएं! इन स्थानों के बारे में जानें :--

श्री अमृतसर

१. गुरुद्वारा साहिब गुरू की वडाली : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म २१ आषाढ़ सं. १६५२, तद्नुसार १९ जून, १५९५ ई को गांव वडाली, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। गुरु जी के जन्म-स्थान पर एक शानदार गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है, जिसको गुरुद्वारा साहिब गुरू की वडाली कहा जाता है।

२. गुरुद्वारा दमदमा साहिब, गुरू की वडाली : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की याद में ऐतिहासिक गुरुद्वारा दमदमा साहिब श्री अमृतसर के गांव गुरू की वडाली के नज़दीक सुशोभित है। यहां गुरु जी ने सूअर का शिकार करने के बाद अपना कमरकस्सा खोलकर कुछ समय आराम किया।

३. श्री अकाल तख़्त साहिब : श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर सिक्खों का पहला तख़्त है जिसकी नींव श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने रखी थी। उन्होंने इसके निर्माण के लिए भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी को नियुक्त किया। यहां से ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपना

*** #८३६३, गली नं. २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

पहला हुकमनामा जारी किया था। आज भी समय-समय पर सिक्ख पंथ को अगुआई देने के लिए यहां से हुकमनामे जारी होते हैं।

४. गुरुद्वारा कौलसर साहिब : गुरुद्वारा कौलसर साहिब गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब के साथ ही सुशोभित है। ऐतिसाहिक स्रोतों के अनुसार यह स्थान लाहौर के शाही काजी रुस्तम खां की पुत्री बीबी कौलां की रिहायशगाह थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने यहां सरोवर का निर्माण करवाया तथा इस सरोवर का नाम बीबी कौलां जी के नाम पर कौलसर रखा।

५. गुरुद्वारा बिबेकसर साहिब : गुरुद्वारा बिबेकसर साहिब गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर के बिल्कुल सामने सुशोभित है। यहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्ख संगत की सुविधा के लिए बहुत बड़ा सरोवर तैयार करवाया। इस स्थान पर सिक्ख जंगबाज योद्धा रोज़ाना शस्त्र-विद्या का अभ्यास करते थे तथा गुरु जी सिक्खों की जंगी मशकें देखने के बाद संगत के साथ गुरमति विचारें करते थे। भाई साहिब भाई वीर सिंघ के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब इस एकांत स्थान पर बैठकर सिक्खों को विवेक का उपदेश दिया करते थे, इसलिए इस सरोवर का नाम बिबेकसर पड़ गया। गुरुद्वारा साहिब में करीर का वह यादगारी वृक्ष आज भी मौजूद है जिससे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने घोड़ा बांधा करते थे। गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी करती आ रही है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का गुरुतागद्दी दिवस इस स्थान पर बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

६. गुरुद्वारा साहिब किला लोहगढ़ : गुरुद्वारा साहिब किला लोहगढ़ सिक्ख धर्म का पहला किला है जो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अमृतसर की सुरक्षा के लिए बनाया था। गुरु साहिब ने अपने जीवन-काल में मुगलों से कुल चार लड़ाइयां लड़ीं, जिनमें से पहली लड़ाई यहां ही लड़ी गयी, जिसमें गुरु साहिब की जीत हुई। यहां गुरु साहिब ने जिस बेरी के वृक्ष में बारूद भरकर उसे तोप की तरह चलाया था वह अभी तक इस स्थान पर सुरक्षित रखी गयी है। यहां गुरु साहिब की यादगार दो श्री साहिब तथा एक पुरातन कुआं भी मौजूद है। आजकल यह गुरुद्वारा साहिब घनी आबादी में घिरा हुआ है।

७. गुरुद्वारा गुरू के महिल : गुरुद्वारा गुरू के महिल, श्री अमृतसर में उस स्थान पर सुशोभित है जहां गुरु साहिबान अपनी रिहायश रखा करते थे। गुरुद्वारा 'गुरू के महिल' चौक पासीआं में है जो श्री अकाल तख़्त साहिब के पास 'गुरु बाज़ार' से गुज़रकर आता है। असल में यह एक छोटी-सी घास की छप्परी श्री गुरु रामदास जी ने १५७३ ई. में खुद बनाई थी जिसको बाद में श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बड़ी तथा खूबसूरत इमारत में तबदील कर दिया। इसी इमारत को आजकल 'गुरू के महिल' के नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रकाश हुआ था, इसलिए उनका प्रकाश दिवस इस स्थान पर विशेष रूप में तथा वार्षिक जोड़मेला के रूप में मनाया जाता है। इस गुरुद्वारा साहिब को आजकल श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जन्म-स्थान के रूप में भी माना जाता है। इसी ऐतिहासिक स्थान पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का विवाह हुआ था तथा उनके पांच सुपुत्र तथा एक सुपुत्री का जन्म भी इसी स्थान पर हुआ था। इस स्थान की नौ-मंज़िला इमारत का निर्माण कार-सेवा द्वारा करवाया गया है तथा गुरुद्वारा साहिब को सुंदर बनाने की सेवा अभी जारी है। गुरुद्वारा साहिब के गुंबद

पर सोने का कलश दूर से ही नज़र आता है।
८. गुरुद्वारा साहिब चुरस्ती अटारी : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब चुरस्ती अटारी गुरु बाज़ार के आखिर पर सुशोभित है। ग्वालियर के किले से रिहा होने के उपरांत जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब श्री अमृतसर पहुंचे तो उन्होंने इस स्थान पर आराम किया था। यहां गुरु साहिब संगत दर्शन देने के लिए एक थड़े पर बैठते थे। चारों तरफ बाज़ारों के रास्ते होने के कारण इसका नाम चुरस्ती अटारी प्रसिद्ध हो गया।
९. गुरुद्वारा पिप्पली साहिब : गुरुद्वारा पिप्पली साहिब रेलवे स्टेशन, श्री अमृतसर से अटारी सरहद की तरफ जाती सड़क पर पुतलीघर चौंक से आबादी इसलामाबाद वाले बाज़ार के मध्य श्री अमृतसर के मशहूर खालसा कॉलेज के पास सुशोभित है। यहां एक कुआं भी है। यहां पहले पीपल के बहुत वृक्ष होते थे तथा एक बड़ा वृक्ष आज भी मौजूद है जिस कारण गुरुद्वारा साहिब का नाम पिप्पली साहिब पड़ गया। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार मुगलों से अपनी प्रथम लड़ाई के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने यहां अपने पावन चरण डाले थे।
१०. गुरुद्वारा बुंगा साहिब पातशाही छेवीं, सठियाला : श्री अमृतसर ज़िले के गांव सठियाला में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन याद में ऐतिहासिक गुरुद्वारा बुंगा साहिब पातशाही छेवीं सुशोभित है। यह गांव बटाला-जलंधर सड़क पर आबाद है तथा रेलवे स्टेशन ब्यास यहां से ८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस नगर को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के अलावा श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब का चरण-स्पर्श भी प्राप्त है।
११. गुरुद्वारा साहिब गुरूसर सतलाणी : गुरुद्वारा सतलाणी साहिब श्री अमृतसर के गांव हुशियार नगर में रेलवे स्टेशन सतलाणी से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आमद की पावन याद में सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार गुरु साहिब लाहौर से श्री अमृतसर जाने के समय यहां एक कच्चे तालाब के पास रुके थे जो आजकल सुंदर सरोवर के रूप में सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अधीन है।
१२. गुरुद्वारा अटारी साहिब पातशाही छेवीं : गुरुद्वारा अटारी साहिब पातशाही छेवीं श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पवित्र आमद की याद में गांव सुलतानविंड के पास सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने विवाह के समय श्री अमृतसर से डल्ला जाने के समय रास्ते में यहां ठहरे थे। गुरुद्वारा अटारी साहिब शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध तले है।
१३. गुरुद्वारा बाउली साहिब पातशाही छेवीं, खहिरा : गुरुद्वारा बाउली साहिब पातशाही छेवीं, श्री अमृतसर में सतलाणी के पास गांव खहिरा में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में सुशोभित है।
१४. गुरुद्वारा साहिब गुरूपलाह पातशाही छेवीं, खैराबाद : गुरुद्वारा साहिब गुरूपलाह पातशाही छेवीं श्री अमृतसर के गांव खैराबाद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शिकार खेलते समय यहां एक पलाह के वृक्ष तले बैठे थे।
१५. गुरुद्वारा बुंगा साहिब झंडा रामदास : ऐतिहासिक गुरुद्वारा बुंगा साहिब ज़िला श्री अमृतसर के गांव झंडा रामदास में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में

सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार बाबा बुड्ढा जी के जीवन के अंतिम समय उनसे मिलने के लिए आए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब यहां विराजे थे।

१६. गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं, ढंड : श्री अमृतसर ज़िले में छेहरटा-झबाल रोड पर स्थित गांव ढंड में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यहां गुरु साहिब अपने एक बुजुर्ग प्रेमी भाई लंगाह की गुरु-दर्शन की चाह पूरी करने के लिए पहुंचे थे।

१७. गुरुद्वारा मिट्ठासर साहिब पातशाही छेवीं (नेशटा) : ऐतिहासिक गुरुद्वारा मिट्ठासर साहिब पातशाही छेवीं श्री अमृतसर के गांव नेशटा, जो तरनतारन-अटारी सड़क पर रेलवे स्टेशन अटारी से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में सुशोभित है। यहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का पावन स्पर्श प्राप्त कुआं आज भी मौजूद है।

१८. गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं, बुताला : ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं ज़िला श्री अमृतसर की तहसील बाबा बकाला के गांव बुताला में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन याद में सुशोभित है। यहां श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी माई संती तथा उसके पुत्र भाई पल्ला के गृह में विराजमान हुए थे। आप जी की पावन आमद को सदैव बनाए रखने के लिए भाई पल्ला के वारिसों ने इस जगह पर गुरुद्वारा साहिब सुशोभित कर दिया।

१९. गुरुद्वारा पलाह साहिब, गुमटाला : गुरुद्वारा पलाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में श्री अमृतसर-अजनाला सड़क पर कसबा गुमटाला के पास सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार शिकार खेलते समय गुरु साहिब एक पलाह के वृक्ष तले आराम करने के लिए रुके थे।

२०. गुरुद्वारा अठसठ तीरथ साहिब : श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के परिसर में दुक्ख भंजनी बेरी के पास ऐतिहासिक स्थान अठसठ तीरथ सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने यहां बैठकर बुंगों तथा सीढ़ियों की कार सेवा करवायी थी।

२१. गुरुद्वारा संगराणा साहिब : श्री अमृतसर में श्री अमृतसर-तरनतारन मार्ग पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में गुरुद्वारा संगराणा साहिब सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यहां गुरु जी ने माई सुलक्खणी को दर्शन देकर निहाल किया था।

२२. गुरुद्वारा साहिब मादोके बराड़ : श्री अमृतसर ज़िले के नगर मादोके बराड़ में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की सदीवी यादगार के रूप में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार गुरु साहिब रामपुरा से चलकर यहां पहुंचे थे।

२३. गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं, बाबा बकाला : श्री अमृतसर ज़िले के नगर बाबा बकाला में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पावन आमद की याद में गुरुद्वारा साहिब पातशाही छेवीं सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार गुरु साहिब यहां माता गंगा जी के अंतिम समय की सांसारिक रस्मों को निभाने के लिए पहुंचे थे।

क्रमशः . . .

गुरबाणी चिंतनधारा : ७१

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ *(पन्ना २७७)*

ग्यारहवीं असटपदी की पांचवीं पउड़ी में गुरु पातशाह ने जीव की विविध स्थितियों का ज़िक्र किया है कि यह जीव कभी हर्ष में तो कभी शोक में रहता है; कभी कल्पना की उड़ान भरकर उत्साहित होता है तो कभी हतोत्साहित होकर पाताल में ही धंस जाता है। जीव की ताकत उसके अपने हाथ में नहीं है। इसका रिमोट तो परमात्मा के ही हाथ में है। वह इसे किस तरह और कब चलाता है, यह उसकी इच्छा पर पूर्णतया निर्भर है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जीव की ताकत इसके अपने हाथ में नहीं है। समस्त जीवों का मालिक परमात्मा जीवों हेतु सब कुछ करने व जीवों से करवाने में आप ही समर्थ है। जीव प्रभु के आदेशानुसार अर्थात् उसके हुक्म में ही कार्यरत है अर्थात् परमेश्वर के हुक्म के अधीन है। होता वही है जो मंजूरे-खुदा होता है। जीव के मन की अवस्था कभी बुलंदियों पर होती है तो कभी निम्न दर्जे की; वह कभी गमगीन माहौल में जी रहा होता है तो कभी खुशी और आनंद में मगन अर्थात् जीव कभी दुखों में ग्रसित होकर चिंता में बचैन रहता है तो कभी मस्ती के आलम में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। कभी वह दूसरों की निंदा करने में लगा रहता है तो कभी वह कल्पनालोक में उड़ान भरता हुआ आसमान में पंहुच जाता है और कभी पाताल में धंस जाता है। कहने से अभिप्राय, कभी जीव उन्नति के शिखर पर होता है तो कभी अवनति की गर्त में डूब जाता है। जीव कभी तत्वेत्ताओं अर्थात् गूढ़ ज्ञानियों की तरह ब्रह्म-विचार में लग जाता है अर्थात् दार्शनिक बनकर बड़ी गूढ़-ज्ञान की बातें करता है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में इस रहस्य को स्पष्ट करते हैं कि जीव को स्वयं में मिलाने वाला प्रभु आप ही है।

जीव परमेश्वर के हाथ की कठपुतली है। प्रभु के हाथ में उसकी डोर है। वह जीव रूपी कठपुतली से जिस प्रकार का नाच करवाता है जीव उसी तरह का नृत्य करता जाता है अर्थात् वह जीव को, उसकी सोच और बुद्धि को जिस ओर लगाकर जिस कर्म में प्रवृत्त करता है जीव उसी ओर प्रवृत्त होकर उसी कर्म में रत हो जाता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

जानै ॥
जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥ (पन्ना २०६)
कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥
कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥

ग्यारहवीं असटपदी की छठी पउड़ी में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी उस परवरदिगार के अनंत कौतुकों का वर्णन करते हुए पावन फरमान करते हैं कि वह परिपूर्ण परमेश्वर निर्गुण-निराकार होते हुए भी जीवों में सगुण रूप में व्यापक होकर अनेक किस्म के नृत्य करता है अर्थात् प्रभु जीवों में रच-बस कर कई तरह के नृत्य कर रहा है। वह कभी दिन-रात निद्रामग्न है अर्थात् सो रहा है। कभी वह क्रोध में आकर विकराल रूप धारण कर लेता है तो कभी अति विनम्र होकर जीवों के चरणों की धूल बना रहता है। कभी परमेश्वर महान राजा का रूप धारण कर लेता है तो कभी अत्यंत भिखारी का रूप धारण करने का स्वांग करता है। कभी स्वयं की अपकीर्ति (अपयश) करवा रहा है तो कभी स्वयं को नेक और भला पुरुष कहलवा रहा है। असल में जीव उसी तरह का जीवन-यापन करता है जैसा कि प्रभु उनसे करवाता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि कोई विरला ही गुरु-कृपा से (उपरोक्त) सच्चाई को बयान करता है।

वस्तुत: सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने वाला वह प्रभु आप ही है। परमेश्वर जीव को जिस रूप में रखता है, जिस हाल में रखना चाहता है, जीव उसी रूप और हाल में ही रहता है। अंतर केवल इतना है कि जो जीव गुरु-कृपा से उस मालिक के हुक्म और रजा को समझ लेता है वो हर हाल, हर रंग में उसी के हुक्म को शिरोधार्य करके आनंद से जीवन व्यतीत करता है। न वो अमीरी में आपे से बाहर होता है और न ही वो गरीबी में प्रभु से कोई गिला-शिकवा करता है।

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥
कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभु भावै तिवै नचावै ॥
जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥

ग्यारहवीं असटपदी की सातवीं पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह परमेश्वर को बहुत बड़ा बाजीगर मानते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह जीव से जिस तरह का स्वांग करवाना चाहता है जीव वही कुछ करता है। जीव अपनी मर्जी से कुछ भी करने में समर्थ नहीं। जीव की डोर उसी के हाथ में है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि कभी इंसान विद्वान (प्रकांड पंडित) बनकर शास्त्रों का व्याख्यान देता है अर्थात् ग्रंथों की व्याख्या करता है और कभी मौन धारण करके एकाग्रचित्त होकर

ध्यानमग्न हो जाता है। कभी तीर्थों पर जाकर स्नान करता है तो कभी सिद्ध बनकर, तो कभी साधना करने वाले साधक के रूप में मुख से ज्ञान-चर्चा करता है। कभी कीट (तुच्छ कीड़ा), कभी (विशाल) हाथी, तो कभी पतंगे आदि की योनियों में। हकीकत तो यही है कि परमेश्वर जो चाहता है, जैसा चाहता है, जीव से वैसा ही नाच नचवाता है। वही कुछ होता है जो मंजूरे-खुदा होता है। श्री गुरु अरजन देव जी अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि उस जैसा और कोई नहीं है।

वस्तुतः यह संसार एक रंगमंच है। इसके सारे पात्र नाटककार (परमात्मा) के अधीन हैं। उसने जिसके लिए जो अभिनय और समय निश्चित किया है जीव उसे उसी रूप, ढंग तथा समय में करने के लिए वचनबद्ध है। वह अपनी मर्जी से एक पल भी अभिनय नहीं कर सकता। जीव पूर्णतया उसके हाथ की कठपुतली है। वह जैसा नाच नचायेगा जीव को नाचना ही पड़ेगा। वह सर्वकला समर्थ है। वह चाहे तो नायक को खलनायक बना दे और चाहे तो खलनायक को नायक बना दे। केवल और केवल जीव उस परमेश्वर के चरणों में अनुनय-विनय करता रहे, तहे-दिल से अरदास करता रहे कि हे परवरदिगार! इस जगत में जो भी कार्य करवाना नेक ही करवाना, जैसा कि एक शायर ने लिखा है :

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमज़ोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना।

गुरबाणी आशयानुसार जिस प्रभु के आगे जीव की कोई पेश नहीं जाती उस परम शक्ति के आगे समर्पण करने में ही जीव की भलाई है, यथा :

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ (पन्ना २६८)
कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ उसु असथान का नही बिनासु ॥
मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥

ग्यारहवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने जीव की सर्वोत्तम अवस्था का ज़िक्र किया है। जब जीव साधसंगत में आकर परमेश्वर की बंदगी करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। जैसे पानी में पानी मिलकर एक रूप हो जाता है वैसे ही जीव ईश्वर में ही विलीन हो जाता है और उसको आवागमन के चक्कर से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब कभी जीव को उसके सुकर्मों के फलस्वरूप गुरमुखों की संगत नसीब होती है तब यह उस स्थान से वापिस नहीं आता अर्थात् (परमेश्वर की अंश) इस जीव को सौभाग्य से जब सतसंगत प्राप्त हो जाती है तो यह वापिस नहीं गिरता अर्थात् उच्चावस्था प्राप्त होने के उपरांत निम्न योनियों में नहीं भटकता। सतसंगत की बदौलत इसके अंदर (हृदय-घर) में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है

और उस स्थान अथवा अवस्था का कभी विनाश नहीं होता। जिनके हृदय और शरीर (मन और तन) परमेश्वर के नाम में रंगे रहते हैं वे सदैव पारब्रह्म परमेश्वर की हजूरी में निवास करते हैं अर्थात् वे सदा प्रभु-चरणों से जुड़े रहते हैं। जिस प्रकार पानी पानी में मिलकर एकरूप हो जाता है ठीक वैसे ही आत्मा प्रभु की ज्योति में लीन होकर एकरूप हो जाती है। (जिसके फलस्वरूप) जीव के आवागमन (जन्म-मृत्यु) का सिलसिला ही समाप्त हो जाता है, उसे अटल पद की प्राप्ति हो जाती है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि ऐसे परमेश्वर के चरणों से बलिहार जाना चाहिए।

जीव अपने कर्मों के कारण आवागमन के बंधनों में बंधा हुआ है। उसकी मुक्ति का एक ही मार्ग है कि उसको प्रभु-रहमत से साधसंगत नसीब हो जाए। उसमें एकाग्रचित्त होकर नाम-सिमरन करते हुए जीव इस भवसागर से पार उतरकर परमेश्वर के चरणों में लीन हो सकता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥
नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥१॥
पउड़ी ॥ टहल करहु तउ एक की जा ते ब्रिथा न कोइ ॥
मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥
टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध क्रिपाल ॥
साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥
(पन्ना २५५)

अर्थात् जिस पर साधु पुरुष मेहरबान हो जाए वही जीव प्रभु की सेवा एवं अटल पद को प्राप्त करता है। साधु की संगत भी तभी मुमकिन है जब प्रभु स्वयं दयावान हो जाए। उसकी कृपा-दृष्टि रहते सब कुछ संभव है और सहजता से हासिल हो जाता है।

उपरोक्त समस्त सबब तभी बनते हैं जब गुरु-कृपा से जीव के अंतर्मन का अंधेरा मिट जाता है तथा अज्ञानता के दुर्भेद दरवाजे खुल जाते हैं। कोई गुरमुख व्यक्ति ही इस गहरे भेद को समझ सकता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥. . .
गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ (पन्ना ११०)

जीवन की राह

थोड़ा सा तुम थमो, थोड़ा सा हम थमें,
तो दुर्घटनाएं थम जायेंगी।
थोड़ा सा तुम चलो, थोड़ा सा हम चलें,
तो मंज़िल मिल जायेगी।
थोड़ा सा तुम झुको, थोड़ा सा हम झुकें,
तो हउमै मिट जायेगी।
थोड़ा सा स्वाभिमान हो, थोड़ा सा प्यार हो,
तो जीने की राह मिल जायेगी।
थोड़ी सी मेहनत हो, थोड़ी सी रहमत हो,
तो जीवन की चाह मिल जाएगी।

गुर सिखी बारीक है... २७

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

गुरु के घर भिक्षुक की तरह जाना है। सतिगुरु जिस भिक्षुक की बात करते हैं, वह धन मांगने वाला, पुत्र-संतान मांगने वाला, सत्ता-शक्ति चाहने वाला, यश-प्रतिष्ठा की याचना करने वाला या अन्य सांसारिक कामनाएं करने का भिक्षुक नहीं। गुरु-घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष दोनों हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर हर कोई भिक्षुक नज़र आता है। वह भिक्षा में क्या मांग रहा है इस प्रश्न का उत्तर वही दे सकता है। गुरु साहिबान ने सारे भ्रम-शंकाओं का निवारण करते हुए अनमोल सुमति दी है कि मनुष्य क्यों एक भिक्षुक है और वह कैसा भिक्षुक बनकर गुरु-घर में जाये। मनुष्य तो मूलतः विकारों का गुलाम है और विकारों की इस दासता के अतिरिक्त उसके पास कुछ है ही नहीं जिस पर वह गर्व कर सके :

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि काम क्रोध लोभ मोह अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥
(पन्ना ६००)

मनुष्य अंदर से खोखला-निर्धन हो रहा है। उसके जीवन की वास्तविक पूंजी को तो अंदर बैठे हुए पांच विकार लूटते जा रहे हैं। उसे ख़बर ही नहीं है कि पास में तो कुछ भी नहीं बच रहा है। वह इतना असहाय है कि कोई भी उसे बचाने वाला नहीं। यह एक बड़ी भयानक स्थिति है और इसका कारण सांसारिक कार्य-व्यवहार है जो मनुष्य को सदा अज्ञान के अंधेरे में रखने वाला है। मनुष्य को पता ही नहीं चलता कि उसके साथ क्या हो रहा है। आशा की किरण एक ही है -- सतिगुरु, जो उसे उसकी इस निर्धनता से बचा सकता है।

यह ठीक है कि मनुष्य देह समस्त योनियों में श्रेष्ठ है और उसे समस्त जीवों में उत्तम स्थिति प्राप्त है। यह परमात्मा के खेल की विचित्रता है कि उत्तम जीवन देने के साथ ही उसने मनुष्य के जीवन को विषम भी बना दिया है। अन्य जीवों की अपेक्षा उसके सामने अधिक समस्याएं हैं और इनसे निपटने के लिए उसे अधिक सुचेत और सक्रिय होकर प्रयास करना है। भाई गुरदास जी इस जीवन-विषमता का वर्णन करते हुए निदान भी बताते हैं :

गज म्रिग मीन पतंग अलि इकतु इकतु रोगि पचंदे।
माणस देही पंजि रोग पंजे दूत कुसूतु करंदे।
आसा मनसा डाइणी हरख सोग बहु रोग वधंदे।
मनमुख दूजै भाइ लगि भंभलभूसे खाइ भवंदे।
सतिगुर सचा पातसाह गुरमुखि गाडी राहु चलंदे।
साधसंगति मिलि चलणा भजि गए ठग चोर डरंदे।
लै लाहा निजि घरि निबहंदे ॥ (वार ५:२०)

मनुष्य की तुलना भाई गुरदास जी ने हाथी, हिरण, मछली, पतंगे और भंवरे से की है। इन जीवों में उन्होंने छोटे से लेकर सबसे

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

बड़े प्राणी को शामिल किया है ताकि कोई शंका न रह जाए। भाई गुरदास जी के अनुसार इन सभी प्राणियों में एक-एक ऐसा विकार है जो उनकी जान तक ले लेता है। हाथी काम से ग्रस्त है। हिरण को आवाज़ का व्यसन है। मछली को स्वाद का रोग है। पतंगा रूप (अग्नि की ललाट) का दीवाना होकर मरता है। भंवरा फूल पर एकत्र मकरंद के लिए अपनी जान गंवा बैठता है। एक ही रोग है जिससे जीवन जाता रहता है। मनुष्य ऐसा जीव है जिसे एक नहीं पांच रोग लगे हुए हैं। आशा और कामना उसे निरंतर उकसाती रहती है एक डाईन की तरह। वह कभी हर्ष कभी विषाद में पड़ा रहकर पांचों विकारों को पूरी तरह जीवित रखने का कार्य करता है। इस मूर्खता के चलते वह निरंतर समस्याओं में घिरा रहता है। समस्याओं से वही बच सकता है जो सतिगुरु की शरण में आये और साधसंगत करे। सतिगुरु और साधसंगत का ऐसा प्रताप है कि सारे विकार स्वयं ही डरकर भाग खड़े होते हैं और सच्चा जीवन-फल प्राप्त हो जाता है।

गुरु-घर में जाकर सतिगुरु के सामने नत्मस्तक होने वाला यदि धन (लोभ), संतान (मोह), सत्ता-शक्ति (क्रोध), सौंदर्य (काम) और यश-प्रतिष्ठा (अहंकार) के लिए अरदास करे तो पांच चोर तो वह स्वयं ही साथ पकड़कर लाया है। जो स्वयं ही अपनी जीवन-पूंजी को लुटने दे रहा है वह गुरमुख कैसे हुआ और कैसे उसे जीवन-फल प्राप्त होगा? ऐसा मनमुख भिक्षुक बना ही कहां? वह तो अपने विकारों के आधार पर खड़ा होकर अपने को ऊंचा समझ रहा है और नत्मस्तक इसलिए है कि और ऊंचा उठ सके। *"पंच बिखादी एकु गरीबा . . ."* उसने विकारों को विष समझा ही नहीं। वह तो विष की कामना कर रहा है तो गरीब कैसे हुआ और कैसे सतिगुरु उसकी रक्षा करेगा? विकारों का दास बनकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष मस्तक झुकाने वाला गुरसिक्ख नहीं है। गुरसिक्ख वो है जो सतिगुरु से पांच विकारों से मुक्त होने की याचना-विनती कर रहा है, क्योंकि वह जानता है कि सतिगुरु ही इन पांच विकारों से उसे बचा सकते हैं। गुरसिक्ख यह जानता है कि ये पांच चोर उसकी जीवन-पूंजी की लूट कर रहे हैं, जिससे समस्याओं का घोर अंधकार छा जाने वाला है। इस पूंजी को बचाकर रख पाने की सामर्थ्य उसमें नहीं है, इसलिए वह सतिगुरु की शरण में आया है। शरणागत होकर ही जीवन में रस आ सकता है :

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥
(पन्ना ४४९)

दरअसल एक गुरसिक्ख की यात्रा *"पंच बिखादी एकु गरीबा"* से आरम्भ होकर *"नानक रसि गुधा"* तक की यात्रा है जो उसे पूर्ण गुरसिक्ख साबित करती है। वह परमात्मा को पाना चाहता है ताकि उसके तन के अंदर बसे हुए पांच चोर डरकर भाग जायें और उसका तन एक सुरक्षित किले में बदल जाए, जिसमें परमात्मा का निवास हो। इससे उसका तन सोने-सा सुशोभित हो जायेगा। अंतर में बसा हुआ परमात्मा उसके लिए अनमोल ख़ज़ाने की तरह होगा जो उसके मन को भा जायेगा और उसे ऐसे आनंद की प्राप्ति होगी कि वह स्वयं को संसार का सबसे भाग्यशाली जीव समझने लगेगा।

परमात्मा का नाम ही सबसे बड़ा और

सच्चा खज़ाना है, यह बात गुरसिक्ख जानता है। गुरसिक्खी क्या है और गुरसिक्ख कौन है, इसकी समझ साकत पुरुष को आनी अभी बाकी है :

गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥
(पन्ना २२)

मनमुख को सांसारिक कृत्तियां ही अच्छी लगती हैं। वह इस भ्रम में रहता है कि धन एकत्र कर लेने, शक्ति अर्जित कर लेने से, प्रसिद्धि पा लेने से उसे आनंद और सुख मिल जायेगा। सतिगुरु को सर्वसमर्थ समझते हुए मनमुख यही इच्छाएं लेकर गुरु-घर जाता है। गुरसिक्ख जानता है कि ये सारी इच्छाएं निरर्थक हैं इसलिए वो मन को इनमें नहीं लगाता। सच्चा धन अर्थात् परमात्मा को मन में बसाने के लिए वो सतिगुरु के पास अरदास करने जाता है :

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥
जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥
जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥
नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥१॥
तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥
सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥१॥रहाउ॥
जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥
जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना ॥
जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥
नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥२॥ (पन्ना ११५५)

उपरोक्त वचन श्री गुरु अरजन देव जी के हैं। नाम, जिसे गुरमति में सच्चा धन, सच्ची उपलब्धि-अर्जन (लाहा), सच्चे व्यवहार की संज्ञा दी गयी है, की महत्ता का विस्तृत वर्णन गुरु साहिब ने उपरोक्त वचन में किया है। श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक सिक्ख धर्म संस्थागत रूप लेने लगा था और गुरु-घर को मानने वालों की संख्या में बड़ी वृद्धि हुई थी। कदाचित् इसीलिए आवश्यक हो गया था कि सिक्खों को सही मार्गदर्शन देने के लिए प्रतीकों में बात करने के साथ ही साथ सारी बात को पूरी तरह खोलकर सामने रखा जाए ताकि कोई दुविधा न रहे। यह इसलिए भी आवश्यक था कि सदियों से विकसित मानसिकता का संवाहक समाज सतिगुरु की शक्ति पर विश्वास को ढ़ृढ़ करने के लिए होने वाले चमत्कारों का अवलंबन लेना चाहता था। यह गुरमति का विलक्षण पक्ष था कि धारा से उलट सभी गुरु साहिबान ने न तो कोई चमत्कार दिखाए और न ही गुरसिक्खों से चमत्कारों पर विश्वास करने को कहा। उन्होंने एकमात्र परमात्मा पर विश्वास की बात की। कई बार अवसर आने पर भी गुरु साहिबान ने चमत्कार दिखाने से इंकार कर दिया। उन्होंने गुरसिक्ख के मन में परमात्मा के निवास को ही सबसे महान बना दिया और कहा कि राजा वही है जिसके मन में हरि के नाम की ज्योति जल रही है। इससे उसके सारे कार्य स्वयं ही पूरे हो जाते हैं तथा अपार सम्पदा (सुख-संतोष) प्राप्त हो जाती है। परमात्मा का नाम सबसे बड़ी पूंजी है जो उसे परम भाग्यशाली बनाती है। परमात्मा का नाम कई-कई महलों और सेनाओं से भी बड़ा है और जीवन को सहजता-सुखों से भर देने वाला है। गुरु साहिब ने बात को शिखर तक पहुंचाते हुए कहा कि *"जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥"* अर्थात् मन में नाम धारण करने वाला गुरसिक्ख सर्वश्रेष्ठ स्थान पा जाता है।

गुरु-घर में जाकर मात्र सांसारिक सुखों की बात करना अविकसित बुद्धि के लक्षण हैं और गुरु-शब्द की नासमझी का परिचायक हैं। सारी सांसारिक कामनाएं, पांच विकारों से जुड़ी हुई हैं।

उनका पोषण पांच ठगों को बल देने वाला और परमात्मा से दूर ले जाने वाला है। जीवन का व्यवहार परमात्मा को पाना ही है :

हरि धन को वापारी पूरा ॥
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ (पन्ना १९४)

मन में परमात्मा के नाम को बसाना ही सम्पूर्ण काम है जिसे करके मनुष्य जीवन को सफल करता है और महिमा प्राप्त करता है।

गुरसिक्ख जानता है कि जीवन भर वह सांसारिक कामनाएं पूरी करने का प्रयास करता रहे तब भी कामनाएं ठहरने वाली नहीं हैं और इनसे उसे कोई (आत्मिक) सुख भी नहीं मिलने वाला है। वह विकारों की दासता से मुक्त नहीं हो पायेगा, उनकी ठगी का शिकार होता रहेगा। पांच विकार और विकारों से जनित इच्छाएं उसकी समस्याओं को निरंतर गहराती जायेंगी। गुरसिक्ख सांसारिक कामनाओं में नहीं परमात्मा से जुड़ने में सुख खोजता है और उसी की याचना लेकर गुरु-घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष अपना शीश निवाता है।

सिक्ख पंथ द्वारा अंगीकार की गयी सिक्ख रहित मर्यादा में प्राविधान है कि गुरुद्वारे में जाते समय जूते बाहर उतारकर स्वच्छ होकर जाना चाहिए, पैर पानी से धो लेने चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब अथवा गुरुद्वारे को अपने दाहिने रखकर परिक्रमा करनी चाहिए। यह देखने में एक भौतिक क्रिया है जिसे सभी करते हैं। प्रतीकात्मक रूप से देखें तो जूते बाहर उतारने का कर्म उन विकारों को बाहर छोड़ने का कर्म है जो हमारे जीवन में प्रवेश कर गए हैं। स्वच्छता का सम्बंध मन को परमात्मा के निवास के योग्य बनाने और आंतरिक शुचिता से है। परिक्रमा मन की असहाय अवस्था से जोड़कर देखें तो पता चलता है कि चतुर्दिशाओं में एकमात्र सहायक सतिगुरु ही है। जब पूर्ण असहायता की भिक्षुक भावना होगी तभी एक गुरसिक्ख कह सकेगा :

संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥
तारि लै बाप बीठुला ॥१॥रहाउ॥
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥
तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥
पारि उतारे केसवा ॥३॥
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥
मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥
(पन्ना ११९६)

गुरुद्वारे जाते समय जिसके मन में *"बाह दाहि बाह देहि"* की तीव्र पुकार उठती हो वह सच्चा गुरसिक्ख है।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ११

जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा'

*-स. रूप सिंघ**

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा स्वतंत्रता लहर के साथ बचपन से जुड़े हुए, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष पद पर विराजमान रह चुके जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' का जन्म १९०२ ई में स. लाल सिंघ तथा माता दिआल कौर के घर गांव उराड़ा, तहसील कसूर, ज़िला लाहौर में हुआ। बचपन तथा जवानी जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' की देश की आज़ादी व गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में गुज़री। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' का अनंद कारज (विवाह) वलटोहा, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। इनके घर चार पुत्रों व तीन पुत्रियों ने जन्म लिया। जत्थेदार साहिब बचपन से ही आज़ाद स्वभाव के मालिक थे तथा आज़ादी लहर के साथ जुड़े थे। १७ वर्ष की युवावस्था में जलियांवाला बाग के साके के समय इन्होंने सक्रियता से हिस्सा लिया तथा कैद काटी। १९२३-२४ ई में डसके के मोर्चे के समय भी इन्होंने अकाली लहर में एक वर्ष की जेल-यात्रा की। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' को १९२४-२५ ई में फेरू के मोर्चे के समय सेंट्रल जेल, लाहौर में एक वर्ष की कैद काटनी पड़ी तथा १०० रुपए जुर्माना अदा करना पड़ा। इन्होंने शिरोमणि अकाली दल की तरफ से लगे कृपाण के मोर्चे के समय अटक जेल में एक सप्ताह की कैद काटी तथा ३०० रुपए जुर्माना भरा। १९४१ ई में ये एक वर्ष के लिए फिर नज़रबंद रहे। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' ने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया। ये २ वर्ष, ९ महीने सेंट्रल जेल मुलतान में नज़रबंद रहे। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' को १९४६ ई में फिर गिरफ्तार करके एक वर्ष नज़रबंद रखा गया।

आख़िरी बार देश-विभाजन के समय १९४७ ई में जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' को सुरक्षा एक्ट के अधीन गिरफ्तार किया गया और तीन महीने सेंट्रल जेल लाहौर में बंदी रखा गया। देश-विभाजन के उपरांत ये परिवार सहित दाउदपुरा (निकट वलटोहा) बस गए, जहां इनके पुत्र-पौत्र आज भी अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। इनके पुत्र-पौत्रों के बताने के अनुसार १९५३ ई में जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' तथा उनके भतीजे को बहोड़ू पुल (निकट श्री अमृतसर) पर बस से बाहर निकालकर कत्ल कर दिया गया। ये कत्ल इनके भाईचारे के लोगों ने ही किए गए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के रिकार्ड के मुताबिक ये १८ मार्च, १९५० ई से २६ नवंबर, १९५० ई तक शिरोमणि संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर शोभनीय रहे। ८ अप्रैल, १९३२ ई को गुरुद्वारा एक्ट की धारा ४४(४) के अनुसार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के नए सदस्यों की एकत्रता पंजाब सरकार के बुलावे पर ११ बजे टाऊन हॉल, श्री अमृतसर में डिप्टी कमिश्नर, श्री अमृतसर की अध्यक्षता में हुई, जिसमें अंक नं. ६३ के अनुसार

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

जत्थेदार जी, गांव उराड़ा, तहसील कसूर (लाहौर) से हाज़िर थे। १७ जून, १९३३; २ अक्तूबर, १९३४; १३ जून, १९३६; २८ नवंबर, १९३७ तथा ९ अक्तूबर, १९३८ को हुई जनरल एकत्रताओं के समय जत्थेदार जी कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

२९ अक्तूबर, १९३५ ई को सरकार के सांप्रदायिक फैसले के विरुद्ध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने विशेष इजलास बुलवाया। इस समय गुरुद्वारा शहीदगंज, कृपाण का मसला तथा मुसलिम पुलिस की धक्केशाही के विरुद्ध मोर्चा लगाने का फैसला किया गया, जिसमें जत्थेदार जी तथा स. अरजन सिंघ लाहौर वालों ने कहा कि इस मोर्चो में कुर्बानी देने के लिए लाहौर ज़िला सबसे आगे होगा। २५ अप्रैल, १९३६ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के नये चुनाव के उपरांत पहला जनरल इजलास हुआ, जिसमें जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा', डॉ. राजागंज, तहसील कसूर, ज़िला लाहौर में हाज़िर थे।

२८ मई, १९४८ ई को नये चुनाव के उपरांत शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल इजलास के समय जत्थेदार जी को सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी नामज़द किया गया। स. शमशेर सिंघ अशोक की लिखित के अनुसार इस समय जत्थेदार साहिब एम. एल. ए भी थे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का जनरल समागम २६ फरवरी, १९५० ई को जत्थेदार जी की अध्यक्षता में आरंभ हुआ। पारित एक प्रस्ताव के अनुसार जनरल इजलास सर्वसम्मति से प्रवान करता है कि समझौते के रूप में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के ओहदेदारों तथा कार्यकारिणी सदस्यों का सारा मामला जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' के हवाले किया जाता है। जत्थेदार ऊधम सिंघ ने कहा कि जिस तरह हमने सब कुछ जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' के हवाले किया है उसी प्रकार हम सबको उनका साथ देना चाहिए। जो फैसला वे करें उसको लागू करना चाहिए।

इसके उपरांत स. बाल सिंघ, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, ज़िला शेखूपुरा के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा दोनों दलों ने मेरी ड्यूटी लगाई है कि इनके आपसी भेदभाव बातचीत द्वारा खत्म कर दूं और बातचीत द्वारा भी न खत्म हों तो सालसी फैसले दूं, इसलिए मैं चेयरमैन साहिब को विनती करता हूं कि मीटिंग दो घंटों के लिए स्थगित कर दी जाए तथा पुन: इजलास तीन बजे शुरू हो। चेयरमैन साहिब ने हाऊस की राय के लिए तथा सदस्यों द्वारा सहमति प्रकट करने पर इजलास दो घंटे के लिए स्थगित कर दिया।

दोबारा इजलास शुरू होने पर जत्थेदार ऊधम सिंघ ने कहा कि काफी समय से हमारी यह ख्वाहिश है कि पंथ में एकता हो। यह है भी जरूरी, क्योंकि देश व कौम के मौजूदा हालात एकता व ज्यादा मज़बूती की मांग करते हैं। मैं, चूंकि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का अध्यक्ष हूं, इसलिए मैं और मेरे साथी आवश्यक समझते हैं कि मैं अपने साथियों तथा सारे हाऊस को अपील करूं कि सारा मामला जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' के हवाले कर दें तथा वे जो चाहें, फैसला कर दें। ज्ञानी करतार सिंघ ने कहा कि जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' जो फैलसा करेंगे, वो चाहे मुझे पसंद हो या न हो मैं उसका पाबंद रहूंगा और अपने साथियों से भी कहूंगा कि वे भी इसके पाबंद रहें।

जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' ने कहा कि "मैंने बहुत कोशिश की है, चाहे बात अभी तक

नहीं सुलझी, परंतु सुलझ अवश्य जाएगी। मामला जो मेरे हाथों में दिया गया है, मैं उसको इस तरह निपटाने की कोशिश करूंगा, जिससे पंथ चढ़दी कला में जाए। कुछ दिनों बाद मैं कार्यकारिणी तथा अन्य ओहदेदारों का चुनाव करूंगा। आज की एकत्रता में बजट पास कर दिया जाए। जो मुकद्दमे दोनों दलों ने एक-दूसरे पर किए हैं, वे भी वापिस ले लिए जाएं।"

हवाला तो नहीं मिलता, मगर इस तरह महसूस होता है कि १८ मार्च, १९५० ई. को जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' को अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी स्वीकार कर लिया गया हो। सुनने में आया है कि इन्होंने खुद को अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी एलान कर दिया, जिसको दोनों दलों ने प्रवान कर लिया। १९५० ई. में पारित प्रस्ताव नंबर ३४८६ इस बात की पुष्टि करता है--- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारियों सम्बंधी सर्विस सब-कमेटी नियत की गई है, जिसमें इनके नाम के साथ अध्यक्ष शब्द अंकित है : (१) जत्थेदार चंनण सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, (२) स. बसंत सिंघ मोगा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (३) मास्टर अजीत सिंघ, कनिष्ठ उपाध्यक्ष आदि।

२० अगस्त, १९५० ई. को आप जी की अध्यक्षता में हुई कार्यकारिणी की एकत्रता में फैसला किया गया कि देश-विभाजन के बाद पहली बार हो रही आदम गिनती, जो ९ फरवरी, १९५१ से १ मार्च, १९५१ तक हो रही है, के समय अपनी गिनती सही दर्ज करवाई जाए। जनगणना के बारे में समूह गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटियों, ग्रंथी सिंघों तथा रागियों को विशेष पत्र द्वारा सुचेत किया गया। १० अक्तूबर, १९५० को पंजाब के सीमावर्ती ज़िलों-- श्री अमृतसर, फिरोज़पुर तथा गुरदासपुर में आई बाढ़ के कारण पीड़ितों की मदद करने के लिए श्री दरबार साहिब, तरनतारन द्वारा २० हज़ार रुपए लंगर लगाने के लिए दिए गए। बाढ़-पीड़ितों की मदद के लिए ६-सदस्यीय कमेटी बनाई गई, जिसमें जत्थेदार जी भी शामिल थे।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का जनरल समागम २६ नवंबर, १९५० ई. को आप जी की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ, जिसमें ११४ सदस्य हाज़िर थे। सबसे पहले महंत प्रेम सिंघ मुराला, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा एम. एल. ए. के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया और उनके परिवार के साथ हमदर्दी प्रकट की गई।

स. ईशर सिंघ मझैल ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष का नाम पेश करने से पूर्व मैं जत्थेदार चंनण सिंघ का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने उस समय यह कार्य संभाला जब अब जैसे हलात नहीं थे। जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि जिस स्थान पर मैं पहुंचना चाहता था, गुरु महाराज ने मुझे पहुंचा दिया। स. ईशर सिंघ मझैल ने जत्थेदार ऊधम सिंघ का नाम पेश किया है, कोई अन्य नाम पेश नहीं हुआ, इसलिए मैं जत्थेदार ऊधम सिंघ को अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी एलान करता हूं। इस तरह जत्थेदार चंनण सिंघ 'उराड़ा' का अध्यक्ष-काल संपूर्ण हो गया।

देश की आज़ादी की लहर में इनके द्वारा डाले योगदान के कारण इनको भारत सरकार द्वारा ताम्र-पत्र प्रदान किया गया। इनकी तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय (श्री अमृतसर) में सुशोभित है।

ख़बरनामा

स. हरकीरत सिंघ का आस्ट्रेलिया में जेलर बनना सिक्ख कौम के लिए गर्व वाली बात

श्री अमृतसर : २७ जून : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स. हरकीरत सिंघ अजनोहा के आस्ट्रेलिया में जेलर बनने पर खुशी का इज़हार करते हुए उन्हें मुबारकबाद दी तथा इसे सिक्ख कौम के लिए गर्व वाली बात बताया।

उन्होंने कहा कि साबत-सूरत स. हरकीरत सिंघ अजनोहा का आस्ट्रेलिया में पढ़कर उसी देश में जेल अधिकारी बनना समूह नौजवान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत है। यदि मन में सिक्खी के प्रति लगाव है तो चाहे देश हो या विदेश, साबत-सूरत रहकर भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

दिल्ली यूनीवर्सिटी का पंजाबी भाषा के विरुद्ध फैसला अति निंदनीय : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १ जुलाई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने दिल्ली यूनीवर्सिटी द्वारा पंजाबी भाषा को चार-वर्षीय स्नातक की शिक्षा में शामिल न करने के फैसले को अति निंदनीय बताते हुए इसे पंजाबी भाषा के विरुद्ध गहरी साजिश करार दिया है।

उन्होंने कहा कि बड़े खेद की बात है कि बी. ए., बी. काम. के कोर्सों में एक विषय के रूप में पढ़ाए जाने वाले पंजाबी विषय को बंद कर दिया गया है। यह पंजाबी भाषा के विरुद्ध काम कर रही लॉबी की पंजाबियों एवं पंजाबी भाषा के साथ घटिया हरकत है। उन्होंने कहा कि कनाडा की धरती पर बसते पंजाबी भाईचारे के योगदान को समझते हुए कनाडा सरकार ने बहुत-सी जगहों पर साईन बोर्ड पंजाबी भाषा में लगवाए हैं, जिसे देखकर हर पंजाबी का सिर गर्व से ऊंचा हो जाता है, क्योंकि विदेशी धरती पर मातृ-भाषा पंजाबी को सम्मान मिलना कोई छोटी बात नहीं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दिल्ली में पंजाबी लोग बड़ी संख्या में रहते हैं जिन्हें अपनी मातृ-भाषा पंजाबी के साथ गहरा लगाव है। उन्होंने कहा कि सरकारी तंत्र में बैठे कुछ शरारती लोग कोई न कोई नया झमेला खड़ा करके देश के शांतमयी माहौल को खराब करने में लगे रहते हैं। उन्होंने दिल्ली तथा केंद्र सरकार से ज़ोर देकर कहा कि समूह पंजाबियों की भावनाओं की कद्र करते हुए दिल्ली यूनीवर्सिटी द्वारा पंजाबी भाषा के विरुद्ध लिया गया फैसला तुरंत रद्द करवाया जाए।

उत्तराखंड में हुए जानी-माली नुकसान का
जायज़ा लेगी पांच-सदस्यीय कमेटी

श्री अमृतसर : ९ जुलाई : उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के कारण बड़ी संख्या में हुए जान-माल के नुकसान का जायज़ा लेने के लिए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स. सुखदेव सिंघ भौर, महासचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. रजिंदर सिंघ महिता, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाल, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. निरमैल सिंघ (सभी कार्यकारिणी सदस्य) पर आधारित पांच-सदस्यीय कमेटी गठित की है। इस कमेटी के कोआर्डिनेटर स. बलविंदर सिंघ, अपर सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को बनाया गया है।

इस सम्बंधी जानकारी देते हुए स. तरलोचन सिंघ, सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने बताया कि उत्तराखंड में पीड़ित लोगों की सहायता के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध वाले विभिन्न गुरुद्वारा साहिबान से भारी मात्रा में ले जाकर राशन-सामग्री बांटी गई है। इसके अलावा भारतीय फौज के जवानों को लंगर तैयार करके पैकेटों के रूप में दिया ताकि वे हेलीकाप्टर द्वारा दूर-दराज के क्षेत्रों में पहुंचा सकें। श्री गुरु रामदास मेडिकल कालेज, वल्ला (श्री अमृतसर) से सारी सुविधाओं से युक्त एंबूलेंस गाड़ियों तथा दवाइयों सहित डाक्टरों की टीम भी भेजी गई थी, जिसने १० दिनों से ज्यादा पीड़ितों की मदद की। उन्होंने कहा कि उक्त कमेटी जल्द ही उत्तराखंड का दौरा करके विस्तृत रिपोर्ट माननीय अध्यक्ष साहिब को सौंपेगी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने गृहमंत्री को
सज्जन कुमार के खिलाफ अपील दाखिल करने के लिए पत्र लिखा

श्री अमृतसर : ९ जुलाई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भारत सरकार के गृहमंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे को पत्र लिखकर मांग की है कि नवंबर, १९८४ में दिल्ली में सिक्खों का बड़ी बेरहमी से कत्ल करवाने वाले सज्जन कुमार के खिलाफ अदालत में अपील दाखिल कर उसे सज़ा दिलवाई जाए तथा सिक्ख कत्लेआम का शिकार हुए सिक्ख परिवारों को इंसाफ दिलाया जाए। उन्होंने कहा कि सिक्खों का कत्लेआम करवाने वाले सज्जन कुमार को सज़ा न दिलवाना सिक्खों के जख़्मी हृदयों को कुरेदने के समान है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२०१३

दाख़िला सूचना

धार्मिक परीक्षा--नवंबर, २०१३

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा हर वर्ष नवंबर माह में ली जाने वाली धार्मिक परीक्षा के दाख़िला फार्म जमा करवाने की अंतिम तारीख ३० सितंबर, २०१३ निश्चित की गई है। देश भर के स्कूलों-कालेजों के प्रधानाचार्यों को सूचित किया जाता है कि वे संस्थागत रूप से शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं को धार्मिक परीक्षा में बिठाने हेतु दाख़िला फार्म तथा नियमावली वेबसाईट **www.sgpc.net** से डाऊनलोड कर लें या कार्यालय, धार्मिक परीक्षा विभाग, धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर-१४३००६ से प्राप्त कर लें।

धार्मिक परीक्षा को चार दर्जों में विभाजित किया गया है। प्रथम दर्जे में कक्षा ६ से कक्षा ८ तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इसी प्रकार द्वितीय दर्जे में कक्षा ९ से इंटरमीडिएट (+२) तक, तृतीय दर्जे में स्नातक स्तर तक तथा चतुर्थ दर्जे में परास्नातक स्तर तक के विद्यार्थी दाख़िला ले सकते हैं। दर्जावार शुल्क क्रमशः ५, १०, १५ व २० रुपए प्रति विद्यार्थी है।

वजीफा-प्रणाली में संशोधन करते हुए वजीफा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की निर्धारित संख्या खत्म कर दी गई है। धर्म प्रचार कमेटी के नए निर्णय के अनुसार अब हर दर्जे में ६० प्रतिशत तथा इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को दर्जावार क्रमशः ११००, २१००, ३१००, ४१०० रुपए प्रति विद्यार्थी वार्षिक वजीफा दिया जाएगा। प्रत्येक दर्जे में से प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को वजीफे के अलावा क्रमशः ५१००, ४१००, ३१००, रुपए विशेष इनाम के रूप में भी दिए जाएंगे।

धार्मिक परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम वाली प्रथम दर्जे की पाठ्य पुस्तक 'गुरमति ज्ञान--भाग एक' तथा द्वितीय दर्जे की 'गुरमति ज्ञान--भाग दो' धार्मिक परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को आधी कीमत (३०/- रुपए मात्र) पर दी जाएगी। इसके लिए प्रधानाचार्य द्वारा लिखित पत्र होना चाहिए या विद्यार्थी द्वारा लिखित प्रार्थना-पत्र प्रधानाचार्य/धार्मिक अध्यापक द्वारा प्रमाणित होना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए ०१८३-२५५३९५६-५९, एक्सटेंशन-३०५ तथा ९७८१९-९३७८८, ९८५५२-०४३५२, ८४३७४-६२५५५ पर प्रातः ९:३० से सायं ४:३० बजे तक संपर्क किया जा सकता है।

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर।